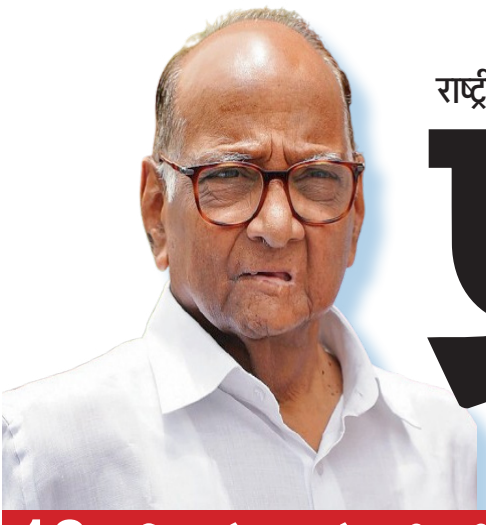

राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 परिवार के 32 वोट भी नहीं मिले, ईवीएम के खिलाफ आंदोलन की.....

टेस्ला, फाल्कन, हाइपरलूप, स्टारलिंक, न्यूरालिंक... 40 साल 10

वर्ष : 15 | अंक : 221 | नई दिल्ली, बुधवार, 27 नवंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

आतंकी संगठन को दिया जाएगा मुंहतोड़ जवाब : मोदी

पटना, एजेंसी

पटना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत की सुरक्षा को चुनौती देने वाले हर आतंकी संगठन को मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। प्रधानमंत्री मंगलवार को संविधान दिवस पर सुप्रीम कोर्ट में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि मैं देश का यह संकल्प दोहराता हूं उन्होंने कहा कि सभी को सांविधान दिवस की बधाई। भारत के संविधान का ये 75वां साल पूरे देश के लिए एक गौरव का विषय है। आज मुंबई में हुए आतंकी हमले की भी बरसी है। इस हमले जिनकी मृत्यु हुई उनको मैं श्रद्धांजलि देता हूं। पीएम मोदी ने कहा कि हमारा संविधान, हमारे वर्तमान और भविष्य का मार्गदर्शक है। बीते 75 वर्षों में देश के सामने जो भी चुनौतियां आई हैं। हमारे संविधान ने हर चुनौती का समाधान करने के लिए उचित मार्ग दिखाया है। संविधान ने आपातकाल का सामना किया। संविधान से मिली शक्ति की वजह से ही आज जम्मू-कश्मीर में भी बाबा साहब आंबेडकर का संविधान पूरी तरह लागू हुआ है। आज पहली बार वहां भी संविधान दिवस मनाया जा रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि संविधान सभा की बहस के दौरान बाबा साहब आंबेडकर ने कहा था कि संविधान केवल वकीलों का दस्तावेज नहीं है। इसकी भावना हमेशा युग

की भावना है। पीएम ने कहा कि आज यह आसान लगता है कि लोगों को नल से पानी मिल रहा है, लेकिन आजादी के 75 साल बाद भी सिर्फ तीन करोड़ घरों में ये सुविधा थी। संविधान की मूल प्रति में भगवान राम, माता सीता की तस्वीरें हैं। भारतीय संस्कृति के प्रतीक चित्र इसलिए हैं ताकि वो हमें मानवीय मूल्यों की याद दिलाते रहें। ये मानवीय मूल्य आज के भारत की नीतियों और निर्णयों का आधार हैं। पीएम मोदी ने कहा कि पिछले 10 साल में 53 करोड़ से ज्यादा भारतीयों के बैंक खाते खुले, जो बैंक के दरवाजे तक नहीं पहुंच पाए। पिछले 10 साल में 4 करोड़ से ज्यादा भारतीयों के घर पक्के हुए। उन्होंने कहा कि भारत के हर नागरिक का सपना विकसित भारत है। इसी ध्येय से हम काम कर रहे हैं। हमने दिव्यांगों को पहचान दिलाई है। हमने संविधान की भावना को सशक्त किया है। हमने त्वरित न्याय के लिए न्याय संहिता लागू की है। उन्होंने कहा कि एक समय था जब वरिष्ठ नागरिकों को बैंकों में जाकर यह साबित करना पड़ता था कि वे जीवित हैं। आज वरिष्ठ नागरिक डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र की सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। देश के 100 जिले विकास की गति में आगे बढ़ रहे हैं। लोगों की रोजमर्रा जिंदगी की परेशानी दूर करने का काम भी चल रहा है। कुछ साल पहले तक देश में ढाई करोड़ घर अंधेरे में डूब जाते थे। देश में सबको बिजली कनेक्शन देकर हमने घरों को रोशन किया। सुदूर इलाकों में हजारों मोबाइल टावर लगाए गए। ताकि लोगों को 4 जी और 5 जी कनेक्शन की सुविधा मिले। पीएम मोदी ने कहा कि डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने संविधान सभा में अपने भाषण में कहा था कि भारत को ईमानदार लोगों के समूह की जरूरत है जो देश के हित को अपने से ऊपर रखते हैं। राष्ट्र प्रथम की यह भावना आने वाले कई वर्षों तक भारतीय संविधान को जीवंत रखेगी। मैंने उस मयार्दा का पालन करने की कोशिश की जो संविधान ने मुझसे मांगी थी, मैंने उसका अतिक्रमण करने की कोशिश नहीं की। आपको दवाई और बीमारी के इलाज में भारी रकम खर्च करनी पड़ती है तो सवाल है कि क्या यह पैसा किसी पिछड़ों, दलितों, आदिवासियों की जेब में जाता है, नहीं, यह पैसा सिर्फ 25 उद्योगपतियों के पास जाएगा। उन्होंने कहा कि वह जातीय जनगणना को लोकसभा में पारित करके दिखाएंगे और आरक्षण के लिए 50 प्रतिशत की सीमा को खत्म करेंगे। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कहा कि कांग्रेस नेतृत्व जाति जनगणना को लेकर पूरे देश में अलख जगाए हुए है और यह काम आवश्यक है क्योंकि जिसकी जितनी संख्या उसकी उतनी हिस्सेदारी। अगले साल जो जनगणना की बात की जानी है, उसमें जाति जनगणना कराने के लिए कांग्रेस संघर्ष करेगी और यह काम होकर रहेगा। कांग्रेस ने पूरे देश में लगभग 3.50 लाख संविधान रक्षक बनाए हैं और आने वाले दिनों में कई अधिक रक्षक बनाए जाएंगे।

मौसम

अधिकतम तापमान 32.0°C
न्यूनतम तापमान 23.0°C

बाजार

सोना 80,405
चांदी 1,000
सेंसेक्स 80,220
निफ्टी 24,472

संक्षिप्त खबरें

मुर्मु और मोदी ने देशवासियों को संविधान दिवस की शुभकामनाएं दी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों को संविधान दिवस और और संविधान की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर शुभकामनाएं दी हैं। राष्ट्रपति ने देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा, हमारा संविधान एक जीवंत और प्रगतिशील दस्तावेज है। देश के दूरदर्शी संविधान निमार्ताओं ने बदलते समय की आवश्यकताओं के अनुरूप नये विचारों को अपनाने की व्यवस्था प्रदान की थी। देश ने संविधान के माध्यम से सामाजिक न्याय और समावेशी विकास से संबंधित कई महत्वाकांक्षी लक्ष्य हासिल किए हैं।श्री मोदी ने अपने संदेश में कहा, सभी देशवासियों को भारतीय संविधान की 75वीं वर्षगांठ के पावन अवसर पर संविधान दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

संवैधानिक आदर्शों को अपनाकर विकसित भारत बनाने में योगदान दें देशवासी : मुर्मु

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने देशवासियों से संवैधानिक आदर्शों को आचरण में लाने तथा मौलिक कर्तव्यों का पालन करने की अपील करते हुए वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने का राष्ट्रीय लक्ष्य हासिल करने को कहा है। श्रीमती मुर्मु ने सांविधान को अंगीकार किये जाने के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर मंगलवार को यहां संविधान सदन के केन्द्रीय कक्ष में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कहा, 75 वर्ष पहले, आज ही के दिन, संविधान सदन के इसी सेंट्रल हॉल में, संविधान सभा ने एक नए स्वतंत्र देश के लिए संविधान बनाने का बड़ा काम पूरा किया था। उस दिन, संविधान सभा के माध्यम से, हम, भारत के लोगों ने, इस संविधान को अपनाया, अधिनियमित किया और खुद को समर्पित किया। हमारा संविधान हमारे लोकतांत्रिक गणराज्य की मजबूत आधारशिला है। हमारा संविधान हमारी सामूहिक और व्यक्तिगत गरिमा सुनिश्चित करता है। राष्ट्रपति ने कहा कि हमारा संविधान एक जीवंत और प्रगतिशील दस्तावेज है। देश के दूरदर्शी संविधान निमार्ताओं ने बदलते समय की आवश्यकताओं के अनुरूप नये विचारों को अपनाने की व्यवस्था प्रदान की थी। देश ने संविधान के माध्यम से सामाजिक न्याय और

समावेशी विकास से संबंधित कई महत्वाकांक्षी लक्ष्य हासिल किए हैं। उन्होंने कहा कि एक नए दृष्टिकोण के साथ, भारत विदेशी राष्ट्रों के समुदाय में एक नई पहचान अर्जित कर रहा है। संविधान निमार्ताओं ने भारत को अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का निर्देश दिया था और आज भारत एक अग्रणी अर्थव्यवस्था होने के साथ-साथ विश्व-बंधु की भूमिका भी बखूबी निभा रहा है। श्रीमती मुर्मु ने कहा कि लगभग तीन-चौथाई सदी की संवैधानिक यात्रा में, देश संविधान निमार्ताओं की अपेक्षा के अनुसार क्षमताओं को दिखाने और परंपराओं को विकसित करने में उल्लेखनीय हद तक सफल हुआ है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमने जो सबक सीखा है, उसे अगली पीढ़ियों तक पहुंचाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि 2015 से हर साल ह्यसंविधान दिवसह्न मनाने से युवाओं के बीच संविधान के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद मिली है। उन्होंने सभी साथी नागरिकों से संवैधानिक आदर्शों को अपने आचरण में अपनाने का आग्रह करते हुए मौलिक कर्तव्यों का पालन करने और वर्ष 2047 तक ह्यविकसित भारतह्न के निर्माण के राष्ट्रीय लक्ष्य के प्रति समर्पण के साथ आगे बढने को कहा। राष्ट्रपति ने कहा कि आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर सभी देशवासियों ने ह्यआजादी का अमृत महोत्सवह्न मनाया। अगले वर्ष 26 जनवरी को देश गणतंत्र की 75वीं वर्षगांठ मनायेगा। उन्होंने कहा कि इस तरह के समारोह हमें अब तक की यात्रा की समीक्षा करने और आगे की यात्रा के लिए बेहतर योजना बनाने का अवसर प्रदान करते हैं। ऐसे समारोह हमारी एकता को मजबूत करते हैं और दिखाते हैं कि राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के अपने प्रयासों में हम सभी एक साथ हैं। श्रीमती मुर्मु ने कहा कि एक मायने में, भारत का संविधान कुछ महान विचारकों के लगभग तीन वर्षों के विचार-विमर्श का परिणाम था। लेकिन, सही मायने में यह लंबे स्वतंत्रता संग्राम का परिणाम था। उस अतुलनीय राष्ट्रीय आंदोलन के आदर्शों को संविधान में प्रतिष्ठापित किया गया। उन्होंने कहा कि संविधान की प्रस्तावना में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों को संक्षेप में शामिल किया गया है। ये आदर्श युगों-युगों से भारत को परिभाषित करते आए हैं। उन्होंने कहा कि संविधान की प्रस्तावना में रेखांकित आदर्श एक-दूसरे के पूरक हैं। साथ मिलकर, वे एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जिसमें प्रत्येक नागरिक को फलने-फूलने, समाज में योगदान करने और साथी नागरिकों की मदद करने का अवसर मिलता है। राष्ट्रपति ने कहा कि संवैधानिक आदर्शों को कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के साथ-साथ सभी नागरिकों की सक्रिय भागीदारी से ताकत मिलती है। उन्होंने कहा कि संविधान में प्रत्येक नागरिक के मौलिक कर्तव्यों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। भारत की एकता और अखंडता की रक्षा करना, समाज में सद्भाव को बढ़ावा देना, महिलाओं की गरिमा सुनिश्चित करना, पर्यावरण की रक्षा करना, वैज्ञानिक सोच विकसित करना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और राष्ट्र को उपलब्धियों के उच्च स्तर पर ले जाना नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों में शामिल है। श्रीमती मुर्मु ने कहा कि संविधान की भावना के अनुरूप कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका की जिम्मेदारी है कि वे आम लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए मिलकर काम करें। उन्होंने कहा कि लोगों की आकांक्षाओं को संसद द्वारा अधिनियमित कई कानूनों में अभिव्यक्ति मिली है। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान सरकार ने समाज के सभी वर्गों, विशेषकर कमजोर वर्गों के विकास के लिए कई कदम उठाए हैं। ऐसे फैसलों से लोगों का जीवन बेहतर हुआ है और उन्हें विकास के नये अवसर मिल रहे हैं। उन्होंने इस बात पर खुशी जतायी कि उच्च न्यायालय के प्रयासों से देश की न्यायपालिका हमारी न्यायिक प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास कर रही है। इस अवसर पर उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला , संसदीय कार्य मंत्री किरेण रिजिजू, राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, केन्द्रीय मंत्री, सांसद और विदेशी राजनयिक भी मौजूद थे।

केन्द्र ने राज्यों में आपदा न्यूनीकरण परियोजनाओं के लिए 1115 करोड़ रुपये की राशि मंजूर की

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार ने विभिन्न राज्यों के लिए आपदा न्यूनीकरण और क्षमता निर्माण परियोजनाओं के लिए 1115.67 करोड़ रुपये की राशि मंजूर की है। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति की बैठक में इस राशि को मंजूरी दी गयी। गृह मंत्रालय ने मंगलवार को यहां बताया कि वित्त मंत्री, कृषि मंत्री और नीति आयोग के उपाध्यक्ष की सदस्यता वाली समिति ने राष्ट्रीय आपदा शमन निधि से 15 राज्यों में भूस्खलन के जोखिम को कम करने के प्रस्ताव के वित्त पोषण और राष्ट्रीय आपदा मोचन निधि के फंडिंग विंडो से तैयारी और क्षमता निर्माण के तहत सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में सिविल डिफेंस वॉलंटियर्स के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के प्रस्ताव पर विचार किया। उच्चस्तरीय समिति ने 15 राज्यों अरुणाचल प्रदेश, असम, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा, उत्तराखंड, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में 1000 करोड़ रुपये की कुल लागत से राष्ट्रीय भूस्खलन जोखिम न्यूनीकरण परियोजना को मंजूरी दी है। समिति ने उत्तराखंड के लिए 139 करोड़ रुपये, हिमाचल प्रदेश के लिए 139 करोड़ रुपये, पूर्वोत्तर के 8 राज्यों के लिए 378 करोड़ रुपये, महाराष्ट्र के लिए 100 करोड़ रुपये, कर्नाटक के लिए 72 करोड़ रुपये, केरल के लिए 72 करोड़ रुपए, तमिलनाडु के लिए 50 करोड़ और पश्चिम बंगाल के लिए 50 करोड़ रुपए को मंजूरी दी। उच्चस्तरीय समिति ने सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में सिविल डिफेंस के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के लिए 115.67 करोड़ रुपये की कुल लागत वाली एक अन्य परियोजना को भी मंजूरी दी है। इससे पहले, समिति ने राष्ट्रीय आपदा शमन निधि से सात शहरों में 3075.65 करोड़ रुपये की कुल लागत वाली शहरी बाढ़ जोखिम न्यूनीकरण परियोजनाओं और 4 राज्यों में 150 करोड़ रुपये की मंजूरी दी थी। गृह मंत्रालय ने देश में आपदाओं का प्रभावी प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए कई पहल की हैं। भारत में आपदा जोखिम न्यूनीकरण प्रणाली को मजबूत करके आपदाओं के दौरान जान-माल को होने वाले किसी भी बड़े नुकसान को रोकने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। इस वर्ष राज्यों को 21,476 करोड़ रुपये से अधिक की राशि पहले ही जारी की जा चुकी है। इसमें राज्य आपदा मोचन निधि से 26 राज्यों को 14,878.40 करोड़ रुपये, राष्ट्रीय आपदा मोचन निधि से 15 राज्यों को 4,637.66 करोड़ रुपये, राज्य आपदा शमन निधि से 11 राज्यों को 1,385.45 करोड़ रुपये और राष्ट्रीय आपदा शमन निधि से 6 राज्यों को 574.93 करोड़ रुपये शामिल हैं।

दिल्ली में प्रदूषण से राहत नहीं, एक्यूआई 400 पार

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली और उसके आस-पास के इलाकों में प्रदूषण से लोगों को दूर-दूर तक राहत मिलती नजर नहीं आ रही है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के ताजे आंकड़ों के अनुसार, मंगलवार सुबह 7:15 बजे तक दिल्ली का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 395 तक पहुंच गया। दिल्ली के विभिन्न इलाकों में प्रदूषण के स्तर में वृद्धि देखने को मिल रही है। कई ऐसे इलाके हैं, जहां का एक्यूआई 400 से 500 के बीच बना हुआ है, जो बेहद चिंताजनक है। इनमें अलीपुर (415), आनंद विहार (436), अशोक विहार (419), डॉ करणी सिंह शूटिंग रेंज (403), जहांगीरपुरी (421), मेजर ध्यानचंद स्टेडियम (412), मंदिर मार्ग (409), मुंडका (440), नरेला (413), नेहरू नगर (419), पंजाबी बाग (412), शादीपुर (422), रोहिणी (432), सोनिया विहार (424), विवेक विहार (430) और वजीरपुर (422) शामिल हैं। इन इलाकों में रहने वाले लोगों को सांस लेने में परेशानी और आंखों में जलन हो रही है। इसके अलावा, राजधानी दिल्ली के कई इलाकों में एक्यूआई 300 से 400 के बीच दर्ज किया गया। इनमें आया नगर (369), बुराड़ी क्रॉसिंग (390), चांदनी चौक (358), मथुरा रोड (360), डीटीयू (383), द्वारका सेक्टर 8 (397), एयरपोर्ट (368), दिलशाद गार्डन (357), आईटीओ (382), जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम (382), लोधी रोड (309), नजफगढ़ (385), नॉर्थ कैंपस डीयू (385), एनएसआईटी द्वारका (326), ओखला फेस-2 (392), पूसा (372), आर के पुरम (398), सिरी फोर्ट (394) और श्री अरविंदो मार्ग (388) शामिल हैं। बता दें कि दिल्ली में हर साल नवंबर-दिसंबर के आसपास प्रदूषण की स्थिति और गंभीर हो जाती है। प्रदूषण के बढ़ते स्तर को देखते हुए सोमवार से दिल्ली में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रैप) के चौथे चरण (ग्रैप-4) को लागू कर दिया गया है। ग्रैप-4 लागू किए जाने के बाद वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए सरकार द्वारा कई कड़े प्रतिबंध लगाए गए हैं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू समेत तमाम नेताओं ने 26/11 के शहीदों को दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली/ एजेंसी। 26/11 मुंबई आतंकवादी हमलों की 16वीं बरसी पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह समेत तमाम नेताओं ने शहीदों को श्रद्धांजलि दी है। जम्मू कश्मीर के उप राज्यपाल मनोज सिन्हा ने भी उन्हें याद करते हुए कहा- मैं उनकी वीरता को सलाम करता हूं। राष्ट्रपति मुर्मू ने एक्स पोस्ट में कहा, 26 नवंबर 2008 को मुंबई में हुए कायरतापूर्ण आतंकवादी हमलों की वर्षगांठ पर मैं पूरे देश के साथ उन बहादुरों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने अपनी जान गंवाई। एक कृतज्ञ राष्ट्र अपने उन बहादुर सुरक्षाकर्मियों को सलाम करता है, जिन्होंने हमारे लोगों की रक्षा करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। यह इस बात को दोहराने का भी दिन है कि भारत सभी प्रकार के आतंकवाद को हराने के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एक्स पोस्ट पर लिखा साल 2008 में आज ही के दिन मुंबई में कायर आतंकवादियों ने निर्दोष लोगों की हत्या कर मानवता को शर्मसार किया था। 26/11 के मुंबई हमलों में आतंकियों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त होने वाले जवानों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और अपना जीवन गंवाने वाले लोगों को नमन करता हूं।

मल्लिकार्जुन खड़गे ने ईवीएम पर सवाल उठाते हुए बैलेट पेपर से चुनाव की मांग की

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने मंगलवार को एक कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते हुए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) पर सवाल उठाते हुए बैलेट पेपर से चुनाव की मांग की है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि मैं जो कहना चाह रहा हूं उसे हमारे विपक्ष के नेता राहुल गांधी भी मानते हैं। जितनी भी शक्ति लगाकर एससी-एसटी, ओबीसी, गरीब तबके के लोग, छोटे समुदाय के लोग जो अपना वोट दे रहे हैं वो वोट फिजूल जा रहा है। हमको ईवीएम नहीं चाहिए। बैलेट पेपर से वोटिंग होनी चाहिए। उनको वो मशीनें अपने घर में रख लेने दो या पीएम मोदी के घर में रहने दो या अमित शाह के घर में रहने दो। अहमदाबाद में बहुत सारे गोदाम बने हैं, वहां ले जाकर रख लेने दो। हम को बैलेट पेपर पर करो। भाजपा पर तंज कसते हुए उन्होंने कहा कि उस वक्त आपको मालूम होगा तुम्हारी हालत क्या है? कहां खड़े हो, उस वक्त आपको मालूम होगा? उन्होंने आगे कहा कि हमें अपनी पार्टी के तरफ से एक मुहिम शुरू करनी चाहिए। सभी लोगों को कहना चाहिए, सभी पार्टियों से हम कहेंगे और राहुल गांधी के नेतृत्व में जैसे भारत जोड़ो यात्रा निकली थी, वैसे ही बैलेट पेपर से चुनाव के लिए एक देशव्यापी अभियान चलाएंगे। बता दें कि इससे पहले मध्य प्रदेश के पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने ईवीएम पर सवाल खड़ा किया था। उन्होंने कहा था कि महाराष्ट्र के चुनावी परिणाम देखकर यही अंदाजा लगाया जा सकता है कि भाजपा जो चाहती थी, वही हुआ है। दिग्विजय सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा, ह्यभाजपा जो चाहती थी, महाराष्ट्र में वही चुनावी परिणाम सामने आए हैं। भाजपा ने महाराष्ट्र में 148 उम्मीदवारों को मैदान में उतारा था, इनमें से 132 उम्मीदवार चुनाव जीत गए हैं। ऐसे में अजित पवार और शिवसेना (शिंदे) के बिना ही सरकार बन सकती है। उन्होंने ईवीएम को लेकर भी सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि ईवीएम को मैनिपुलेट करते हुए यह चुनाव जीता गया है।

संविधान 75 वर्ष पहले आज ही के दिन इस पवित्र स्थान पर हमारे संविधान को अंगीकृत किया गया था.....

पूरी गरिमा, मयार्दा से सहमति या असहमति जतायें सांसद : बिरला

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भारतीय संविधान के 75 वर्ष पूरे होने के मौके पर सभी निर्वाचित जन प्रतिनिधियों को आज नसीहत दी कि जिस प्रकार से संविधान सभा में अलग अलग विचार धारा वाले विद्वानों ने एक एक अनुच्छेद पर विचार मंथन करके पूरी गरिमा एवं मयार्दा से सहमति या असहमति व्यक्त की, हमें भी उसी उत्कृष्ट परंपरा को सादनों में अपनाना चाहिए। श्री बिरला ने संविधान सदन के केन्द्रीय कक्ष में आयोजित ऐतिहासिक संविधान दिवस कार्यक्रम में अपने स्वागत उद्बोधन में यह बात कही। उन्होंने अपने संबोधन में संविधान दिवस के मौके पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उप-राष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा विभिन्न राजनीतिक दलों के नेतागण और सांसदों का अभिनंदन करते हुए कहा, आज संविधान दिवस का उत्सव मना रहे करोड़ों भारतीयों का मैं हार्दिक अभिनंदन और स्वागत करता हूँ। 75 वर्ष पहले आज ही के दिन इस पवित्र स्थान पर हमारे संविधान को अंगीकृत किया गया था। राष्ट्रपति महोदया के नेतृत्व में सम्पूर्ण देश एक साथ मिलकर आज संविधान के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहा है। आज करोड़ों देशवासी संविधान की प्रस्तावना का पाठ करके देश को आगे बढ़ाने का संकल्प लेंगे। लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी की प्रेरणा से वर्ष 2015 में हमने हर वर्ष 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया था। हमारा संविधान

हमारे मनीषियों के वर्षों के तप, त्याग, विद्वता, सामर्थ्य और क्षमता का परिणाम है। इसी केन्द्रीय कक्ष में लगभग 3 वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद उन्होंने देश की भौगोलिक और सामाजिक विविधताओं को एक सूत्र में बांधने वाला संविधान बनाया। उन्होंने कहा, संविधान सभा में अलग अलग विचारधारा वाले सदस्य थे। इसके बावजूद उन्होंने एक-एक अनुच्छेद पर विचार मंथन किया, पूरी गरिमा और मयार्दा से अपनी सहमति असहमति व्यक्त करते हुए हमारे संविधान की रचना की। सार्थक एवं गरिमापूर्ण संवाद की इसी उत्कृष्ट परंपरा को हमें अपने सदनों में अपनाना चाहिए। श्री बिरला ने कहा कि हमारा संविधान देश में सामाजिक-आर्थिक बदलावों का सूत्रधार रहा है। कर्तव्यकाल में हम सामूहिक प्रयासों से विकसित भारत की ओर मजबूती से आगे बढ़ रहे हैं। इन 75 वर्षों में हमारी संसद के माध्यम से आम जनता के जीवन में सामाजिक आर्थिक परिवर्तन लाए गए हैं जिससे लोकतंत्र में जनता की आस्था मजबूत हुई है। संविधान ने हमारे लोकतंत्र के तीनों स्तंभों, ह्वविधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिकाह्न को आपसी समन्वय के साथ सुचारु रूप से कार्य करने की व्यवस्था दी है। इन 75 वर्षों में इन तीनों अंगों ने श्रेष्ठता से कार्य करते हुए देश के समग्र विकास में अपनी भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर ने कहा था-हमारा संविधान एक ऐसा दस्तावेज होना चाहिए जो न केवल हमारे देश की स्वतंत्रता और समानता की रक्षा करे, बल्कि हमारे देश के लोगों को एक साथ लाने में भी मदद करे। हमें बाबा साहब के इन शब्दों से हमारे महान संविधान निमार्ताओं के भारतीय समाज के प्रति दृष्टिकोण को समझना चाहिए। श्री बिरला ने कहा कि हमारा संविधान हमें वसुधैव कुटुम्बकम यानि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है, के सिद्धांत का अनुसरण करने की प्रेरणा देता है। संवैधानिक मूल्यों के प्रति हमारी गहरी प्रतिबद्धता से विश्व पटल पर भारत की छवि को मजबूत हुई है। उन्होंने कहा, मैं सभी माननीय सांसदों से अनुरोध करूँगा कि वे अपने क्षेत्रों में संविधान के अंगीकार होने के 75 वर्ष को जनता की सहभागिता से एक उत्सव के रूप में मनाएं, जिससे राष्ट्र प्रथम की भावना और अधिक सुदृढ़ हो।

संक्षिप्त समाचार

युवक की हत्या करने के बाद शव को नदी किनारे फेंका

हरिद्वार, एजेंसी। श्यामपुर थाना क्षेत्र के नल्होवाला के पास नदी किनारे एक युवक का शव मिलने से सनसनी फैल गई। युवक के चेहरे पर चोटें के निशान मिले हैं। गले पर एम लिखा हुआ है। पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया कि युवक की हत्या करने के बाद शव को नदी किनारे घसीटकर फेंका गया है। फिलहाल शिनाख्त नहीं हो पाई है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल की मोर्चरी में भिजवा दिया है। पुलिस के अनुसार, रविवार सुबह करीब 10 बजे पुलिस को सूचना मिली कि रवासन नदी के किनारे नल्होवाला की तरफ जाने वाले रास्ते के पास एक युवक का शव पड़ा हुआ है। सूचना मिलते ही थानाध्यक्ष नितेश शर्मा टीम के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शव को कब्जे में लिया। मृतक का चेहरा क्षत-विक्षत अवस्था में था। जांच में सामने आया कि करीब 30-35 मीटर दूर से घसीटकर नदी किनारे फेंका गया है। थानाध्यक्ष नितेश शर्मा ने बताया कि मृतक के गले में जैकेट की डोरी बंधी हुई थी। गले पर एम लिखा हुआ है। प्रथम दृष्टया गला घोंटकर हत्या की गई है। चेहरे पर किसी चीज से वार किए गए हैं। मृतक की उम्र करीब 28-30 वर्ष है। अभी शिनाख्त नहीं हो पाई है। पहचान कराने के प्रयास किए जा रहे हैं। जांच शुरू कर दी गई है।

बाइक सवार दोनों युवकों को पकड़कर पुलिस को सौंपा

रूड़की, एजेंसी। दादी और पोती को तेज रफ्तार से जा रही एक बाइक ने टक्कर मार दी। जिससे चार वर्षीय बच्ची की मौत हो गई। जबकि उसकी दादी गंभीर रूप से घायल हो गई है। दुर्घटना के बाद लोगों ने बाइक सवार दोनों युवकों को पकड़कर पुलिस को सौंप दिया। लक्सर कोतवाली क्षेत्र के केशव नगर निवासी शांति देवी पत्नी हरिओम शर्मा रविवार शाम को अपनी चार वर्षीय पोती उर्वशी उर्फ सृष्टि के साथ पैदल ही सामान लेने जा रहे थे। जैसे ही वह सोसायटी मार्ग स्थित एक डेयरी के सामने पहुंचे तो वहां से तेज रफ्तार में गुजर रहे एक बाइक सवार युवकों ने दोनों को टक्कर मार दी। हादसे में शांति देवी और उर्वशी गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों को पहले स्थानीय अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी गंभीर हालत को देखते हुए हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। जिस पर उन्हें हरिद्वार के भूमानंद अस्पताल ले जाया गया। जहां चिकित्सकों ने उर्वशी को मृत घोषित कर दिया, जबकि शांति देवी की हालत गंभीर बनी हुई है। इधर हादसे के बाद बाइक सवार युवकों ने मौके से भागने का प्रयास किया, लेकिन लोगों ने उन्हें पकड़ लिया। बताया जा रहा है कि दोनों युवक नशे में धुत थे। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची व युवकों को हिरासत में ले लिया।

कांग्रेस ने फूंका केंद्र सरकार का पुतला

ऋषिकेश, एजेंसी। महानगर कांग्रेस कमेटी ने उद्योगपति गौतम अदाणी प्रकरण में प्रदर्शन कर केंद्र की भाजपा सरकार का पुतला दहन किया। कार्यकर्ताओं ने गौतम अदाणी की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग की है। रविवार को रेलवे रोड स्थित कांग्रेस भवन के बाहर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया। कांग्रेस महानगर अध्यक्ष राकेश सिंह व जयेंद्र रमोला ने कहा कि गौतम अदाणी पर अमेरिकी निवेशकों के साथ अरबों रुपये की धोखाधड़ी करने का आरोप लगा है। अमेरिकी न्याय विभाग की ग्रैंड ज्यूरी ने अदाणी के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। कहा कि अमेरिका में अदाणी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जा रही है। लेकिन भारत की मोदी सरकार की ओर से अदाणी के खिलाफ न तो कोई जांच और न ही कोई कार्रवाई की जा रही है। वरिष्ठ कांग्रेसी मदन मोहन शर्मा व दीप शर्मा ने कहा कि सरकार गंभीर आरोपों की जांच क्यों नहीं हो रही है। अदाणी को गिरफ्तार क्यों नहीं किया जा रहा है।

अजगर को पकड़कर जंगल में छोड़ा

ऋषिकेश, एजेंसी। सूर्यधार-सनगांव मार्ग पर एक रिजॉर्ट के पास से करीब दस फीट लंबे एक अजगर को पकड़कर जंगल में छोड़ा गया। अजगर पिछले दो दिनों से इस मार्ग पर घूम रहा था। ग्रामीण पुनीत रावत ने बताया कि सूर्यधार-सनगांव मार्ग पर पिछले दो दिनों से अजगर घूम रहा था। रविवार के दिन भी अजगर मार्ग पर आ गया। जिससे लोग भयभीत हो गए। वन विभाग की टीम के सहयोग से अजगर को जंगल में छोड़ा गया। इस मौके पर विकास घिल्डियाल, अमित अंथवाल, अतुल पुंडीर, नीलू आदि मौजूद रहे।

हिमालयी राज्यों की हवा भी लगातार होती जा रही जहरीली

दिल्ली के प्रदूषण से पहाड़ की हवाओं में तेजी से बढ़ा पीएम 2.5

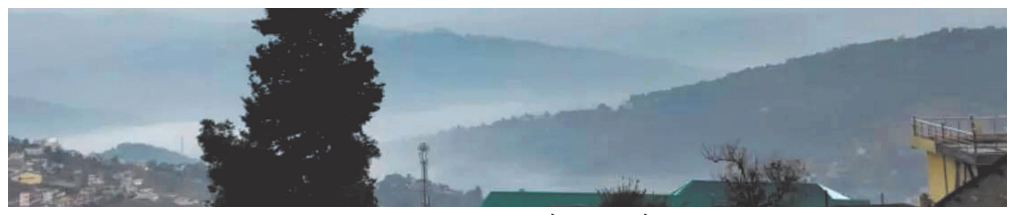

अल्मोड़ा, एजेंसी। दिल्ली में जहरीली होती हवा का असर अब हिमालयी राज्यों में भी दिखाई देने लगा है। यहां ही हवाओं में भी पार्टिकुलेट मैटर में खतरनाक वृद्धि देखी गई है। जिससे एयर क्वालिटी इंडेक्स भी सुरक्षित सीमा से कहीं अधिक हो गया है। विज्ञानी हिमालयी क्षेत्र में लगातार बढ़ते प्रदूषण के स्तर को जैव विविधता के लिए खतरनाक मान रहे हैं।

हिमालयी राज्यों उत्तराखंड, हिमांचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर आदि क्षेत्रों को पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित माना जाता था। स्वच्छ आबोहवा के लिए लोग यहां पहुँचते थे। लेकिन इंडो-गंगा के मैदानों से पहुंच रहा प्रदूषण हिमालय के वायुमंडल को लगातार प्रभावित कर रहा है।

जीबी पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान, कोसी कटारमल के वायु गुणवत्ता निगरानी में पार्टिकुलेट मैटर (पीएम) के स्तर में खतरनाक वृद्धि दर्ज की गई है। पीएम का स्तर अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर के पहले सप्ताह तक 22 प्रतिशत तक बढ़ा। और अगले सप्ताह में इसमें सात प्रतिशत की और वृद्धि हुई। पीएम10 का स्तर, जो आमतौर पर सुरक्षित सीमा के भीतर रहता है। अक्टूबर के अंत से नवंबर की शुरुआत में लगभग दोगुना वृद्धि (96 प्रतिशत) हो गया। हालांकि, दूसरे सप्ताह में इसमें 21 प्रतिशत की कमी आई। एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) लगभग 110 है। जो सुरक्षित सीमा से कहीं अधिक है।

विज्ञानियों का मानना है कि आमतौर पर, इंडो-गंगा के मैदानों से हिमालय की ओर बढ़ने वाले प्रदूषक पहाड़ों में पहुंचकर कम हो जाते हैं। लेकिन इस बार की स्थिति असाधारण है। स्थिर मौसम और प्रदूषकों के लंबी दूरी तक पहुंचने से हिमालय के वायुमंडल की गुणवत्ता बुरी तरह प्रभावित हुई है। यह संकट फसल अवशेष जलाने के मौसम के साथ मेल खाता है। हालांकि नासा के उपग्रह डेटा के अनुसार, पिछले वर्षों की तुलना में इस साल सक्रिय आग की घटनाओं में 70-80 प्रतिशत की कमी आई है। विशेषज्ञ मानते हैं कि सेकेंडरी एरोसोल निर्माण और औद्योगिक व वाहनों से होने वाले उत्सर्जन ने स्थिति को और बिगाड़ा है।

एक्यूआई (एयर क्वालिटी इंडेक्स) के मुताबिक, 0 से 50 तक का स्तर हवा को ÷अच्छा÷ और सुरक्षित मानता है। वहीं, 51-100 का स्तर ÷सामान्य÷ है, जो कुछ लोगों के लिए हल्की परेशानी पैदा कर सकता है। 101-200 के बीच का स्तर ÷मध्यम प्रदूषित÷ माना जाता है, जो खासतौर पर अस्थमा और सांस की दिक्कत वाले लोगों के लिए नुकसानदेह हो सकता है। 201-300 का स्तर ÷खराब÷ होता है, जो सेहत को सीधे प्रभावित करता है। 301-400 के बीच की हवा ÷बहुत खराब÷ और 401-500 का स्तर ÷गंभीर÷ है, जहां फेफड़ों और दिल की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

व्यापारियों को बेवजह किया परेशान तो होगा आंदोलन

हरिद्वार, एजेंसी। राष्ट्रीय व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष संजीव चौधरी के नेतृत्व में हरिद्वार व कोटद्वार के व्यापारियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने समस्याओं को लेकर राज्य कर विभाग के संयुक्त आयुक्त संजीव सोलंकी से भेंट की। उन्हें समस्याओं का हल करने के लिए ज्ञापन दिया। प्रदेश अध्यक्ष ने संयुक्त आयुक्त को बताया कि कोटद्वार के कुछ व्यापारियों को विभाग किसी एक भ्रष्ट व्यक्ति के कहने पर बार-बार जांच के नाम पर परेशान कर रहा है। हालांकि, व्यापारी हर जांच के लिए तैयार हैं, पर बिना किसी वजह के व्यापारियों का उत्पीड़न राष्ट्रीय व्यापार मंडल बर्दाश्त नहीं करेगा। कहा कि जल्दी ही एक सभा कोटद्वार में की जाएगी।

कोटद्वार के व्यापारी नेता विनोद शर्मा व व्यापारी नेता सुबोध गर्ग ने कहा कि व्यापारी हमेशा सरकार के साथ रहता है। दोनों एक दूसरे से मिलकर ही प्रदेश के विकास की रीढ़ बनते हैं। व्यापारियों का उत्पीड़न किया गया तो राष्ट्रीय व्यापार मंडल आंदोलन का रास्ता अपनाएगा।

सीआईएसएफ में बनेगी महिलाओं की दो महिला बटालियन

रूड़की, एजेंसी। सीआईएसएफ में भी अब महिलाओं की दो बटालियन बनेंगी। सीआईएसएफ में जवान बनकर महिलाए देश की सेवा कर सकेंगे। सीआईएसएफ मुख्यालय ने नई बटालियन के लिए शीघ्र भर्ती प्रशिक्षण और मुख्यालय के स्थान के चयन के लिए तैयारियां शुरू कर दी हैं। केंद्र सरकार के गृह मंत्रालय की ओर से महिलाओं को सशक्त बनाने और राष्ट्रीय सुरक्षा में उनकी भूमिका बढ़ाने के उद्देश्य से एक ऐतिहासिक निर्णय में सीआईएसएफ की पहली महिला बटालियन की स्थापना को मंजूरी दे दी है। सीआईएसएफ उन महिलाओं के लिए एक पसंदीदा विकल्प रहा है, जो वर्तमान में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल में राष्ट्र की सेवा करना चाहती हैं। सीआईएसएफ में महिला कर्मियों की संख्या 7त्न से अधिक है। महिला बटालियन के गठन से देश भर की महत्वाकांक्षी युवा महिलाओं को सीआईएसएफ में शामिल होने और राष्ट्र की सेवा करने के लिए और प्रोत्साहन मिलेगा।

एयरपोर्ट पर राहत और बचाव कार्यों की तैयारियों को परखा

देहरादून, एजेंसी। देहरादून एयरपोर्ट पर एयरपोर्ट फायर विभाग, सिटी फायर विभाग, सीआईएसएफ, एसडीआरएफ, एयर लाइंस और संबंधित विभागों ने मॉक ड्रिल किया। जिसमें विमान में आग लगने के दौरान राहत और बचाव कार्यों की तैयारियों को परखा गया।

एयरपोर्ट निदेशक प्रभाकर मिश्रा ने ड्रिल के दौरान सुरक्षा कर्मियों, अधिकारियों की क्षमता को परखकर जरूरी निर्देश दिए। मॉक ड्रिल के दौरान विमान में आग की सूचना पर दमकल वाहन और सुरक्षाकर्मी घटनास्थल पर दौड़े। पूरी तरह कंप्यूटरीकृत तीन दमकल वाहनों ने धधकती आगे को पल भर में बुझा दिया। इस दौरान विमान में यात्रियों के फंसने की स्थिति में ऑटोमेटिक कटर और दूसरे उपकरणों की मदद से फायर क्रू ने आग के बीच मोटी धातु को काटकर दिखाया।

एयरपोर्ट फायर विभाग के वरिष्ठ अधीक्षक रविंद्र गुप्ता ने कहा कि एयरपोर्ट के पास दस-दस हजार लीटर पानी की क्षमता के दो रोजन बार वाहन और छह हजार लीटर पानी की क्षमता का एक दमकल वाहन है। दस हजार लीटर क्षमता वाले वाहन में 1300 लीटर फोम और छह हजार लीटर क्षमता वाले वाहन में 800 लीटर फोम होता है। जो पानी के साथ मिलकर पलभर में विमानों की आग को शांत कर देता है। रोजन बार वाहन का वाटर थ्रो 90 मीटर तक है। जो एक मिनट में पांच हजार लीटर पानी फेंक देता है। इस दौरान डीजीएम नितिन कादियान, सेफ्टी मैनेजर रविकांत, एसएम एटीसी प्रवीण कुमार आदि मौजूद रहे।

मल्ला महल में सेनानियों के नाम लिखे शिलापट लगाने की मांग

अल्मोड़ा, एजेंसी। उत्तराखंड स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं उत्तराधिकारी संगठन का शिष्टमंडल तीन सूत्री मांगों को लेकर डीएम से मिला। उन्होंने कहा कि नगर निगम की तर्ज पर मल्ला महल में भी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के नाम पर गैलरी बनाई जाए। साथ ही उनके नाम लिखे शिलापट लगाया जाए ताकि भावी पीढ़ी उनके बारे में जान सके। कहा कि जुलाई के अंतिम सप्ताह में मुख्य सचिव से संगठन के प्रांतीय पदाधिकारियों की वार्ता हुई थी। उन्होंने सभी जिलाअधिकारियों को निर्देश दिए थे कि जिला स्तर पर सेनानी संगठन के साथ बैठक कर समस्याओं का निस्तारण किया जाएगा लेकिन अब तक अल्मोड़ा में यह बैठक नहीं हुई है। वहां पर जिलाध्यक्ष कमलेश पांडे, संगठन मंत्री बद्री पांडे, शिवेंद्र गोस्वामी, भारत पांडे, विनय कुमार पांडे आदि शामिल रहे।

नौ रूटों पर रोडवेज ने दौड़ाई 15 बसें

लोहाघाट/चंपावत, एजेंसी। पिथौरागढ़ में चल रही प्रादेशिक सेना की भर्ती के बाद रोडवेज की सेवाएं पटरी पर आ गई हैं। भर्ती से बसों के लौटने के बाद रोडवेज ने नौ रूटों पर 15 बसों का संचालन शुरू कर दिया है, इससे यात्रियों को काफी सहुलियतें मिल रही हैं।

रोडवेज की एसएसआई दीपा वर्मा ने बताया कि पूर्व में पिथौरागढ़ में चल रही सेना की भर्ती के लिए लोहाघाट डिपो की कई बसों को लगातार भेजा जा रहा था, जिसके चलते मैदानी रूटों पर बस सेवाएं संचालित नहीं हो पा रही थी।

उन्होंने बताया कि सेना भर्ती से सारी बसें लौट आई हैं जिसके बाद नौ रूट दिल्ली, गुरुग्राम, देहरादून, बरेली, काशीपुर, पोंटासाहिब, हल्द्वानी, नैनीताल, ऋषिकेश रूटों पर प्रतिदिन 15 बसों का संचालन किया जा रहा है। चंपावत रोडवेज स्टेशन में दिल्ली, गुरुग्राम के लिए बसों का संचालन शुरू होने से यात्रियों ने राहत की सांस ली है।

निजीकरण के विरोध में फैक्टरी कर्मचारियों का प्रदर्शन जारी

मौलेखाल(अल्मोड़ा), एजेंसी। मोहान स्थित आईएमपीसीएल दवा फैक्टरी के निजीकरण के विरोध में कर्मचारियों का विरोध प्रदर्शन जारी है। सोमवार को भी फैक्टरी में कार्यरत कर्मचारियों ने परिसर में एकत्र होकर सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। वक्ताओं ने कहा कि सरकार दवा फैक्टरी का निजीकरण कर कर्मचारियों का उत्पीड़न कर रही है। कर्मचारी इस तरह के उत्पीड़न को अब बर्दाश्त करने की स्थिति में नहीं हैं। कर्मचारी यूनियन के अध्यक्ष जयपाल सिंह रावत ने कहा कि लंबा समय बीतने के बाद भी इन मांगों पर कोई सकारात्मक निर्णय नहीं लिया गया है। चेतावनी दी कि जल्द मांगें पूरी नहीं हुईं तो उग्र आंदोलन होगा।

एंटीबायोटिक दवाओं के दुरुपयोग को लेकर लोगों को किया जागरूक

ऋषिकेश, एजेंसी। एम्स की ओर से आयोजित विश्व एंटीमाइक्रोबियल जागरूकता सप्ताह का रविवार को विधिवत समापन हो गया। इस दौरान रोल प्ले के माध्यम से लोगों को एंटीबायोटिक दवाओं के बढ़ते दुरुपयोग को लेकर जागरूक किया गया। साथ ही उन्हें इन दवाओं के सही इस्तेमाल के तौर-तरीकों समझाए गए।

रविवार को जनजागरूकता सप्ताह के समापन पर एम्स के नर्सिंग छात्र-छात्राओं की ओर से त्रिवेणीघाट पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। जिसमें आम जनता को एंटीबायोटिक दवाओं को लेकर जागरूक किया गया। साथ ही जनसामान्य के बीच एंटीबायोटिक्स के विवेकपूर्ण उपयोग पर एक विशेषज्ञ व्याख्यान दिया गया।

इस कार्यक्रम में लगभग 250 लोगों ने प्रतिभाग किया। साथ ही उन्होंने विशेषज्ञों से एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग पर कई प्रश्न पूछे। अभियान के आयोजन सचिव डॉ. प्रसन्न कुमार पंडा ने बताया कि अभियान के दौरान विभिन्न विभागों जैसे चिकित्सा, फार्माकोलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी, सीएफएम, नर्सिंग कॉलेज और नर्सिंग सेवाओं की ओर से कई कार्यक्रम आयोजित किए।

हाईवे पर स्कूटी सवार महिला से बाइक सवार बदमाशों ने लूटी चेन

रूड़की, एजेंसी। मंगलौर क्षेत्र में बदमाशों ने एक बार फिर पुलिस सुरक्षा को धता बताकर स्कूटी सवार एक महिला से चेन लूट ली और फरार हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने बाइक सवार बदमाशों की तलाश की लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया। महिला की ओर से पुलिस को तहरीर दी गई है।ढ्ढ मंगलौर कोतवाली क्षेत्र स्थित डिफेंस कॉलोनी निवासी रचना रावत शनिवार की रात स्कूटी से एक शादी समारोह में जा रही थी। जैसे ही वह चौधरी चरण सिंह चौराहे पर पहुंची तो बाइक सवार दो बदमाशों ने चेन लूट ली और फरार हो गए। महिला ने शोर मचाया तो आसपास के लोगों ने बदमाशों का पीछा किया लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया। महिला ने पुलिस को तहरीर दी है। एसएसआई रफत अली ने बताया कि घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले जा रहे हैं। तहरीर के आधार पर केस भी दर्ज किया जा रहा है। वहीं पिछले सप्ताह ही बदमाशों ने दूल्हे के पिता से नोटों से भरा बैग लूटा था। इस मामले में अभी तक बदमाशों का पता नहीं चल पाया है। वहीं पिछले सप्ताह ही बदमाशों ने दूल्हे के पिता से नोटों से भरा बैग लूटा था। इस मामले में अभी तक बदमाशों का पता नहीं चल पाया है।

सत्यापन नहीं कराने पर 68 मकान मालिकों के चालान

ऋषिकेश, एजेंसी। थाना मुनि की रेती पुलिस ने किरायेदारों का सत्यापन नहीं कराने वाले 68 मकान मालिकों के चालान किए हैं। जिन पर कुल 6 लाख 80 हजार रुपये का अर्थदंड लगाया गया है। थाना पुलिस ने रविवार को सुबह करीब साढ़े 6 बजे तपोवन क्षेत्र के बालक नाथ रोड, एसबीआई वाली गली, जीआईसी रोड, लक्ष्मणझूला रोड और अपर तपोवन में बाहरी व्यक्तियों के खिलाफ सत्यापन अभियान चलाया। इस अभियान में पुलिस ने 400 से 450 बाहरी व्यक्तियों व किरायेदारों का सत्यापन किया। वहीं किरायेदारों का सत्यापन नहीं कराने वाले 68 मकान मालिकों के चालान किए गए। ऐसे प्रत्येक मकान मालिक पर दस-दस हजार रुपये कुल 6 लाख 80 हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया है। उक्त चालान न्यायालय को प्रेषित किए जाएंगे।

थाना प्रभारी निरीक्षक रितेश साह ने बताया कि पूर्व में भी कई बार स्थानीय नागरिकों को किरायेदारों का सत्यापन कराने के संबंध में सूचित किया गया है। लेकिन इसके बाद भी सत्यापन नहीं कराने वाले मकान मालिकों के खिलाफ चालान की कार्रवाई की गई। उन्होंने स्थानीय नागरिकों से किरायेदारों, बाहरी व्यक्तियों आदि का सत्यापन कराने की अपील की है। जिससे भविष्य में किसी अप्रत्याशित घटना से बचा जा सके। बताया कि आगामी दिनों में ढालवाला, तपोवन, कैलाश गेट क्षेत्र में भी सत्यापन अभियान चलाया जाएगा।

स्मृति वन को ईको पार्क के रूप में विकसित करने का कार्य शुरू

ऋषिकेश, एजेंसी। अठूर भागीरथी स्वयं सहायता समूह की ओर से संचालित स्मृतिवन में अब लोग पर्यटन का आनंद उठा सकेंगे। हरिद्वार-ऋषिकेश बाईपास मार्ग के समीप लालपानी वन बीट कक्ष संख्या दो स्थित स्मृतिवन को ईको पार्क के रूप में विकसित करने का कार्य शुरू हो चुका है। यहां ईको पार्क स्थापना के लिए न केवल के एक करोड़ रुपये बजट स्वीकृत करने की घोषणा की थी, बल्कि उन्होंने इस कार्य के लिए 50 लाख रुपये की अग्रिम धनराशि भी जारी करने की सूचना दी थी। देहरादून वन प्रभागीय अधिकारी नीरज कुमार शर्मा के निर्देशन में वन क्षेत्राधिकारी ऋषिकेश जीएस धमान्दा की देखरेख में यहां चहारदीवारी निर्माण का कार्य शुरू किया जा चुका है। स्मृतिवन के संयोजक एवं जिला गंगा सुरक्षा समिति के नामित सदस्य विनोद जुगलान ने कहा कि सुरक्षा चहारदीवारी निर्माण से पूर्व ही उन्होंने प्रभागीय वनाधिकारी देहरादून को भावी विकास योजनाओं को ध्यान में रखते हुए मुख्य मार्ग के समीप वाहन पार्किंग की जगह छोड़ने का सुझाव दिया था।

नई बस्ती में तेंदुआ की दहशत

टनकपुर (चंपावत), एजेंसी। जंगल से सटे ग्राम सभा सैलानीगोठ के नई बस्ती में पिछले तीन-चार दिनों से तेंदुआ के नजर आने से दहशत व्याप्त है। ग्राम प्रधान रमीला आर्या ने वन विभाग से गश्त बढ़ाने की मांग की है। समाजसेवी हरीश प्रसाद ने बताया कि गांव में लक्ष्मी दत्त के घर के पास तेंदुआ नजर आने के बाद से गांव में शाम होते ही लोग डर रहे हैं। तेंदुआ घरों से कई कुत्तों को उठाकर निवाला बना चुका है। खटीमा रेंज के वन कर्मियों को इसकी सूचना दे दी है।

महिला बंदी सिखेंगी सिलाई के गुर

हल्द्वानी, एजेंसी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव नैनीताल बीनू गुलियानी ने नेशनल ह्यूमन राइट ऑर्गनाइजेशन की ओर से हल्द्वानी उपकारागार में पुनर्वास परिवर्तन की यात्रा कार्यक्रम के तहत महिला बंदियों के लिए सिलाई कार्यशाला का शुभारंभ किया। कहा कि बंदियों के कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य उन्हें रोजगार के लिए सक्षम बनाना है।

फाटो जोन में 5 किमी का इलाका प्रतिबंधित

रामनगर, एजेंसी। तराई पश्चिमी वन प्रभाग के चर्चित फाटो पर्यटन जोन में पांच किमी का इलाका पर्यटन के लिए प्रतिबंधित किया गया है। वन विभाग ने वहां मौजूद बाघिन और उसके तीन शावकों की सुरक्षा के मद्देनजर यह फैसला लिया है। वन कर्मियों की टीम लगातार उनके मूवमेंट पर नजर रख रही है।

तराई पश्चिमी वन प्रभाग के डीएफओ प्रकाश चंद्र आर्य ने बताया कि फाटो पर्यटन जोन में रेस्ट हाउस से करीब 10 किमी की दूरी पर एक बाघिन अपने तीन शावकों के साथ घूम रही है। बाघिन के शावक अभी काफी छोटे हैं और उनकी सुरक्षा की जा रही है। इसके लिए उस क्षेत्र के पांच किमी के दायरे में पर्यटन गतिविधि को बंद कर दिया गया है।

डीएफओ ने बताया कि पर्यटन गतिविधियों की वजह से बाघिन व उसके शावकों के विचरण में व्यवधान होने की आंशका है।

ज्वालापुर कोतवाल और भाजपा नेता के बीच कहासुनी, हंगामा

रूड़की, एजेंसी। ज्वालापुर कोतवाली में कोतवाल और रानीपुर विधायक के करीबी भाजपा नेता के बीच कहासुनी हो गई। इसके बाद भाजपाइयों ने कोतवाली घेर ली और धरने पर बैठ गए। विधायक आदेश चौहान भी कोतवाली पहुंच गए। कोतवाली में नारेबाजी करते हुए हंगामा काटा। ये पहला मौका नहीं है जब विधायक और उनके समर्थकों ने कोतवाली घेरी हो, इससे पहले भी कई बार ऐसा हो चुका है।

जानकारी के मुताबिक, भाजपा नेता व रानीपुर विधायक आदेश चौहान के करीबी माने जाने वाले वरुण वशिष्ठ रविवार की देर शाम कोतवाली ज्वालापुर पहुंचे। यहां कोतवाल के कमरे में पहुंचकर किसी काम के सिलसिले में बात की। इसको लेकर दोनों के बीच कहासुनी हो गई। बताया गया कि कोतवाल प्रदीप बिष्ट ने बाहर जाने के लिए कह दिया। इसके बाद मामला तूल पकड़ गया। वरुण ने ये बात विधायक आदेश चौहान और अपने साथी कार्यकर्ताओं को दे दी। इसके बाद कोतवाली में सभी पहुंच गए और धरने पर बैठ गए।

आप ने देश को ईमानदारी से काम करने वाला मॉडल ऑफ गवर्नेंस दिया- केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी के नेताओं और कार्यकताओं ने मंगलवार को पार्टी का स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। मुख्यालय पर पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल समेत तमाम बड़े नेता एकत्र हुए और संविधान दिवस के दिन बनी आम आदमी पार्टी के 13वें स्थापना दिवस पर सभी समर्थकों को बधाई दी। इस दौरान अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हमारी पार्टी को बने 12 साल हो गए हैं। इन 12 सालों में हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि हमने इस देश को ईमानदारी से काम करने वाला मॉडल ऑफ गवर्नेंस दिया है। इस मॉडल में हमने आम आदमी के परिवार का सदस्य बनकर उनकी रोजमर्रा की जिंदगी में थोड़ी सी सहूलियत दी, दिल्ली का इंफ्रास्ट्रक्चर मजबूत किया और बजट भी मुनाफे का रखा। आम आदमी पार्टी द्वारा शुरू की गई स्कूल, अस्पताल, बिजली, पानी व सड़क की राजनीति की आज देशभर में बात की जाती है। मुझे इस बात की चिंता नहीं है कि सीएम बनूंगा की नहीं, मेरी चिंता यह है कि सरकारी स्कूलों के बच्चों, गरीबों के मुफ्त इलाज और 24 घंटे मिल रही बिजली का क्या होगा? जब भगवान को लगा कि देश का संविधान खतरे में है तो उन्होंने संविधान दिवस के दिन ही आम आदमी पार्टी को जन्म दिया- केजरीवाल

आम आदमी पार्टी के स्थापना दिवस पर राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आम आदमी पार्टी को बने हुए अब 12 साल हो गए। आज पार्टी का 13वां जन्मदिन है। ऐसा लगता है, जैसे कल ही बनी थी। आज ही भारत का संविधान दिवस भी है। यह कोई संयोग नहीं हो सकता कि जिस दिन भारत का संविधान दिवस है, उसी दिन भारत के अंदर 60-70 साल बाद एक नई पार्टी पैदा होती है। भगवान जो कुछ भी करता है, उसके अंदर भगवान की कुछ मंशा होती है, भगवान ऐसे ही कुछ नहीं करता। तो भगवान ने संविधान दिवस के दिन ही आम आदमी पार्टी को पैदा किया, कुछ तो सोचकर किया होगा। भगवान को भी लग रहा होगा कि संविधान खतरे में है, इसलिए अब एक ऐसी पार्टी चाहिए जो इसे बचाएगी।

बिना संघर्ष किए कुछ नहीं मिलता, यह हमारे खिलाफ जो कुछ भी चल रहा है, यह संघर्ष तो हमारी तकदीर में ही लिखा है- केजरीवाल

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि इसमें तीन बड़ी बातें महत्वपूर्ण हैं। पहला, इस पार्टी का नाम आम आदमी पार्टी पड़ा। यह आम लोगों की पार्टी है, उन लोगों की तरह नहीं है। आम लोगों ने इकट्ठे होकर इसे बनाई है। जब पार्टी बनी तो एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जिसके बाप, दादा या परदादा कोई नेता हो। सारे आम लोग ही थे। हम सारे लोग इकट्ठा हुए और सबने पार्टी बना ली, और ऊपर वाले का आशीर्वाद था कि 12 साल बीत गए और इस दौरान काफी कुछ हासिल किया। दूसरा, झाड़ू इसका चुनाव चिन्ह है, तो भगवान ने कुछ तो सोचा होगा कि एक तो संविधान दिवस वाले दिन, आम आदमी पार्टी और झाड़ू चुनाव चिन्ह, यानि भगवान ने हमें बहुत बड़ी जिम्मेदारी दी है। यह झाड़ू चलाने की जिम्मेदारी हमारी है और हमें मिलकर इस पूरे देश को साफ करना है। जब देश को साफ-सुथरा करोगे, कूड़ा निकालोगे तो थोड़ी धूल-मिट्टी तो उठेगी। हमें संघर्ष तो करना पड़ेगा। बिना संघर्ष किए कुछ नहीं मिलता। ये हमारे खिलाफ जो कुछ भी चल रहा है, यह संघर्ष तो हमारी तकदीर में ही लिखा है।

हमने साबित किया कि सरकार ईमानदारी से और फायदे में भी चल सकती है- केजरीवाल

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि अगर कोई पूछे कि 12 साल में क्या पाया? तो कोई कहेगा कि दो राज्यों में सरकार आ गई, गुजरात में पांच एमएलए आ गए। गोवा, कश्मीर में एमएलए आ गए। यहां-यहां मेयर बन गए। लेकिन मेरे हिसाब से हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि हमने इस देश को एक मॉडल ऑफ गवर्नेंस दिया है कि सरकार ऐसे भी चल सकती है। सरकार ईमानदारी से भी चल सकती है। और अगर सरकार ईमानदारी से चले तो क्या कुछ नहीं हो सकता। सरकार को घाटे में चलने की जरूरत नहीं है, सरकार फायदे में भी चल सकती है। आज पूरी दुनिया में लंदन, न्यूयॉर्क, टोक्यो से सबसे ज्यादा दिल्ली में सीसीटीवी कैमरे है- केजरीवाल

अरविंद केजरीवाल ने आगे कहा कि हमने इस देश को मॉडल ऑफ गवर्नेंस दिया जिसमें एक तरफ आम आदमी के परिवार का सदस्य और दोस्त बनकर उनकी दिन-ब-दिन जिंदगी में थोड़ी सी सहूलियत दी है। लोगों का बिजली का बिल माफ कर दिया। पानी का बिल माफ कर दिया। कोई आदमी यही चाहता है कि उसके बच्चे अच्छा पढ़-लिख जाएं। बच्चों के लिए आदमी एक टाइम की रोटी भी छोड़ देता है। पेट काटकर भी अपने बच्चों को पढ़ाता है। हमने उनके बच्चों के लिए अच्छी शिक्षा का इंतजाम कर दिया। आदमी यह चाहता है कि अगर उसके घर में कोई बीमार हो तो उसका अच्छे से इलाज हो जाए, हमने उसका इंतजाम कर दिया। एक तरफ हमने यह सब किया, लेकिन दूसरी तरफ देश की राजधानी है दिल्ली, हमने यहां के इंफ्रास्ट्रक्चर को भी कमजोर नहीं होने दिया। जब दिल्ली में हमारी सरकार बनी तो 200 किलोमीटर की मेट्रो की लाइन थी, आज 450 किलोमीटर मेट्रो की लाइन हो गई। अनाधिकृत कालोनियों में 10 हजार किलोमीटर की सड़कें बनाई। हमारी सरकार से पहले 65 साल में दिल्ली के अंदर 62 फ्लाईओवर थे, हमने नौ साल में 38 नए फ्लाईओवर बना दिए। कई किलोमीटर सीवर की पाइपलाइन डलवाई, नालियां बनवाई। कच्ची कालोनियों का उद्धार किया। आज पूरी दुनिया में लंदन, न्यूयॉर्क, टोक्यो से सबसे ज्यादा दिल्ली के अंदर सीसीटीवी कैमरे हैं।

भोपाल में ईश्वर करुण के सम्मान में कवि गोष्ठी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

चेन्नै, पिछले दिन चेन्नै के कवि ईश्वर करुण के सम्मान में भोपाल के साहित्यिकारों द्वारा दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय में एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। संग्रहालय की सचिव और राजुरकर राज स्मृति समारोह की निदेशक श्रीमती करुणा राजुरकर ने पुष्प गुच्छ से श्री ईश्वर करुण का सम्मान किया। मध्यप्रदेश लेखक संघ के श्री ऋषि श्रृंगारी ने ईश्वर करुण का परिचय दिया और बताया कि वर्तमान दौर के श्रेष्ठ गीतकारों में ईश्वर करुण का नाम है। इनके गीत सहज सरल और बोधगम्य हैं, जिनका असर श्रोताओं पर जादू की तरह होता है।

मध्यप्रदेश लेखक संघ के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र गट्टानी ने स्वागत किया, पूर्व अध्यक्ष डॉ राम वल्लभ आचार्य ने 2005 में सुने ईश्वर करुण के गीतों का उल्लेख करते हुए उन्हें गीतों का एक सशक्त हस्ताक्षर बताया। संग्रहालय के अध्यक्ष श्री रामराव वामनकर ने श्री ईश्वर करुण को स्मृति चि प्रदान किया। श्री ईश्वर करुण ने आभार व्यक्त करते हुए अपनी मारिशस यात्रा के दौरान स्व राजुरकर राज के साथ बिताए दिनों का स्मरण किया और उन्हें एक समर्पित साहित्यकार बताया साथ ही अपने कुछ गीत प्रस्तुत किए। उपस्थित सभी साहित्यकारों ने अपनी रचनाएँ सुनाई।

आयोजन में मध्यप्रदेश लेखक संघ के वर्तमान अध्यक्ष श्री राजेन्द्र गट्टानी, पूर्व अध्यक्ष और वरिष्ठ कवि डॉ राम वल्लभ आचार्य, प्रसिद्ध गीतकार श्री ऋषि श्रृंगारी, पैरोडी के विशेषज्ञ श्री राकेश वर्मा हैरत, नवोदित कवि श्री सुनील केहरी, लोकप्रिय गीतकार श्रीमती संगीता सरल, युवा दोहाकार श्री मनीष श्रीवास्तव बादल, गीतकार श्री रामराव वामनकर (अध्यक्ष दुष्यंत संग्रहालय), श्रीमती करुणा राजुरकर (निदेशक/सचिव दुष्यंत संग्रहालय), युवा कवियित्री श्रीमती अभिलाषा श्रीवास्तव अनुभूति, गजलकार श्री अशोक निर्मल, कवि महेश अग्रवाल, कवि किशन तिवारी, एवं सुनील केहरी उपस्थित थे। वरिष्ठ साहित्यकार श्री राकेश वर्मा हैरत ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

दिल्ली पुलिस के SHO और एसीपी के कार्यों का मूल्यांकन शुरू

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

हाल के वर्षों में राजधानी में बेतहाशा बढ़ते अपराध पर अंकुश लगाने व कानून व्यवस्था की स्थिति में सुधार लाने के मकसद से राजधानी के सभी थानों व सब डिवीजन कार्यालयों में जाकर थानाध्यक्षों व एसीपी के कामकाज का मूल्यांकन करने का काम सोमवार से शुरू कर दिया गया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के निर्देश पर पुलिस आयुक्त संजय अरोड़ा ने पुलिस मुख्यालय से आर्डर जारी कर सभी आईपीएस व दानिप्स अधिकारियों को जांच करने की जिम्मेदारी सौंपी है। एडिशनल डीसीपी से लेकर संयुक्त आयुक्त को दो-दो थानों व एडिशनल पुलिस कमिश्नर से लेकर विशेष आयुक्त रैंक के अधिकारियों को एक-एक एसीपी कार्यालय में जाकर उनके द्वारा किए गए कामकाज का ऑडिट करने की जिम्मेदारी सौंपी गई हैं।

अधिकारी अपने इलाके को छोड़ दूसरे एरिया में करेंगे जांच

कौन-कौन अधिकारी किन-किन थानों व एसीपी कार्यालयों की जांच करेंगे इसकी सूची बनाकर मुख्यालय से सभी को जिम्मेदारी सौंपी गई हैं। सभी को अपने-अपने अधिकार क्षेत्र से इतर जाकर जांच करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है, यानी अधिकारी अपने क्षेत्र को छोड़कर दूसरे इलाके में जाकर जांच करेंगे। ऐसा नियम इसलिए बनाया गया है ताकि कोई अधिकारी जांच में भेदभाव न कर पाएं व निष्पक्ष तरीके से कामकाज का मूल्यांकन करें। इससे जिले के डीसीपी को यह फायदा होगा कि वे अपने व दूसरे जिले के कामकाज के अंतर को समझ पाएंगे। उन्हें जिस जिला का कामकाज बेहतर लगेगा उसे वे अपने जिले में भी लागू कर सुधार कर पाएंगे।

10 दिन के अंदर सौंपे जांच रिपोर्ट-पुलिस आयुक्त पुलिस आयुक्त ने सभी अधिकारियों को 10 दिन के अंदर जांच रिपोर्ट सौंपने को कहा है। उसके बाद दोनों जिला के विशेष आयुक्त कानून एवं व्यवस्था मधुप तिवारी व रविंद्र सिंह यादव के अलावा विशेष आयुक्त अपराध शाखा देवेश चंद्र श्रीवास्तव को जांच रिपोर्ट की समीक्षा करने को कहा गया है। तीनों अधिकारी रिपोर्ट रिपोर्ट देखकर पता करेंगे कि किन थानाध्यक्षों व एसीपी का काम ठीक है और किनका अपेक्षा के अनुरूप नहीं है। कार्य प्रदर्शन के अनुसार थानाध्यक्षों व एसीपी को दिशा निर्देश दिए जाएंगे। बाद में पूरी दिल्ली के थानों व एसीपी की रिपोर्ट पुलिस आयुक्त को सौंपी जाएगी।

आयुक्त उक्त रिपोर्ट गृह मंत्रालय में गृह सचिव को सौंपेंगे। वहां भी रिपोर्ट की समीक्षा की जाएगी। दिल्ली पुलिस द्वारा किए जाने वाले कामकाज की इस तरह की समीक्षा पहली बार की जा रही है। बीते शुक्रवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली की कानून व्यवस्था की स्थिति की समीक्षा के लिए पुलिस आयुक्त समेत छह विशेष आयुक्त रैंक के अधिकारियों के साथ गृह मंत्रालय में तलब किया था।

वहां गृह मंत्री ने पुलिस आयुक्त को थानों व एसीपी के कामकाज की तुरंत जांच कराने के निर्देश दिए थे। जिसके बाद आयुक्त ने जल्द जांच कराने के लिए सभी आईपीएस व दानिप्स अधिकारियों को जांच की जिम्मेदारी सौंप दी। ऑडिट करने वाले अधिकारियों को एक-एक बुकलेट सौंपी गई है, जिसमें बताया गया है कि थानों में जाकर उन्हें क्या-क्या चेक करना है। एक जनवरी 2023 से 15 नवंबर तक का लेखाजोखा चेक करने को कहा गया है। थाने में कितने केस दर्ज किए गए, उनकी जांच किस तरह की गई।

संक्षिप्त खबरें

आप संयोजक केजरीवाल ने संविधान दिवस पर देशवासियों को शुभकामनाएं दीं

नई दिल्ली । आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने मंगलवार को संविधान दिवस पर देशवासियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने एक्स हैंडल पर लिखा, संविधान केवल एक दस्तावेज नहीं, ये हमारे अधिकारों, कर्तव्यों और लोकतांत्रिक मूल्यों का आधार है। बाबा साहेब अंबेडकर और संविधान निमार्ताओं के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी, जब हम संविधान के मूल्यों को अपने जीवन में अपनाएं। हमारा संविधान हमारी पहचान है और इसे बचाना हमारा धर्म। सभी देशवासियों को संविधान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। इस अवसर पर केजरीवाल ने आप का भी स्मरण किया। उन्होंने लिखा, 2012 में आज का ये दिन इतिहास का वो पल है, जब देश के आम आदमी ने अपनी ताकत पहचानी और आम आदमी पार्टी की स्थापना की। अब तक का हमारा ये सफर संघर्ष, बलिदान और जीत की कहानियों से भरा रहा। पिछले 1 साल में तो हमें मिटाने की लाख कोशिशें हुईं, लेकिन हमारी ईमानदारी, जनता के प्यार और कार्यकताओं के हौसले ने हमें और मजबूत बना दिया। हम अन्याय और तानाशाही के खिलाफ पहले से ज्यादा मजबूती से खड़े हैं। संविधान और लोकतंत्र बचाने की हमारी ये लड़ाई जारी रहेगी।आइए, पार्टी के इस स्थापना दिवस पर देश को और बेहतर बनाने का संकल्प लें। जय हिंद। इसके अलावा उन्होंने मुंबई हमले की बरसी पर पोस्ट किया। केजरीवाल ने लिखा, 26/11 के कायराना आतंकवादी हमले में शहीद हुए मासूम नागरिकों और हमारे वीर जवानों की याद आज भी हर भारतीय के दिल में है। हम उन सभी शहीदों को नमन करते हैं, जिन्होंने अपने प्राण देकर निदोर्षों की जान बचाई। आइए, इस दिन संकल्प लें कि आतंकवाद के खिलाफ हम सब सदा मजबूती से खड़े रहेंगे।

भाजपा नेता झुग्गी टूरिज्म करने जा रहे हैं, एक दिन झुग्गी में रहेंगे, फिर उसी झुग्गी पर बुल्डोजर चलाएंगे- केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

भाजपा नेताओं द्वारा अनधिकृत झुग्गियों में रह रहे गरीब लोगों के यहां एक रात गुजारने के कार्यक्रम पर आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने आड़े हाथ लिया। उन्होंने कहा कि भाजपा नेता झुग्गी टूरिज्म करने जा रहे हैं। एक दिन झुग्गी में रहकर एक साल बाद यही लोग बुल्डोजर लेकर उन गरीबों की झुग्गियां तोड़ने आएंगे। यह लोग गरीबों के साथ एक रात बिताकर उनकी गरीबी का मजाक उड़ा रहे हैं। अगर इनमें इतनी ही हिम्मत है तो 3-4 महीने उनके साथ झुग्गियों में रहकर देखें कि किस हालत में वो जीते हैं। मैंने कमिश्नर की नौकरी छोड़कर 2000 से 2010 तक दिल्ली की झुग्गियों में गुजारी है। मुझे पता है कि वो किस हालत में जीते हैं। उन्होंने कहा कि पिछले 6-7 साल में कई जगह इन्होंने झुग्गी तोड़ने की कोशिश की और हमारी सरकार ने अपनी पावर का इस्तेमाल कर कई झुग्गियों को तोड़ने से रोका। झुग्गीवालों से कहना चाहता हूं कि आज जो लोग झुग्गियों में आपके साथ रहने के लिए आ रहे हैं, इनसे सावधान रहने की जरूरत है।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि इन लोगों का मॉडल ऑफ गर्वनेंस क्या है? आज इनके मॉडल ऑफ गर्वनेंस की झलक देखने को मिलेगी। मंगलवार को शाम को इनके कुछ नेता झुग्गियों के अंदर रहने के लिए जा रहे हैं। जैसे आप लोग जाते हो। एक दिन की छुट्टी लेकर, मन बहलाने के लिए कभी गोवा जाते हो। कोई कह रहा था झुग्गी टूरिज्म है। एक रात गरीबों के साथ बिताकर आप उनकी गरीबी का मजाक उड़ा रहे हो। मैं इनकम टैक्स में कमिश्नर होता था। मैंने कमिश्नर की नौकरी छोड़ी और 2000 से 2010 तक मैं दिल्ली की झुग्गियों के अंदर जाकर रहा था। अगर झुग्गियों में रहना है, हिम्मत है तो 3,4 महीने उनके साथ झुग्गियों में रहकर देखो कि किस अवस्था में वो लोग जीते हैं।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मैं दिल्ली के झुग्गीवालों से यही कहना चाहता हूँ कि जो लोग आज आपकी झुग्गियों में रहने वाले हैं, उनसे सावधान रहना। यही लोग एक साल बाद आपकी उसी झुग्गी को तोड़ने के लिए आयेंगे। जिस झुग्गी में आज ये रहेंगे, उसी झुग्गी को उजाड़ने के लिए ये बुलडोजर लेकर आयेंगे। पिछले 6,7 साल में कई जगह इन्होंने झुग्गी तोड़ने की कोशिश की। कई जगह मैंने, हमारी सरकार ने अपनी पावर का इस्तेमाल करके उन झुग्गियों को तोड़ने से रोका। दिल्ली में मकान बनाना बड़ा मुश्किल है। एक झुग्गी के अंदर बेचारा आदमी रह रहा है, किसी तरह से दो वक्त की रोटी खाकर अपने बच्चों के साथ रह रहा है। अगर उसके पास पैसे होते तो वो भी बड़े बड़े महल ले लेता, उसके पास पैसे ही तो नहीं है। एक गरीब आदमी ही तो है और ये लोग उसकी झुग्गियाँ तोड़ देते हैं।

मुठभेड़ के बाद दो आरोपित गिरफ्तार

Image credit: istockphoto.com/YakobchukOlena

नई दिल्ली। पश्चिम विहार रिंग रोड स्थित राज मंदिर सुपरमार्केट और द्वारका जिले के छावला स्थित एक वर्कशॉप पर कुछ ही घंटे के अंदर ताबड़तोड़ कई राउंड फायरिंग करके सनसनी फैलाने के मामले में बाहरी जिला पुलिस को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। इस मामले में पुलिस ने दो शूटरों को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया है। मंगलवार को पुलिस मुख्यालय में प्रेस वार्ता के दौरान बाहरी जिले के डीसीपी सचिन शर्मा ने बताया कि जिले के एंटी एक्सटॉर्शन सेल और एंटी नारकोटिक्स स्क्वाड की संयुक्त टीम ने यह कार्रवाई करते हुए इन दोनों शूटर को गिरफ्तार किया है। मुठभेड़ में एक बदमाश के पैर में गोली लगी है। गिरफ्तार आरोपितों की पहचान पवन और प्रवेश के रूप में हुई है। ये दोनों हरियाणा के बहादुरगढ़ के रहने वाले हैं। इनके पास से दो सोफिस्टिकेटेड पिस्टल, पांच जिंदा कारतूस और तीन खाली कारतूस भी बरामद किया गया है। साथ ही चोरी की एक बाइक भी जब्त की गई है।

डीसीपी के अनुसार एसीपी नेकी राम लाम्बा की देखरेख में इंस्पेक्टर रितेश राज की टीम ने मुंडका इलाके में इनको बीती रात रुकने का इशारा किया लेकिन इन लोगों ने आत्मसमर्पण करने की बजाय पुलिस टीम पर गोली चलानी शुरू कर दी। इसके कारण पुलिस ने जवाबी कार्रवाई में गोली चलाकर इनको पकड़ा।

उल्लेखनीय है कि फायरिंग की वारदात 6 नवंबर को हुई थी। सबसे पहले फायरिंग पश्चिम विहार के राज मंदिर सुपर मार्केट की दुकान पर हुई थी। उस मामले में करोड़ों की रंगदारी भी मांगी गई थी। इस गैंग के बदमाशों ने दूसरी फायरिंग की वारदात छावला इलाके में की थी।

पश्चिम विहार और छावला फायरिंग के दो शूटर मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार

नई दिल्ली। पश्चिम विहार रिंग रोड स्थित राज मंदिर सुपरमार्केट और द्वारका जिले के छावला स्थित एक वर्कशॉप पर कुछ ही घंटे के अंदर दोनों ही स्थानों पर ताबड़तोड़ कई राउंड फायरिंग करके सनसनी फैलाने के मामले में बाहरी जिला पुलिस को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। इस मामले में पुलिस ने दो शूटरों को मुठभेड़ के दौरान धर दबोचा है। इसकी पुष्टि डीसीपी सचिन शर्मा ने की है। उन्होंने बताया कि जिले के एंटी एक्सटॉर्शन सेल और एंटी नारकोटिक्स स्क्वाड की ज्वाइंट टीम ने यह कार्रवाई करते हुए इन दोनों शूटरों को दबोचा है।

मौसम: ठिठुरन की ओर बढ़ी दिल्ली, 27 नवंबर के बाद आएगी तापमान में गिरावट

नई दिल्ली। नवम्बर जाने को है पहाड़ों से आने वाली हवा मैदानी इलाकों में अब अच्छी ठंड का अहसास कराना शुरू करा देगी। मौसम विभाग का अनुमान है कि शुक्रवार से नया पश्चिमी विक्षोभ पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र को प्रभावित कर सकता है। इसका सीधा असर मैदानी इलाकों में दिखेगा। ऐसे में बृहस्पतिवार और शुक्रवार के लिए मध्य से लेकर घने से घने कोहरे का येलो अलर्ट जारी किया है। इस दौरान अधिकतम तापमान 24 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है। उधर, सोमवार सुबह सफदरजंग हवाई अड्डे पर हल्का कोहरा छाया रहा। ऐसे में सुबह 7 बजे से 11:30 बजे तक न्यूनतम दृश्यता 900 मीटर दर्ज की गई। दोपहर में मुख्य रूप से धुंध की स्थिति रही। वहीं, पालम हवाई अड्डे पर हल्का कोहरा छाया रहा। यहां दृश्यता 800 मीटर दर्ज की गई। सोमवार को दिन के समय लोगों को गर्मी का अहसास हुआ। सुबह-शाम स्मॉग छाया रहा। अधिकतम तापमान में मामूली कमी दर्ज की गई। ऐसे में अधिकतम तापमान एक डिग्री गिरावट के साथ 25.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इसमें बीते 24 घंटे में 0.3 डिग्री सेल्सियस की कमी हुई। वहीं, न्यूनतम तापमान सामान्य से तीन डिग्री अधिक के साथ 14 डिग्री दर्ज किया गया। हालांकि, रात में ठंड में बरकरार है। रिज इलाके की सबसे ठंडी सुबह रही। यहां न्यूनतम तापमान 10.4 डिग्री दर्ज किया गया। मौसम विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले दिनों में एक और पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने की संभावना है। इसके बाद मौसम में बदलाव संभावित हैं। मौसम विभाग का पूवार्नुमान है कि मंगलवार को कुछ स्थानों पर सुबह स्मॉग छाए रहने की आशंका है। शाम व रात में भी स्मॉग का अनुमान है।

एनसीसी कैडेट्स को दिल्ली सरकार का तोहफा; एनसीसी भवन रोहिणी में वर्ल्ड क्लास शूटिंग रेंज का शुभारंभ हुआ

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

एनसीसी कैडेट्स को दिल्ली सरकार की ओर से तोहफा मिला है। दिल्ली सरकार द्वारा एनसीसी भवन रोहिणी में वर्ल्ड क्लास शूटिंग रेंज का शुभारंभ किया गया है। मंगलवार को सीएम आतिशी ने एनसीसी कैडेट्स के लिए देश के इस पहले अंडरग्राउंड शूटिंग रेंज का उद्घाटन किया।

इस मौके पर सीएम आतिशी ने कहा कि, शूटिंग महंगा स्पोर्ट्स है, लेकिन पैसे खिलाड़ियों की प्रतिभा के आड़े न आए इसलिए दिल्ली सरकार ने इस अत्याधुनिक शूटिंग रेंज की शुरूआत की है। उन्होंने कहा कि, हमारे युवाओं में प्रतिभा की कमी नहीं है, मुझे उम्मीद है कि, भारत का अगला ओलंपिक गोल्ड इस शूटिंग रेंज से ट्रेनिंग लिए खिलाड़ी लेकर आयेंगे। उन्होंने कहा कि, हमारे देश में प्रतिभा, जज्बा, प्राकृतिक संसाधनों की कमी नहीं; अगर हमारे युवाओं को सही दिशा मिलती है तो भारत को दुनिया का नंबर.1 देश बनने से कोई नहीं रोक सकता है। बता दे कि, ट्रेनिंग के लिए ये शूटिंग रेंज 24७7 साल में 365 दिन खुला रहेगा। 25 मीटर रेंज का ये फायरिंग रेंज बुलेट प्रूफ सीलिंग, 6 फायरिंग लेन, इलेक्ट्रॉनिक टारगेट कंट्रोल सिस्टम सहित तमाम अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है।

उद्घाटन के मौके पर सीएम आतिशी ने एनसीसी कैडेट्स को संबोधित करते हुए कहा कि, ह्लइस शूटिंग रेंज को देखकर बहुत खुशी हुई कि, यहाँ इतना एडवांस्ड शूटिंग रेंज हमारे एनसीसी कैडेट्स के लिए बनकर तैयार हुआ है। ये ऑल वेदर अंडरग्राउंड शूटिंग रेंज 24७7 और साल में 365 दिन ट्रेनिंग के लिए खुला रहेगा। उन्होंने साझा किया कि, ये रेंज अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है। जिसमें एडवांस फायरिंग प्वाइंट्स, ऑटोमेटेड टारगेट सिस्टम जैसी सुविधाये मौजूद है।

सीएम आतिशी ने कहा कि, शूटिंग एक ऐसा स्पोर्ट्स है, जिसमें हमेशा भारत ने बेहतर प्रदर्शन किया है। चाहे अभी वर्तमान में 2024 पेरिस ओलंपिक में मनु भाकर, सरबजोत सिंह द्वारा ब्रांज मेडल जीतना हो, गगन नारंग-अभिनव बिंद्रा द्वारा ओलंपिक में भारत का मान बढ़ाना हो। और मुझे उम्मीद है कि, भारत का अगला ओलंपिक गोल्ड इस शूटिंग रेंज से ट्रेनिंग लिए खिलाड़ी लेकर आयेंगे।

उन्होंने कहा कि, स्पोर्ट्स ट्रेनिंग हमेशा बहुत महँगी होती है। हम अक्सर देखते है कि बहुत से प्रतिभाशाली युवा इसलिए ट्रेनिंग नहीं ले पाते है क्योंकि स्पोर्ट्स ट्रेनिंग बहुत महँगी होती है। शूटिंग भी एक ऐसा ही स्पोर्ट्स है, जिसमें सभी इक्विपमेंट्स, कोचिंग आदि बहुत महँगे होते है, इसमें लाखों में खर्च होता है। इसलिए बहुत सारे युवा जिनमें प्रतिभा हो, आगे बढ़ने की इच्छा हो लेकिन क्योंकि वो ऐसे परिवार से आते है जहाँ उनके पेरेंट्स इसका खर्च नहीं उठा सकते इसलिए शायद वो इस स्पोर्ट्स में आगे नहीं बढ़ पाते है। सीएम आतिशी ने कहा कि, ह्लइस शूटिंग रेंज के माध्यम से और कालकाजी में दिल्ली सरकार के स्कूल में लगभग बनकर तैयार हुए एक अन्य शूटिंग रेंज के मध्यम से अब दिल्ली के बच्चे, दिल्ली के खिलाड़ी चाहे वो गरीब से गरीब परिवार से आते हो और उनमें शूटिंग को लेकर प्रतिभा है तो पैसों की बाधा नहीं आएगी और दिल्ली सरकार से उन्हें आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। देश के लिए मेडल लाने का मौका मिलेगा।

उन्होंने कहा कि, एनसीसी की यूनिफार्म में बैठे युवाओं की देखकर मन गर्व से भर जाता है। उन्होंने कहा कि, दिल्ली के एनसीसी निदेशालय का 45,000 कैडेट्स हिस्सा है। इन कैडेट्स के हर प्रकार की सुविधा, ट्रेनिंग से जुड़ी सुविधाओं के लिए दिल्ली सरकार हमेशा प्रतिबद्ध रही है। सीएम आतिशी ने कहा कि, ह्लएनसीसी का मकसद देशभक्ति की भाजपा जागृत करना है और हमारी सरकार का मकसद भी सभी में देशभक्ति की भावना जागृत करना है। उन्होंने कहा कि, पढ़ाई लिखाई का मकसद सिर्फ अंग्रेजी-गणित-विज्ञान पढ़कर, परीक्षा पास कर नौकरी लेना नहीं है। पढ़ाई का मकसद है कि, हमारे हर क्लासरूम से देशभक्त बच्चे निकले जो अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद ये सपना लेकर निकलने की उन्हें भारत को दुनिया का नंबर.1 देश बनाना है। उन्होंने कहा कि, इसी मकसद को पूरा करने के लिए हमने अपने स्कूलों में अंग्रेजी-गणित-विज्ञान की पढ़ाई तो बेहतर की, अच्छे क्लासरूम दिए, शानदार स्पोर्ट्स सुविधाएं दी। और हमें गर्व है कि, दिल्ली सरकार के स्कूल देश के एकमात्र ऐसे स्कूल है, जहाँ पर हर स्टूडेंट्स को सभी विषयों के अलावा देशभक्ति भी पढ़ाई जाती है। सीएम आतिशी ने कहा कि, मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि, जो स्टूडेंट्स दिल्ली के सरकारी स्कूलों से निकलेंगे वो देश के लिए मर-मिटने की भावना के साथ निकलेंगे। और मुझे ये भी भरोसा है कि, एनसीसी से जुड़े कैडेट्स भी इसी देशभक्ति की भावना से आगे बढ़ेंगे तो हमारे देश को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता है।

भारतीय रेल
भारत सरकार
रेल मंत्रालय
(रेलवे बोर्ड)

सं. 2024/आरएस (ई) / टीएम/2 नई दिल्ली, दिनांक 20.11.2024

विषय: 41 अदद् 'बैलास्ट रेगुलेटिंग मशीन (बीआरएम)' के डिजाइन, निर्माण, आपूर्ति, परीक्षण और कमीशनिंग, भारतीय रेलवे कर्मचारियों के प्रशिक्षण और 3 साल की वारंटी एएमसी के साथ, के लिए दिनांक 21.02.2025 को बंद होने वाली ई–खुली वैश्विक निविदा सं. 2024–टीएम–2

भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से 41 अदद् 'बैलास्ट रेगुलेटिंग मशीन (बीआरएम)' के डिजाइन, निर्माण, आपूर्ति, परीक्षण और कमीशनिंग, भारतीय रेलवे कर्मचारियों के प्रशिक्षण और 3 साल की वारंटी एएमसी के साथ, के लिए इलैक्ट्रॉनिक बोलियां आमंत्रित की जाती हैं। इच्छुक बोलीदाताओं को सूचित किया जाता है कि वे आगे के ब्यौरों के लिए, निविदा दस्तावेजों को डाउनलोड करने एवं अपनी ई–बोलियां जमा करने के लिए http://www.ireps.gov.in वेबसाइट देखें।

निदेशक, रेल भंडार (एफ)
(रेलवे बोर्ड)

3629/24

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

BIHARIJI ISPAT UDYOG LIMITED
REGD. OFFICE: 8, Sant Nagar, Part of 2nd Floor, East of Kailash, New Delhi, 110065.
CORPORATE OFFICE: SECTOR-45, MATHURA ROAD FARIDABAD, HARYANA, INDIA, 121003
Ph.:+91-11-32946682, 26414057, Tele-Fax:+91-11-41674116 Email Id: biharijiispat@gmail.com
CIN: L27109DL1974PLC007047; Web-site: www.biharijiispat.com

Extract of Audited Consolidated Financial Results for the Quarter ended September 30, 2024

Rs. In Lakhs

S. No.	PARTICULARS	Quarter Ended			Year Ended
		30.09.2024	30.06.2024	30.09.2023	31.03.2024
		Un-audited	Un-audited	Un-audited	Audited
1	Total income from operations	1334.80	414.07	781.99	2701.87
2	Net Profit / (Loss) for the period (before Tax, Exceptional and / or Extraordinary items)	(40.34)	8.35	18.43	110.56
3	Net Profit / (Loss) for the period before tax (after Exceptional and / or Extraordinary items)	(40.34)	8.35	18.43	110.56
4	Net Profit / (Loss) for the period after tax (after Exceptional and / or Extraordinary items)	(34.61)	5.92	23.56	(47.84)
5	Total Comprehensive Income for the period [Comprising Profit / (Loss) for the period (after tax) and Other Comprehensive Income (after tax)	(34.61)	5.92	23.56	152.36
6	**Equity Share Capital**	600.00	600.00	600.00	600.00
7	Earnings Per Share (of Rs. 10/- each) (for continuing and discontinued operations) -				
	(a) Basic	(0.58)	0.10	0.39	2.53
	(b) Diluted	(0.58)	0.10	0.39	2.53

Notes:
1. The above is an extract of the detailed format of Consolidated Audited Financial Results for the quarter ended on September 30, 2024, filed with the Mertopolitan Stock Exchange of India under Regulation 33 of the SEBI (Listing Obligations and Disclosure Requirements) Regulations, 2015. The full format of the Un-audited Financial Results for the quarter ended on September 30, 2024 is available on the Stock Exchange website viz. www.msei.in and on Company's website viz. https://www.biharijiispat.com/
2. The above Un-audited financial results for the quarter ended on September 30, 2024 have been reviewed by the Audit Committee and have been approved by the Board of Directors in its meeting held on 25-11-2024.
3. The Standalone Financial Results of the Company-

S. No.	PARTICULARS	Quarter Ended		
		30.09.2024	31.03.2024	30.06.2024
		Un-audited	Audited	Un-audited
1	Total Income	1334.8	2701.87	414.07
2	Profit before Tax	-40.16	110.87	10.19
3	Profit after Tax	-34.42	-47.53	7.75
4	Total Comprehensive Income	-34.42	152.35	7.75

FOR BIHARIJI ISPAT UDYOG LIMITED
Sd/-
OM PRAKASH BHARDWAJ
Managing Director
DIN: 00060405

Place: Faridabad
Date: 26-11-2024

संविधान दिवस पर आईएमएस नोएडा में कार्यक्रम

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

नोएडा। सेक्टर 62 स्थित आईएमएस नोएडा में संविधान दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। संस्थान द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में बीए.एलएलबी, बीकॉम.एलएलबी, एलएलबी, एमबीए एवं एमसीए के छात्रों ने हिस्सा लिया। आईएमएस लॉ कॉलेज ने नेतृत्व में आज के कार्यक्रम में बतौर अतिथि उच्चतम न्यायालय के एडवोकेट ऑन रिकार्ड (एओआर) मोहम्मद शाहिद अनवर ने अपने विचार प्रकट किए। वहीं कार्यक्रम के दौरान आईएमएस नोएडा के महानिदेशक प्रोफेसर (डॉ.) विकास धवन के साथ संस्थान के शिक्षक एवं छात्रों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

कार्यक्रम की शुरूआत संविधान की उद्देशिका के पाठ से हुई, जिसे छात्रों और शिक्षकों ने मिलकर पढ़ा। इसके बाद आईएमएस नोएडा के महानिदेशक प्रोफेसर (डॉ.) विकास धवन ने अपने संबोधन में भारतीय संविधान के महत्व और इसके सार्वभौमिक मूल्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह दुनिया का सबसे बड़ा और व्यापक संविधान है, जो सभी नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता और न्याय प्रदान करता है। हम सभी को भारतीय संविधान के महत्व को समझना और इसके मूल्यों को अपने जीवन में उतारना आवश्यक है।

मुख्य वक्ता मोहम्मद शाहिद अनवर ने छात्रों को संबोधित करते हुए भारतीय संविधान की जटिलताओं और इसके महत्व पर चर्चा की। उन्होंने पंजाब राज्य और अन्य बनाम दविंदर सिंह और अन्य सिविल अपील संख्या 2317 का जिक्र करते हुए आरक्षण लाभ के लिए अनुसूचित जाति (एससी) के भीतर उप-वर्गीकरण की भी चर्चा की। यह मामला संविधान के अनुच्छेद 14,15 और 16 के ढांचे के भीतर औपचारिक समानता के सिद्धांतों को संतुलित करते के इर्द-गिर्द है। वहीं एओआर मोहम्मद शाहिद अनवर ने युवाओं को संविधान के प्रति जागरूक रहने और इसके संरक्षण में अपनी भूमिका निभाने की प्रेरणा दी।

वहीं आईएमएस लॉ कॉलेज के विभागाध्यक्ष डॉ. भाविष गुप्ता ने बताया के आज के कार्यक्रम के दौरान छात्रों के लिए पोस्टर मेकिंग, क्विज, गेस्ट लेक्चर एवं भाषण प्रतियोगिता रखी गयी। जिसमें संविधान और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े सवाल पूछे गए। संविधान दिवस आज के कार्यक्रम ने विद्यार्थियों, शिक्षकों और स्टाफ को भारतीय लोकतंत्र की नींव को और अधिक गहराई से समझने का अवसर प्रदान किया।

संविधान दिवस पर लोकतंत्र सेनानी संघ ने किया कांग्रेस के खिलाफ प्रदर्शन

नई दिल्ली। लोकतंत्र सेनानी संघ ने संविधान दिवस के अवसर पर दिल्ली के जंतर - मंतर पर कांग्रेस के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। इस अवसर पर लोकतंत्र सेनानी संघ के राष्ट्रीय संरक्षक डॉ. सत्यनारायण जटिया ने कहा कि 1975 में आपातकाल लगाकर कांग्रेस सरकार ने संविधान की हत्या कर दी। उन्होंने कहा कि आज वही कांग्रेस लोकतंत्र की दुहाई दे रही है।

लोकतंत्र सेनानी संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष कैलाश सोनी ने कहा कि कांग्रेस ने 1975 में संविधान को समाप्त कर अपनी सत्ता को बनाए रखने का काम किया। उन्होंने कहा कि न्यायापालिका के अधिकार समाप्त कर कांग्रेस ने तानाशाही की राजनीति को बढ़ावा दिया था। लोकतंत्र सेनानी कांग्रेस के खिलाफ संविधान के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए एक अभियान चलाएंगे। कैलाश सोनी ने केंद्र सरकार से मांग की है कि संविधान की हत्या करने वालो के खिलाफ श्वेत पत्र जारी कर आयोग का गठन किया जाए। उन्होंने कहा कि शाह आयोग की रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाए। आपातकाल के समय जेल में बंद रहे लोकतंत्र सेनानियों को भारत सरकार सम्मानित करे।

जेपी सेनानी संघ के राष्ट्रीय संयोजक औ पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्वनी चौबे ने कहा कि संविधान हमारे लिए रामायण और भगवत गीता के समान पवित्र है। उन्होंने कहा कि भारत के संविधान ने हमें स्वराज दिया है लेकिन कांग्रेस ने सिर्फ संविधान का गला घोटने का काम किया। संविधान दिवस के अवसर पर कार्यक्रम में 12 राज्यों के 700 लोकतंत्र सेनानी उपस्थित रहे। इस दौरान दिल्ली की 90 वर्षीय लोकतंत्र सेनानी सुमित्रा गुलाटी अपने साथ जेल में रही दो बेटियों को लेकर कार्यक्रम में शामिल हुईं।

हरीनगर पुलिस ने तीन को पकड़ा, स्कूटी, बाइक बरामद

कार की बैट्री, कैश, पानी का मीटर भी किया गया जब्त

संवाददाता

हरी नगर की पुलिस ने तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया है। जिनकी पहचान रंजीत शर्मा, आनंद और रंजीत सिंह के रूप में हुई है। इनसे दो मोबाइल, बटनदार चाकू, कार की बैटरियां, पानी का मीटर, चोरी की स्कूटी, मोटरसाइकिल और कैश बरामद किया गया। उनकी गिरफ्तारी से 11 मामलों का खुलासा करने का दावा पुलिस ने किया है। डीसीपी विचित्र वीर ने बताया कि हरीनगर पुलिस ने अलग-अलग जगह पर कार्रवाई करके इन्हें गिरफ्तार किया है। पहले मामले में पेट्रोलिंग के दौरान नांगल राय के लक्कड़ वाला पार्क के पास पीछा करके रंजीत शर्मा उर्फ चौधरी को पकड़ा। तलाशी में बटनदार चाकू, बैग बरामद किया। इसने हरी नगर इलाके से एक दुकान से लोहे की तिजोरी चोरी किया था। जो बैग बरामद किया उसमें से दो मोबाइल मिले। साथ ही घर के लॉक तोड़ने वाले औजार भी मिले। दूसरे मामले में पेट्रोलियम के दौरान आनंद उर्फ छोटू को पकड़ा। यह सुभाष नगर इलाके का रहने वाला है। पहले से पांच मामलों में शामिल रहा है। इसके पास से कार की बैटरी, पानी का मीटर, कैश बरामद किया गया। तीसरे मामले में टीम ने रणजीत सिंह को पकड़ा। उसके पास से चोरी की स्कूटी बरामद की गई

किडजी वशिष्ठ पार्क सागरपुर को प्रतिष्ठित पिनेकल अवार्ड से सम्मानित किया गया

● किडजी वशिष्ठ पार्क सागरपुर ने जीता प्रतिष्ठित पिनेकल अवार्ड फॉर बेस्ट पीपल्स चॉइस

● वशिष्ठ पार्क सागरपुर के किडजी प्रीस्कूल ने जीता प्रतिष्ठित पिनेकल अवार्ड

● किडजी वशिष्ठ पार्क सागरपुर को प्रतिष्ठित पिनेकल अवार्ड से सम्मानित किया गया

● किडजी वशिष्ठ पार्क सागरपुर ने जीता प्रतिष्ठित पिनेकल अवार्ड

● किडजी सागरपुर ने जीता प्रतिष्ठित पिनेकल अवार्ड

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

किडजी वशिष्ठ पार्क सागरपुर, सागरपुर, नई दिल्ली में एक प्रतिष्ठित प्रीस्कूल है जिसने ने घोषणा की है कि उसे प्रतिष्ठित पिनेकल अवार्ड फॉर बेस्ट पीपल्स चॉइस से सम्मानित किया गया है। यह प्रतिष्ठित मान्यता प्रीस्कूल की अपने छात्रों और अभिभावकों को असाधारण शिक्षा और सेवाएं प्रदान करने की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। किडजी वशिष्ठ पार्क सागरपुर, का शुभारंभ 22 जनवरी, 2024 को हुआ था, किडजी ९ी छीं१ल्ल नेटवर्क का हिस्सा है, जिसके भारत और नेपाल में 3000+ से अधिक केंद्र हैं। पीपल चॉइस श्रेणी में चार सेंटर को नामांकित किया गया था में जिसमे किडजी वशिष्ठ पार्क सागरपुर को विजेता सम्मान से सम्मानित किया गया। हम इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए रोमांचित और सम्मानित हैं, रितेश राय, किडजी सागरपुर के निदेशक ने कहा। यह मान्यता हमें असाधारण सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रेरित करते है और हमारे छात्रों, अभिभावकों और समुदाय के प्रति हमारी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी की याद दिलाती है। अंकिता राय, किडजी सागरपुर की प्रिंसिपल ने कहा, हम अपने अभिभावकों, छात्रों और कर्मचारी सदस्यों के प्यार, विश्वास और समर्थन के लिए अत्यधिक खुश और आभारी हैं। यह पुरस्कार उनके हम पर विश्वास का प्रमाण है, और हम अपने छात्रों के लिए सर्वश्रेष्ठ संभव शिक्षा और अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

पुलिस चला रही ड्रग्स फ्री वेस्ट दिल्ली का अभियान

● ड्रग की लत से युवाओं, स्टूडेंट्स, आम लोगों को बचाने

पुलिस को नुक्कड़ नाटक का सहारा, बता रही दुष्परिणाम

संवाददाता

ड्रग्स की लत युवाओं को स्कूल और कॉलेज में पढ़ने वाले बच्चों को, स्कूल ड्रॉप आउट को और दूसरे लोगों का भविष्य किस तरह से खराब कर रही है। बाद में लोग इसकी चपेट में इतनी बुरी तरह फंस जाते हैं, कि फिर उसी जरूरत को पूरी करने के लिए अपराध की दुनिया में शामिल हो जाते हैं। शुरूआत छोटी-मोटी चोरी, स्नेचिंग की वारदात से करते हैं, बाद में बड़े-बड़े मामले को अंजाम देने लगते हैं। इन युवाओं को ड्रग्स की लत से बचाने, उन्हें इसका दुष्परिणाम बताने के लिए पश्चिमी जिला पुलिस नुक्कड़ नाटक के जरिए जिला के अलग-अलग इलाकों में घूमकर उन्हें जागरूक कर रही है।

इसमें 1000 से ज्यादा लोगों को शामिल किया गया

डीसीपी वेस्ट विचित्र वीर ने बताया कि लगातार इस अभियान को चलाया जा रहा है। इसमें 1000 से ज्यादा पब्लिक के लोगों यहां तक की सीनियर सिटीजन को भी अवेयरनेस प्रोग्राम में शामिल किया गया है। यह नुक्कड़ नाटक कार्यक्रम पश्चिमी दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में चलाया जा रहा है। इसके जरिए पुलिस ह्लड्रग्स फ्री वेस्ट दिल्लीह्व बनाने के लिए लगातार कोशिश कर रही है। महिला पुलिस ऑफिसर की देखरेख में अभियान इस अभियान को अडिशनल डीसीपी सृष्टि पांडे की देखरेख में कम्युनिटी पुलिसिंग सेल की टीम कर रही है। जिसके जरिए लोगों को स्कूल, कॉलेज के बच्चों को, जो पढ़ाई छोड़ चुके हैं, उनको जागरूक किया जा रहा है। इसके लिए पुलिस ने बेहतरीन नुक्कड़ नाटक की टीम को अपने साथ मिलाया है। अस्मिता थिएटर ग्रुप के पार्टिसिपेंट इस जागरूकता अभियान को लगातार पश्चिमी जिला में कर रहे हैं। अब तक प्रमुख रूप से मायापुरी के संडे बाजार, हरि नगर की पीली कोठी झुग्गी बस्ती, जनकपुरी का सत्यवती पार्क, ख्याला की बड़ी मस्जिद का क्षेत्र, राजौरी गार्डन का वुडलैंड पार्क, विकासपुरी का गोविंद बिहारी लाल पार्क इत्यादि प्रमुख रूप से शामिल हैं।

चपेट में आने पर कैसे निकले बुरी लत से यह बता रहे नुक्कड़ नाटक के जरिए ड्रग्स की लत से बचने के साथ-साथ यह भी बताने की कोशिश की जा रही है कि यदि कोई उसकी चपेट में आ जाए तो उसे कैसे छुटकारा पाया जा सकता है। उससे कैसे बाहर निकाला जा सकता है। ड्रग्स की छोटी लत बाद में किस तरह सिर्फ उस युवक को ही नहीं बल्कि धीरे-धीरे पूरे परिवार को बबार्दी के रास्ते तक पहुंचा देता है यह भी नुक्कड़ नाटक के जरिए लोगों के जेहन में पहुंचने की कोशिश की जा रही है। जिससे कि युवाओं को और लोगों को लगे कि यह कितना खतरनाक बीमारी बनकर सामने आया है। जो युवा ड्रग्स की लत की चपेट में आकर क्रिमिनल बन जाते हैं, फिर वह किस तरीके से अपने ही समाज में चोरी, स्नैचिंग, लूट इत्यादि की वारदात को अंजाम देकर अपनों को ही शिकार बनाकर उनका भी सुख चैन छीनते हैं, यह भी बताने की कोशिश की जा रही है।

पश्चिम विहार और छावला फायरिंग के 2 शूटर के साथ पुलिस की मुठभेड़

बाहरी जिला पुलिस की ज्वाइंट टीम ने इन्हें दबोचा

संवाददाता

पश्चिम विहार रिंग रोड पर स्थित राज मंदिर सुपरमार्केट और द्वारका जिला के छावला स्थित एक वर्कशॉप पर कुछ ही घंटे के अंदर दोनों ही जगह पर ताबड़तोड़ कई राउंड फायरिंग करके सनसनी फैलाने के मामले में बाहरी जिला पुलिस को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। इस मामले में पुलिस ने दो शूटर को एनकाउंटर के दौरान धर दबोचा है। इसकी पुष्टि डीसीपी आउटर सचिन शर्मा ने की है। उन्होंने बताया कि जिला के एंटी एक्सटॉर्शन सेल और एंटी नारकोटिक्स स्क्वाड की ज्वाइंट टीम ने यह कार्रवाई करते हुए इन दोनों शूटर को दबोचा है। मुठभेड़ में एक बदमाश के पैर में गोली लगी है। गिरफ्तार बदमाशों की पहचान पवन और प्रवेश के रूप में हुई है। ये दोनो हरियाणा के बहादुरगढ़ के रहने वाले हैं। इनके पास से दो सोफिस्टिकेटेड पिस्टल, पांच जिंदा कारतूस और तीन खाली कारतूस भी बरामद किया गया है। साथ ही चोरी की एक मोटर साइकिल भी जब्त की गई है। पुलिस के अनुसार एसीपी नेकी राम लाम्बा की देखरेख में इंस्पेक्टर रितेश राज, इंस्पेक्टर रोहित, सब इंस्पेक्टर उदित अंकुर अभिलाष सहायक सब इंस्पेक्टर क्रिएशन राजेश हेड कांस्टेबल संदीप मनजीत कांस्टेबल हरकेश और संदीप की टीम ने मुंडका इलाके में इनको ट्रैप किया था। सरेंडर करने की बजाय ये पुलिस टीम पर गोली चलानी शुरू कर दी थी। जिसके कारण पुलिस ने जवाबी कार्रवाई में गोली चलाकर इनको पकड़ा।

गौरतलब है कि फायरिंग की वारदात 6 नवंबर को हुई थी। सबसे पहले फायरिंग पश्चिम विहार के राज मंदिर सुपर मार्केट के शॉप पर हुई थी। उस मामले में करोड़ों की रंगदारी भी मांगी गई थी। जबकि इस गैंग के बदमाशों ने दूसरी फायरिंग की वारदात छावला इलाके में स्थित एक वर्कशॉप पर की थी। उस मामले को इसलिए अंजाम दिया गया था, क्योंकि वर्कशॉप के ओनर को डराना था कि वह जिस गैंग के लोगों से बातचीत कर रहा है उससे दूरी बना सके।

जरूरत 10 लाख बुजुर्गों को, घोषणा सिर्फ 80,000 की: यूनाइटेड हिंदू फ्रंट का दिल्ली सरकार पर निशाना

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

यूनाइटेड हिंदू फ्रंट ने दिल्ली सरकार द्वारा 10 लाख बुजुर्गों को पेंशन देने के बजाय मात्र 80,000 बुजुर्गों के लिए पेंशन योजना शुरू करने की घोषणा को हास्यास्पद और अपर्याप्त करार दिया है। फ्रंट के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष और वरिष्ठ भाजपा नेता श्री जय भगवान गोयल ने इस निर्णय को दिल्ली के बुजुर्गों के साथ मजाक बताया। उन्होंने कहा, 60 वर्ष से अधिक आयु के सभी बुजुर्गों को पेंशन मिलना उनका अधिकार है। आठ साल के लंबे इंतजार के बाद केवल 80,000 लोगों के लिए पेंशन योजना शुरू करना उन बुजुर्गों के साथ अन्याय है, जिन्होंने इस मदद की आस लगाई थी। केजरीवाल सरकार का इस घोषणा पर अपनी पीठ थपथपाना शर्मनाक है।

श्री गोयल ने कहा कि दिल्ली सरकार की प्राथमिक उपलब्धि केवल भाजपा शासित राज्यों और मोदी सरकार की आलोचना करना रही है। उन्होंने केजरीवाल सरकार पर झूठे नेरेटिव गढ़ने का आरोप लगाते हुए कहा, भाजपा शासित राज्यों में पेंशन को लेकर केजरीवाल के दावे झूठे हैं। हरियाणा में मासिक पेंशन 2750 है, जबकि अन्य भाजपा शासित राज्यों में भी पेंशन 500 या 1000 के आंकड़े से कहीं अधिक है। उन्होंने इस घोषणा को चुनावी राजनीति का हिस्सा बताते हुए कहा, विधानसभा चुनावों को देखते हुए दिल्ली सरकार ने बुजुर्गों के लिए यह घोषणा की है, लेकिन मात्र 80,000 लोगों के लिए पेंशन शुरू करना ऊंट के मुंह में जीरा जैसा है। यह योजना एक दिखावा है और बुजुर्गों की वास्तविक समस्याओं का समाधान नहीं है। यूनाइटेड हिंदू फ्रंट ने दिल्ली सरकार से सभी पात्र बुजुर्गों के लिए पेंशन योजना लागू करने की मांग की है, ताकि उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर मिल सके

विधानसभा सत्र में जनहित और भ्रष्टाचार के मुद्दे पर विपक्ष करेगा सरकार का घेराव

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा के 29 नवंबर से आहूत सत्र में विपक्ष जनहित और विभिन्न क्षेत्रों में भ्रष्टाचार के मुद्दे पर सरकार का घेराव करेगा।उन पर सरकार से जवाब मांगेगा। इसके अलावा सत्र में प्रश्नकाल रखने की मांग भी की जाएगी। यह निर्णय आज दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता विजेंद्र गुप्ता की अध्यक्षता में भाजपा विधायक दल की बैठक में लिया गया। इस बैठक में भाजपा विधायक मोहन सिंह बिष्ट, ओम प्रकाश शर्मा, अभय वर्मा, अजय महावर, अनिल बाजपेयी और जितेंद्र महाजन उपस्थित थे। नेता प्रतिपक्ष के विधानसभा स्थित कार्यालय में आयोजित विधायक दल की बैठक में विधायक ओम प्रकाश शर्मा ने रोहिंग्याओं को दिल्ली सरकार द्वारा वोटर कार्ड जारी करने के मुद्दे पर सरकार का विरोध करने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसको सभी विधायकों ने सर्वसम्मति के साथ इसे पारित किया। विपक्षी विधायकों ने निर्णय लिया कि रोहिंग्या समेत अन्य ज्वलंत मुद्दों के आधार पर सत्र में आक्रामक रवैया अपनाते हुए आम आदमी पार्टी (आप) से उसका जवाब मांगा जायेगा।

विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि कैग की 12 रिपोर्ट्स को सदन में प्रस्तुत करने के लिए सरकार पर दबाव बनाया जाएगा ताकि सरकार के किए खर्चे के बारे में जनता को जानकारी मिल सके। इसके अलावा दिल्ली में खराब वायु गुणवत्ता से उपजे भारी प्रदूषण, पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के शीश महल के कंस्ट्रक्शन और साज सज्जा पर जनता की कमाई के करोड़ों रुपये बर्बाद करने, छठे दिल्ली वित्त आयोग का गठन न करने, अन्त्योदय अन्न योजना के तहत दिल्ली के 90 हजार गरीबों को राशन कार्ड जारी न करने, दिल्ली के 29 राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालयों को बंद करने, अस्पतालों में आईसीयू ब्लॉक्स के अधूरे पड़े निर्माण कार्यों और दरियापुर में एसओएसई स्कूल की लावारिस पड़ी बिल्डिंगों पर करोड़ों रुपये बर्बाद करने जैसे अनेक मुद्दों पर सरकार से जवाब मांगा जाएगा ।

इसके अलावा यमुना के प्रदूषण, सरकारी स्कूलों में 9वीं और 11वीं क्लास में फेल किये गये डेढ़ लाख छात्रों, दिल्ली जल बोर्ड पर 73 हजार करोड़ रुपये के कर्ज, 24 अस्पतालों के निर्माण में वित्तीय अनियमितताओं, दिल्ली सरकार के डीएसईयू जैसे शैक्षणिक संस्थानों में भारी भ्रष्टाचार, दिल्ली विश्वविद्यालय के 12 कॉलेजों को फंड न देने, टूटी सड़कों के कारण आए दिन हो रहे सड़क हादसे, लचर हो चुकी सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था और ओवरफ्लो हो रहे सीवरों आदि पर भी सरकार को कटघरे में खड़ा किया जाएगा। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि यह सरकार हर मोर्चे पर फेल हो चुकी है।

हेमंत सोरेन ने केजरीवाल से मुलाकात कर शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने का दिया न्यौता

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने अपनी धर्मपत्नी कल्पना सोरेन के साथ मंगलवार को आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल से उनके निवास पर आकर मुलाकात की। दोनों नेताओं के बीच हाल में संपन्न हुए झारखंड विधानसभा चुनाव और देश की राजनीति को लेकर लंबी चर्चा हुई। इस दौरान हेमंत सोरेन ने 28 नवंबर को होने वाले नई सरकार के शपथ ग्रहण कार्यक्रम में अरविंद केजरीवाल को सपत्नी शामिल होने का न्यौता दिया। अरविंद केजरीवाल ने उनका निमंत्रण स्वीकार करते हुए कहा कि जिस तरह से हेमंत जी को जेल में डाला गया, फिर वो जेल से वापस आए, इतना संघर्ष किया और चुनाव लड़ा, यह हम सब के लिए प्रेरणादायी है। गुरुवार को उनके शपथ ग्रहण में हम लोग जाएंगे। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हेमंत सोरेन और कल्पना सोरेन को एक शानदार चुनाव लड़ने और जीतने के लिए बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं। जिस तरह से हेमंत सोरेन जी को जेल में डाला गया, जेल से वह फिर वापस आए और जेल से वापस आने के बाद इतना संघर्ष किया और चुनाव लड़ा। यह हम सब के लिए बड़ा ही प्रेरणादायी है। हेमंत जी और कल्पना जी मंगलवार को मेरे निवास स्थान पर आए। इसके लिए मैं उन्हें तहेदिल से शुक्रिया यदा करता हूं। उनका मेरे निवास स्थान पर बहुत-बहुत स्वागत है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि गुरुवार को हेमंत सोरेन का शपथ ग्रहण है। शपथ ग्रहण में हम सब लोग जाएंगे। मैं भगवान से प्रार्थना करूंगा कि अगले पांच साल उनके बहुत शुभ हों। जैसे वह झारखंड के विकास के लिए खूब काम करते आए हैं, वैसे ही अगले पांच साल विकास की यात्रा जारी रहे। इस दौरान हेमंत सोरेन ने कहा कि मैं अरविंद केजरीवाल जी के निवास स्थान पर उनसे मिलने आया हूं। सभी को पता है कि झारखंड में विधानसभा चुनाव के बाद अब इंडिया गठबंधन की नई सरकार का गठन होना है। शपथ ग्रहण आगामी 28 नवंबर को होगा। इसी कार्यक्रम को लेकर मैं दिल्ली के दौरे में हूं। इंडिया गठबंधन के साथियों को हम लोगों ने शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए निमंत्रण दिया है।

आप ने मनाया स्थापना दिवस, पार्टी नेताओं ने संघर्ष के दिनों को याद किया

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) ने मंगलवार को अपना स्थापना दिवस मनाया।पार्टी मुख्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में आप के नेता शरीक हुए। इस अवसर पर आप नेत्री एवं दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि इस देश के नेताओं ने हमें उस समय चुनौती दी थी लेकिन उन्हें क्या पता था कि अरविंद केजरीवाल इस देश की राजनीति में चमत्कार लेकर आयेंगे। अरविंद केजरीवाल वह व्यक्ति हैं, जिन्होंने न सिर्फ इस देश में बदलाव का सपना देखा बल्कि उस सपने को साकार करके भी दिखाया। आतिशी ने कहा कि जब 12 साल पहले संविधान दिवस पर आम आदमी पार्टी की शुरूआत हुई थी, तब लोग हम पर हंसते थे और कहते थे कि तुम लोग राजनीति करोगे। तुम्हारे पास न मनी पॉवर है, न मसल पॉवर है, न तुम जात-पात-धर्म की बात करते हो, इस देश में ऐसे राजनीति नहीं होती है। मुझे आज भी याद है जब दिल्ली के चुनाव लड़ने का समय आया और अरविंद केजरीवाल नई दिल्ली से तीन बार की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के सामने चुनाव लड़ने गए तो लोगों ने कहा कि अगर अरविंद केजरीवाल किसी और सीट से लड़े होते तो शायद आम आदमी पार्टी की एक सीट आ जाती लेकिन अब आम आदमी पार्टी की एक भी सीट नहीं आएगी। यह 2013 के दिन थे। उन्होंने आगे कहा कि मुझे इस बात पर गर्व है कि इस पार्टी के एक-एक कार्यकर्ता ने अपने खून पसीने से, अपनी मेहनत से इस पार्टी को खड़ा किया और न सिर्फ.2013 में हमारी सरकार बनी बल्कि 49 दिन की सरकार को देशभर में पहचाना गया। इन्हीं कार्यकताओं के दम पर 2015 में जब हमने चुनाव लड़ा तो आम आदमी की ताकत दिल्ली के लोगों ने और हमारे कार्यकताओं ने देशभर में दिखाया और 70 में से 67 सीटों के साथ आम आदमी पार्टी की सरकार बनाई, अरविंद केजरीवाल को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाया। स्थापना दिवस पर आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आम आदमी पार्टी को बने हुए अब 12 साल हो गए। आज पार्टी का 13वां जन्मदिन है। ऐसा लगता है, जैसे कल ही बनी थी। आज ही भारत का संविधान दिवस भी है।

ग्रेटर नोएडा : सोफा बनाने की फैक्ट्री में लगी आग, तीन लोगों की जलकर मौत

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा के बीटा 2 इलाके में एक सोफा बनाने की फैक्ट्री में भीषण आग लग गई। मौके पर पहुंची दमकल की गाड़ियों ने आग पर काबू पाया और आग बुझाने के बाद अंदर सर्च ऑपरेशन चलाया गया। इस दौरान तीन व्यक्ति अंदर गंभीर हालत में मिले। जिन्हें अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। बताया गया है कि तीनों इसी फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूर थे और आग लगने के दौरान यहां मौजूद थे। पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया है कि 26 नवंबर को थाना बीटा 2 क्षेत्र के अंतर्गत साइट फॉर फैक्ट्री नंबर 4 जी में आग लग गई। यहां सोफा बनाने का काम होता है। आग लगने की सूचना पर तत्काल स्थानीय पुलिस व फायर स्टेशन की गाड़िया मौके पर पहुंची और फायर यूनिट द्वारा आग पर काबू पा लिया गया है। जिसके बाद स्थानीय पुलिस व फायर ब्रिगेड द्वारा सर्च ऑपरेशन चलाया गया। जिन तीन व्यक्तियों की मृत्यु हुई है, उनके शव को पोस्टमार्टम के लिये भेजा गया है। पुलिस ने मृतकों की पहचान कर ली है और उनकी जानकारी साझा कर दी है। इनमें गुलफाम (23), थाना राया जिला मथुरा, मजहर आलम (29), थाना बारसोई जिला कटिहार बिहार और दिलशाद (24) निवासी अरहरिया बिहार की पहचान हुई है। एडीसीपी अशोक कुमार ने बताया कि आग लगने की सूचना पर पुलिस बल और फायर ब्रिगेड के लोग मौके पर पहुंचे। उन्होंने आग पर काबू पाया और सर्च ऑपरेशन के दौरान अंदर तीन व्यक्ति मृत अवस्था में मिले। उन्होंने बताया कि यह तीनों इसी फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूर हैं और आग लगने के दौरान यह अंदर ही मौजूद थे। उनके परिजनों को सूचना दे दी गई है।

संविधान और लोकतंत्र बचाने की हमारी ये लड़ाई जारी रहेगी: केजरीवाल

नई दिल्ली। दिल्ली में आम आदमी पार्टी (आप) के स्थापना दिवस के अवसर पर पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि 26 नवंबर 2012 को आप एक ऐसी पार्टी की रूप में सामने आई, जो आम जनता के लिए कार्य करती है। उन्होंने कहा कि आप की सबसे बड़ी ताकत दिल्ली में सच्चाई और ईमानदारी के साथ जनता का प्यार मिलना है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि 2012 में आज का ये दिन इतिहास का वो पल है, जब देश के आम आदमी ने अपनी ताकत पहचानी और ह्लआम आदमी पार्टीह्व की स्थापना की। उन्होंने कहा कि अब तक का ये सफर संघर्ष, बलिदान और जीत की कहानियों से भरा रहा है।

दिल्ली में विधानसभा चुनाव को लेकर केजरीवाल ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट लिखकर कहा कि पिछले एक साल में तो हमें मिटाने की लाख कोशिशें हुईं लेकिन हमारी ईमानदारी, जनता के प्यार और कार्यकताओं के हौसले ने हमें और मजबूत बना दिया। उन्होंने कहा कि अन्याय और तानाशाही के खिलाफ आप पहले से ज्यादा मजबूती से खड़ी है। संविधान और लोकतंत्र बचाने के लिए आम आदमी पार्टी की सरकार लगातार काम करेगी ।

जाना था हिल स्टेशन पर स्नो फॉल देखने पहुंचे तिहाड़ जेल

● गन प्वाइंट पर शॉप ओनर से किया लूट, अअळर ने दबोचा

संवाददाता

बिंदापुर थाना इलाके में गन पॉइंट पर हुई लूट के मामले का खुलासा द्वारका जिला के एंटी ऑटो थेफ्ट स्क्वाड की पुलिस टीम ने कर दिया है। पुलिस ने इस मामले में शातिर लुटेरे मोहम्मद साजिद उर्फ दादा, मोहम्मद शोएब उर्फ चित्ती और मोहम्मद रशीद को गिरफ्तार किया है। इनमें से दो आरोपी पहले भी अलग-अलग मामलों में शामिल रहे हैं। जिसमें फायरिंग और हत्या के प्रयास की वारदात के मामले प्रमुख रूप से हैं।

मोटर साइकिल, हथियार और कैश किया गया बरामद

डीसीपी द्वारका अंकित सिंह के अनुसार इन बदमाशों के तीन और साथियों को भी इनकी निशानदेही पर बाद में गिरफ्तार किया गया। उनमें मोहम्मद अयान, आफताब और अल्ताभ शामिल हैं। इनके पास से वारदात में इस्तेमाल मोटर साइकिल, हथियार को जब्त किया गया है। लूटी गई रकम में से 35 हजार से ज्यादा का अमाउंट बरामद किया गया है।

12 नवंबर को लूट की हुई थी बिंदापुर में वारदात

पुलिस के अनुसार 12 नवंबर को मुकेश नाम के एक शख्स से हथियार की नोक पर 50 हजार लूट की वारदात को अंजाम दिया गया था। पीड़ित शख्स महावीर एनक्लेव पार्ट 2 में ग्रॉसरी शॉप चलाता है। देर शाम वह स्कूटी से अपने घर जा रहा था। जैसे ही ए ब्लॉक बिंदापुर पहुंचा तीन हथियार बंद बदमाश उसके पास पहुंचे और उससे लूट की वारदात को अंजाम दिया। उस मामले में एफआईआर दर्ज करके छानबीन शुरू की गई।

एएटीएस टीम ने सीसीटीवी फुटेज से जांच शुरू की

डीसीपी ने मामले को सुलझाने के लिए एएटीएस की टीम को जिम्मेदारी सौंपी। इंस्पेक्टर कमलेश कुमार की देखरेख में सब इंस्पेक्टर धनंजय, सहायक सब इंस्पेक्टर विजय सिंह, हेड कांस्टेबल जयराम, मनोज, राजेश, इंदर, संदीप, राजूराम, योगराज, नीरज, राजेश कुमार और कांस्टेबल राजेश की टीम ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से पता लगाना शुरू किया। पुलिस टीम कई दिनों की मशक्कत के बाद बदमाशों के बारे में पता लगाने में कामयाब हुई।

हिल स्टेशन पर स्नोफॉल का आनंद लेने बनाया प्लान

हेड कांस्टेबल मनोज को एक स्पेसिफिक इनफार्मेशन मिली जिसके आधार पर पुलिस टीम ने ट्रैप लगाकर साजिद, शोएब, रशीद को हथियार के साथ दबोचा। उनके पास से 35 हजार से ज्यादा की रकम बरामद की गई, जो इन्होंने पीड़ित शॉप ओनर से लूटा था। पूछताछ में पता चला कि यह लोग हाल में ही जेल से बेल पर छूटकर बाहर आए थे। इन लोगों ने हिल स्टेशन पर स्नोफॉल का आनंद लेने के लिए प्लान बनाया था। उसके लिए पैसे की जरूरत थी, फिर उन्होंने प्वाइंट आउट करके ग्रॉसरी शॉप ओनर से लूट का प्लान किया और 12 नवंबर को वारदात को अंजाम दिया।

उत्तम नगर इलाके में भी की थी लूटपाट की कोशिश

इन्होंने यह भी बताया कि उस लूट की वारदात से पहले इन्होंने 8 अक्टूबर को उत्तम नगर इलाके में भी लूट की कोशिश की थी। बाद में पुलिस ने गिरफ्तार किए गए तीन बदमाशों की पहचान के आधार पर इनके तीन और साथियों को पकड़ा। जिनमें से एक मोहम्मद अयान जिसने लूट के लिए मोटरसाइकिल उपलब्ध कराया था, उसके बदले 6000 रुपए लिए थे। पांचवा आरोपी आफताब को भी पुलिस ने पकड़ा जिसने इन्हें हथियार उपलब्ध कराया था। छठा आरोपी अल्ताफ भी इस मामले में शामिल है।

संक्षिप्त खबरें

पति-पत्नी की मृत्यु एक साथ

बरियारपुर (मुंगेर)। बरियारपुर प्रखंड के पडिया पंचायत के वार्ड संख्या एक मैं मैं पति-पत्नी की मृत्यु एक साथ होने का समाचार प्राप्त हुआ हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार 36 वर्षीया निमीखा देवीके मृत्यु दोपहर दो बजे दिन के बाद पति अवधेश प्रसाद यादव को दिल का दौरा पड़ने से ईलाज के लिये चिकित्सको के पास लाया गया। जहां चिकित्सकों ने अवधेश प्रसाद यादव को मृत घोषित कर दिया। मामला उस वक्त उजागर हुआ जब पत्नी निमीखा देवी सुगर रोग से ग्रसित थी ओर पति 67 अवधेश प्रसाद यादव दिल के धड़कन रोग से पिडित दोनों ईलाज रत रहते थे दोनों लंम्बी अबधी से ईलाज रत रहा करते थे।निमिखा देवी का मायके गौडै चंण्डे ला प्रखंड अमरपुर जिला बांका के हुदय नारायण यादव के पुत्री थी।वही अबधेश प्रसाद यादव जगदीश यादव के पुत्र थे।

बिन्दादियारा हरिणमार पंचायत के पैक्स चुनाव स्थगित

बरियारपुर प्रखंड मे छः पैक्स चुनाव होनी थी जिनमे बिन्दादियारा हरिण मार पंचायत के पैक्स चुनाव स्थगित कर दिया गया है। पैक्स अध्यक्ष पद के लिए प्रयाप्त सदस्यों द्वारा कौरम नही पुरा होने के कारण पैक्स चुनाव स्थगित किया जाता है इस की सूचना दिये गए हैं।इसकी जानकारी प्रखंड पैक्स निर्वाचन पदाधिकारी सह प्रखंड बिकास पदाधिकारी स्वेता कुमारी ने दिया है।उन्होंने कहा बिन्दादियारा हरिणमार पंचायत में सदस्यों द्वारा कौरम नही पुरा होने के कारण चुनाव स्थगित किया जाता है।वही बिन्दादियारा कल्याणटोला, बरियारपुर उत्तरी,बरियारपुर दक्षिणी, करहरिया पुर्वी, करहरिया दक्षिणी पंचायत मे पैक्स चुनाव अपने निर्धारित तिथि दिनांक 3 दिसंम्बर को अपने निर्धारित कार्यक्रम के तहत मत पैटियो में डाली जायेगी।

चाचा और सगे भाई ने एक युवक के साथ कि मारपीट

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र के बूढ़नेर गांव में जमीन के बंटवारा की मांग करने पर सोमवार की रात्रि ने एक युवक के साथ उसके चाचा और सगे भाई ने मारपीट कर टांगी से वार कर गम्भीर रूप से किया घायल। जिसके बाद घायल किसी तरह जान बचाकर रजला पहुंचा और डायल 112 को सूचना दिया। सूचना मिलने के बाद पुलिस रजला गांव के पास पहुंचकर घायल को रजला से उठाकर रेफरल अस्पताल झाझा में भर्ती करवाया। जहाँ घायल का इलाज किया गया। घायल की पहचान मुकेश रजक के रूप में हुई है।

ई.अलीगंज में 10 पैक्सों में मतदान कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच शांतिपूर्ण संपन्न, 48.8 प्रतिशत की हुई वोटिंग

सुबह 7 से 3 अपराह्न तक मतदाताओं की लगी रही लम्बी कतार

● जिलाधिकारी ने आढ़ा मतदान केन्द्र का लिया जायजा

प्रातः किरण, संवाददाता

जमुई/ ई०अलीगंजः- प्रखंड में 26 नवम्बर को प्रथम चरण में मंगलवार को सुबह प्रखंड के 10 पैक्सों चुनाव कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच शुरू हुआ। जिसको लेकर सुबह 7:00 से 3:00 अपराह्न तक मतदाताओं की लम्बी कतार देखने को मिली खास कर महिलाओं ने पैक्स चुनाव में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। वहीं मतदान शांतिपूर्ण निष्पक्ष कराने को लेकर जिलाधिकारी श्रीमती अभिलाषा शर्मा एवं एसपी चन्द्र प्रकाश ने कई बूथों का जायजा भी लिया। वहीं प्रखंड निवार्ची पदाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी ने जानकारी देते हुए बताया की प्रखंड के 23 बूथों पर मतदान की प्रकिया कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच चल रही है। 10 पैक्सों में कुल 12,689 मतदाता है, वहीं प्रखंड निवार्ची पदाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी अभिषेक भारती ने जानकारी देते हुए बताया की अबगिला चौरासा पंचायत में पैक्स अध्यक्ष पद से निर्विरोध निर्वाचन के बाद शेष 10 पंचायतों के प्रथम चरण में पैक्स चुनाव जिला प्रशासन के निदेर्शानुसार कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच शांतिपूर्ण मतदान हो रही है।, वहीं उन्होंने बताया की

मतदान केंद्र पर सुरक्षा की कड़ी व्यवस्था होगी।. दंडाधिकारी के साथ पुलिस बल की तैनाती है। मतदाताओं को किसी तरह की दिक्कत न हो इस बात का पूरा ख्याल रखा गया. वहीं उन्होंने बताया की प्रखंड में लगभग 48.8 प्रीतिशत की मतदान हुई है, मतदान की समय समाप्ति के बाद प्रखंड मुख्यालय में कड़ी सुरक्षा के बीच वोटों की गिनती होगी और जीते हुए प्रत्याशी को सर्टिफिकेट दिया जाएगा।

आमने सामने की टक्कर में कुल 3 लोग हुए घायल

जमुई [झाझा] मंगलवार की दोपहर दो बजे थानाक्षेत्र के महापुर मोड़ के पास बाइक की आमने सामने में भीषण टक्कर हो गया जिसमें दोनो बाइक पर सवार कुल तीन घटना में घायल हो गया। घायल दशरथ यादव ने बताता की अपने गांव महापुर से निकलकर चांय गांव जा रहा था कि तभी मोड़ के पास सामने से तेज गति से आ रहे बाइक ने मेरे बाइक में टक्कर मार दिया वही दूसरी तरफ से घायल तनवीर ने बताया कि सामने से आ रहे बाइक चालक ने मेरे बाइक में टक्कर मारा है। घटना देखकर स्थानीय लोगों ने हो हल्ला किया जिसके बाद दोनो घायलों के परिजन भी मौके स्थल पर पहुंचकर सभी घायलों को इलाज के लिए शहर के एक निजी अस्पताल में भर्ती करवाया। घायल में एक महापुर गांव के रहने वाले दशरथ यादव तथा अन्य दो घायल में तुम्बापहाड़ गांव के रहने वाले तनवीर अंसारी और उसके रिश्ते में लगने वाले दादा अनवर अंसारी के रूप में हुई है। सभी घायलों का निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है। घटना में अनवर अंसारी की स्थिति नाजुक बनी हुई है।

विद्यालयों में नेतागीरी करने वाले शिक्षक होंगे जिलाबदर

शिक्षकों पर कार्रवाई के लिए हेड मास्टर को पावर

प्रातः किरण, संवाददाता

गिद्धौर। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को क्या पढ़ाया और आगे क्या पढ़ाएंगे। अब इसे हर दिन डायरी में दर्ज करना होगा। सरकारी स्कूलों में यह नई व्यवस्था शुरू की गई है। अपर मुख्य सचिव ने निर्देश दिया है कि अगर हेडमास्टर अनुशंसा करके भेजते हैं तो अधिकारी उस पर कार्रवाई करेंगे।

यही नहीं,अगर शिक्षक शैक्षणिक कार्य में रुचि नहीं लेते हैं या स्कूल में रहकर नेतागिरी करते हैं तो ऐसे मामले में भी जिलाबदर भी हो सकते हैं।अपर सचिव ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक कर सभी जिले के अधिकारियों को इसको लेकर निर्देश दिया है। अपर मुख्य सचिव डॉक्टर एस सिद्धार्थ ने इसको लेकर निर्देश जारी किया है। इसके साथ ही सरकारी स्कूलों में नई व्यवस्था लागू करने के साथ कई बदलाव भी किए गए हैं। शिक्षकों पर कार्रवाई करने के लिए अब हेड मास्टरों को भी शक्ति दे दी गई है। हेडमास्टर की अनुशंसा पर अब शिक्षकों का पंचायत से लेकर प्रखंड तक बदल सकता है। यह व्यवस्था बीपीएससी,सक्षमता और नियमित शिक्षकों पर लागू होगी। नियोजित शिक्षक अभी भी इससे बाहर होंगे। अपर मुख्य सचिव ने निर्देश दिया है कि सभी शिक्षकों को अलग से डायरी मिलेगी। इसमें शिक्षक प्रतिदिन अपनी ली हुई कक्षाओं का विवरण देंगे। इसमें उन्हें देना होगा कि आज किस कक्षा में कौन सा विषय और कौन सा पाठ पढ़ाया। इसके लिए हर दिन छुट्टी से पहले उन्हें डायरी में यह भी दर्ज करना होगा कि अगले दिन वे बच्चों को क्या पढ़ाएंगे। हेडमास्टर हर दिन इस डायरी को सत्यापित करेंगे। पहले स्तर पर बीईओ और दूसरे स्तर पर डीपीओ इसकी मॉनिटरिंग करेंगे।

परेशानी : मजदूरों के पलायन व खेतों में नमी बड़ा कारण,किसानों के पास मशीन ही एकमात्र विकल्प

समय पर धान की कटनी नहीं होने से फसल पर बुरा असर, किसान चिंचित

प्रातः किरण संवाददाता

गिद्धौर। मजदूरों की कमी तथा खेतों में अत्यधिक नमी के वजह से प्रखंड के किसानों की धान की कटनी प्रभावित हो रही है। फलतः प्रखंड के किसानों को रवि फसलों की गेहूं बुवाई समय से नहीं हो पा रही है। कृषि कार्यालय के अनुसार इस रवि सीजन में सैकडो.हेक्टेयर खेतों में रबी फसल की बुवाई करने का लक्ष्य निर्धारित है। जिसमें अब तक प्रखंड क्षेत्र में तिलहनी फसल 35 फीसदी जबकि दलहनी फसल 40 फीसदी अच्छादित किया जा चुका है। वहीं मजदूर की कमी के कारण ससमय धान की कटनी नहीं होने के कारण अभी मात्र 30 से 40 फीसदी धान की कटनी संभव हो पाई है। फलस्वरुप गेहूं की बुवाई संभव नहीं हो पा रही है। बता दें कि प्रखंड क्षेत्र में मजदूरों की कोई कमी नहीं है। लेकिन क्षेत्र में कोई नियमित काम नहीं होने के कारण क्षेत्र के मजदूर दूसरे प्रदेश के ईट भट्टों पर मजदूरी करने के लिए पलायन कर जाते हैं। जिस कारण धान कटनी और गेहूं कटनी के समय किसानों को मजदूरों की समस्या से रूबरू होना पड़ता है। हालांकि धान रोपनी के समय ईट भट्ट बंद हो जाने के बाद क्षेत्र में मजदूरों की कोई कमी नहीं होती है। मजदूरों की कमी के कारण खेतों में तैयार फसलों को घर लाने के लिए किसान के पास मशीन ही एकमात्र विकल्प रह जाता है।हालांकि मशीन से फसल कटाई के बाद जानवरों के लिए चारा की कमी की समस्या के साथ-साथ फसल के अवशेष को जलने से खेतों की उर्वरा शक्ति की हानि भी होती है।

अपार समाहर्ता ने बरियारपुर प्रखंड के रतनपुर ग्राम पंचायत में अगहनी धान के फसल कटनी प्रयोग का निरीक्षण किया

प्रातः किरण संवाददाता

मुंगेर। समोवार को अपर समाहर्ता मुंगेर मनोज कुमार ने बरियारपुर प्रखंड के ऋषि कुंड के समीप स्थित रतनपुर ग्राम पंचायत के खड़ग सरही गांव में अगहनी धान के फसल कटनी प्रयोग का निरीक्षण किया। अर्थ एवं सांख्यिकी निदेशालय, योजना एवं विकास विभाग, बिहार द्वारा बिहार राज्य फसल सहायता योजना अंतर्गत कृषि वर्ष 2024-25 के अधिसूचित एवं बीमित फसलों का फसल कटनी प्रयोग संपादित करवाया जा रहा है। जिला सांख्यिकी कार्यालय, मुंगेर द्वारा रतनपुर पंचायत में अगहनी धान के कटनी प्रयोग के तहत प्राथमिक कार्यकर्ता राजीव कुमार, किसान सलाहकार को यह प्रयोग आवंटित किया गया था, जिन्होंने इस फसल कटनी प्रयोग का संपादन अपर समाहर्ता सहित अन्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में किया और ऐप के माध्यम से इसका डाटा अपलोड किया। अपर समाहर्ता ने फसल कटनी प्रयोग के पूरी प्रक्रिया का बारीकी से निरीक्षण किया और प्रत्येक चरण के बारे में प्रयोगकर्ता एवं जिला सांख्यिकी पदाधिकारी से विस्तार से जानकारी प्राप्त की। उन्होंने धान में नमी की मात्रा एवं इसके सुखवन प्रयोग के संपादन के संबंध में भी जानकारी ली। अगहनी धान के अलावा भदई मक्का और गन्ना, रब्बी गेहूं और मकई अर्थात कुल पांच फसलों का पंचायत स्तरीय फसल कटनी आयोजित किया जाता है, जिसके तहत प्रत्येक पंचायत में 5 फसल कटनी प्रयोग संपादित किया जाता है। शेष फसलों का अंचल वार फसल कटनी प्रयोग आवंटित किया जाता है। फसल कटनी प्रयोग के विधिवत संपादन एवं शुद्ध-शुद्ध उत्पादकता के आंकलन के लिए फसल कटनी प्रयोगों की विभिन्न प्रक्रियाओं का निरीक्षण जिला स्तरीय, अनुमंडल स्तरीय एवं प्रखंड स्तरीय पदाधिकारियों द्वारा किया जाता है।फसल कटनी प्रयोग के लिए रतनपुर पंचायत के खड़ग सरही ग्राम के बटाईदार कारें लाल मंडल के खेत का चयन किया गया था, जो बटाई पर खेती करते हैं। फसल कटनी प्रयोग के दौरान रैंडम तालिका के आधार पर खेत में 10 मीटर लंबाई एवं 5 मीटर चौड़ाई के आयताकार खंड को चिन्हित कर इसके अंदर पड़ने वाले अगहनी धान फसल की कटनी कराई गई। अपर समाहर्ता ने स्वयं अपने हाथों में हंसुआ पकड़कर फसल काटना प्रारंभ किया। जिला सांख्यिकी पदाधिकारी एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी ने भी हंसुआ से फसल को काटा और तत्पश्चात मजदूरों द्वारा चिन्हित क्षेत्र के अंदर स्थित फसल की कटनी की गई। अपर समाहर्ता ने इस अवसर पर कहा कि सभी पदाधिकारी को फसल कटनी प्रयोग का निरीक्षण अवश्य करना चाहिए। इससे उन्हें ग्रामीण जीवन से जुड़ने का भी मौका मिलता है। कटनी प्रयोग का जीपीएस फोटो एवं डाटा क्रॉप कटिंग एक्सपेरिमेंट ऐप पर अपलोड किया गया। फसल कटनी के बाद पिटनी एवं दौनी का कार्य किया गया, जिससे प्राप्त धान के दाने की तौल की गई। 50 वर्ग मीटर क्षेत्र में कटनी किए गए धान के दाने का वजन इलेक्ट्रॉनिक तराजू पर 16.360 किलोग्राम मापा गया। धान के हरे दाने को अर्थ एवं सांख्यिकी निदेशालय से प्राप्त विशेष बोरे में सीलबंद किया गया और इसे 15 दिनों तक धूप में सुखाकर सुखवन प्रयोग किया जाएगा और सुखे दाने का वजन दर्ज किया जाएगा। प्राप्त उपज के आधार पर प्रति हेक्टेयर धान की उत्पादकता 32.720 क्विंटल आंकी गई, जिसे सामान्य उत्पादकता माना जा सकता है। किसान ने बताया कि इस पंचायत में धान की खेती कम ही होती है, अरहर की खेती ज्यादा होती है। अपर समाहर्ता द्वारा अगहनी धान फसल कटनी प्रयोग के निरीक्षण के दौरान जिला सांख्यिकी पदाधिकारी आनंद प्रकाश, प्रखंड विकास पदाधिकारी श्रीमती श्वेता कुमारी, अंचल अधिकारी कमल किशोर, प्रखंड सांख्यिकी पदाधिकारी, बरियारपुर जितेंद्र कुमार, प्रखंड सांख्यिकी पदाधिकारी जमालपुर श्रीराम प्रवेश, स्थानीय पैक्स अध्यक्ष सुनील कुमार राय, प्रभारी राजस्व पदाधिकारी श्रीहरि विक्रम, कृषि समन्वयक राणा प्रताप सिंह, भामिनी भूषण प्रसाद सिंह, किसान सलाहकार राजीव कुमार, राजेश कुमार, रंजन कुमार ओम, पुटुक लाल पासवान एवं पंचायत के स्थानीय किसान रामशंकर राय, संजय चौधरी, राजू मंडल भी उपस्थित थे।

नशा मुक्ति दिवस के अवसर पर जन जागरूकता कार्यक्रम का किया आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

मुंगेर । मद्य निषेध एवं उत्पाद विभाग के तत्वावधान में मंगलवार को स्थानीय प्रेक्षा गृह में नशा मुक्ति दिवस के अवसर पर जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस अवसर पर उपेंद्र ट्रेनिंग एकेडमी में सोमवार को आयोजित वाद विवाद, निबंधन लेखन एवं चित्रकला प्रतियोगिता के 18 सफल प्रतिभागियों को जहां मेडल एवं प्रशस्ति देकर सम्मानित किया गया वहीं, मद्य निषेध के प्रति जन जागरूकता को लेकर प्रेक्षागृह में ही एक नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक सैयद इमरान मसूद, अपर समाहर्ता मनोज कुमार, जिला सांख्यिकी पदाधिकारी आनन्द प्रकाश, डीपीओ शिक्षा सहित अन्य उपस्थित थे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि नशा सर्वदा अनुचित है, फिर चाहे वह किसी भी प्रकार का क्यों न हो। कुछ लोग तनाव दूर करने का बहाना बताकर शराब का सेवन करते हैं, जो अनुचित है। यह जिलेवासियों का सौभाग्य है कि वे योग नगरी, मुंगेर में रहते हैं और तनाव को दूर करने के लिए योग से बेहतर कुछ भी नहीं। शराब न सिर्फ आपके तन को बल्कि मन और स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। अपने जीवन शैली से मादक एवं नशीले पदार्थ को दूर कर योग को अपनाने से आप तनाव सहित कई तरह की बीमारियों से स्वयं को दूर कर सकते हैं। सकारात्मक सोच और अच्छे कार्य विचार से आप तनाव से दूर रह सकते हैं। अच्छे विचारों को ग्रहण करें। नशा से दूरी बनाने के बाद से आज सभी परिवार काफी सुखी हैं और उनके परिवार व बच्चे आज समाज की मुख्य धारा से जुड़कर आगे बढ़ रहे हैं। नशा के दुष्प्रभाव पर समाज में चर्चा होनी चाहिए, ताकि युवा एवं अन्य लोग इससे दूरी बनाएं और युवा वर्ग देश का भविष्य बन समाज और देश के निर्माण में अपना मुख्य योगदान दें। मद्य निषेध के लिए राज्य सरकार ने जो मुहिम चलाई है, उसमें आप भी सहयोग दें। शराब बेचने, सेवन करने वाले अथवा इससे संबंधित जो भी कार्य कर रहे हैं, उनके खिलाफ अभियान चलाएं, डायल 112 पर पुलिस को सूचना दें और ऐसे असामाजिक तत्वों से समाज को मुक्त कराने में पुलिस प्रशासन की मदद करें। उन्होंने मद्य निषेध विभाग के अधीक्षक से प्रखंड स्तर पर भी इस तरह के जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन करने की बात कही। उन्होंने कहा कि आज युवा वर्ग विशेष कर नशे के दलदल में खुद को धकेल रहे हैं, और इसमें कुछ असामाजिक तत्वों के द्वारा समाज में ही रहकर शराब के अलावे अन्य नशीले एवं मादक पदार्थों का धड़ल्ले से बिक्री कर रहे हैं। ऐसे तत्वों पर भी पुलिस प्रशासन की कड़ी नजर है और उनके खिलाफ भी कठोर से कठोर कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने उपस्थित छात्र-छात्राओं एवं युवाओं से अपील करते हुए खुद को नशा से दूर बनाने और पढ़ लिखकर अपनी प्रतिभा के दम पर अच्छे रोजगार प्राप्त समाज तथा देश के निर्माण में अपना योगदान देने की बात कही।इस मौके पर जन जागरूकता के लिए शराब से परिवार व समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव पर नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन किया गया, जिसमें कलाकारों की प्रस्तुति से उपस्थित लोगों ने काफी सराहा। वहीं नशा मुक्ति कार्यक्रम 2024 के तहत सोमवार को उपेंद्र ट्रेनिंग एकेडमी में आयोजित वाद विवाद, निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता के सफल प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। वाद विवाद प्रतियोगिता में बैद्यनाथ बालिका उच्च विद्यालय के दशम की छात्रा सारिका कुमारी प्रथम, ग्यारहवीं की सिमरन द्वितीय, उपेंद्र ट्रेनिंग एकेडमी के ग्यारहवीं की छात्रा मेहर प्रवीण तृतीय, टाउन उच्च विद्यालय के नवम के छात्र शुभ कुमार प्रथम, मध्य विद्यालय वासुदेवपुर के अष्टम के छात्र दिव्यांशु कुमार, उपेंद्र ट्रेनिंग एकेडमी के विवेक कुमार तृतीय स्थान पर रहे। वहीं निबंध प्रतियोगिता में बैजनाथ बालिका उच्च विद्यालय के दशम की छात्रा महिला मनोहर प्रथम, उच्च विद्यालय माधोपुर के ग्यारहवीं की छात्रा अलफिया अफरोज द्वितीय तथा चंद्रशेखर सिंह उच्च विद्यालय के ग्यारहवीं की छात्रा लक्ष्मी कुमारी तृतीय स्थान पर रहीं, जबकि $2 हाई स्कूल मकसूसपुर के सप्तम का छात्र आदित्य राज प्रथम, नंद कुमार उच्च विद्यालय के नवम का छात्र आदित्य कुमार द्वितीय तथा $2 हाई स्कूल मकसुसपुर के अनुराग कुमार तृतीय स्थान पर रहे। चित्रकला प्रतियोगिता में बैजनाथ राजकीय बालिका उच्च विद्यालय के दशम की छात्रा असिफा प्रवीण प्रथम, $2 मॉडल उच्च विद्यालय की नवम की छात्रा सविता कुमारी द्वितीय तथा चंद्रशेखर सिंह बालिका उच्च विद्यालय की कुमारी शालिनी तृतीय स्थान पर रही। वहीं मध्य विद्यालय वासुदेवपुर के अष्टम का छात्र बिट्टू कुमार प्रथम, अंकित कुमार द्वितीय तथा मध्य विद्यालय बेलन बाजार के अष्टम का छात्र पियुष कुमार तृतीय स्थान पर रहे। जिलाधिकारी ने सभी छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देते हुए उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं भी दी।

पुलिस ने अज्ञात युवक के शव को किया बरामद, छानबीन में जुटी पुलिस

जमुई [झाझा] झाड़ियों में शव देखे जाने के बाद इसकी जानकारी झाझा पुलिस को दिया। सूचना मिलने पर एसआई कुंज बिहारी दलबल के साथ घटना स्थल पर पहुंचकर शव को अपने कब्जे में लिया । मामला झाझा थानाक्षेत्र के सर्किल नम्बर एक बोड़वा बाजार से आगे गंडो घाट के समीप पहाड़ी क्षेत्र के घने झाड़ियों से पुलिस ने 25 वर्षीय एक युवक का शव बरामद किया है। शव को देखे जाने से ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके सिर पर गहरा चोट का निशान हैं। घटना स्थल पर लगभग दो घण्टे तक पुलिस शव की शिनाख्त को लेकर आसपास के क्षेत्रों में पूछताछ करवाया लेकिन कुछ भी पता नही चल सका। जिसके बाद पुलिस घटना स्थल पर कागजी कार्रवाई पूरी करने के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल जमुई भेज दिया। एसएचओ संजय कुमार ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम में भेजकर पुलिस अज्ञात युवक के मिले शव की शिनाख्त करते हुए हर बिंदुओ पर छानबीन की प्रक्रिया में जुटी हुई है। शव को कब्जे में लेने के बाद एफएसएल टीम को भी मौके स्थल पर बुलाया गया । एफएसएल टीम शव मिले स्थल पर साक्ष्य को जुटाया। इधर शव की पहचान को लेकर एसआई ने शव की शिनाख्त को लेकर पहचान से सम्बंधित तलाशी लेते हुए आसपास के क्षेत्रों में पता लगाया लेकिन शव की शिनाख्त नही हो सका।

संविधान दिवस के मौके पर डीएम ने पदाधिकारी और कर्मियों को शपथ दिलाया

● बाबा साहब की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए उनके पद चिन्हों पर चलने की अपील किया

प्रातः किरण संवाददाता

मुंगेर। भारत संविधान दिवस के अवसर पर मंगलवार को समाहरणालय में जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह की अध्यक्षता में समाहरणालय के सभी पदाधिकारियों एवं कर्मियों के लिए शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उप विकास आयुक्त अजीत कुमार सिंह, उप निर्वाचन पदाधिकारी राजीव कुमार, जिला अल्प संख्यक कल्याण पदाधिकारी सह जिला जन सम्पर्क पदाधिकारी राघवेंद्र कुमार दीपक, सहित समाहरणालय संवर्ग के प्रधान लिपिक एवं अन्य कर्मी उपस्थित थे।जिलाधिकारी ने इस अवसर पर भारत के संविधान की उद्देशिका, ह्यह्यहम भरत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्पित हैंह्ल की शपथ दिलाई। उन्होंने इस अवसर पर बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर उनके जीवनी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बाबा साहब द्वारा रचित संविधान भारत की एक नई पहचान है। बाबा साहब के पद चिन्हों पर चलने की भी बात कही।

कई मुद्दों को लेकर ईसीआरएमसी ने रेलकर्मियों के बीच किया चुनाव प्रचार

प्रातः किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] रेलवे में यूनियन की मान्यता प्राप्ति को लेकर 4-6 दिसम्बर को रेलकर्मियों के बीच होने वाले चुनाव को लेकर ईसीआरएमसी यूनियन दानापुर से पटना शाखा के कार्यकारिणी सदस्य मधुसूदन कुमार, सचिव अरविंद कुमार, चन्देश्वर राय, अमित कुमार सिन्हा, अभय कुमार के अलावे शाखा झाझा के सचिव संजय कुमार यादव, अध्यक्ष देवाशीष नचिकेता, संयुक्त सचिव वीरेंद्र कुमार, कार्यकारणी अध्यक्ष उत्तम कुमार अन्य यूनियन के पदाधिकारी ने रेलकर्मियों के बीच चुनाव में मतदान करने के लिए हुंकार भरा। पटना शाखा के कार्यकारिणी सदस्य ने बताया की इस बार हर रेलकर्मियों ने एक ही बात ठान लिया है कि सत्ता में जो यूनियन है उसे हटाना है क्योंकि सत्ता में रह रहे यूनियन ने रेलकर्मियों के हित के लिए कुछ भी नही किया है बल्कि उन्हें ठगने का काम किया है।एनएफआईआर से सम्बद्ध ईस्ट सेंट्रल रेलवे मेंस कॉंग्रेस (ईसीआरएमसी) की ओर से झाझा के रेलवे मेमू कारशेड, पीडब्ल्यूआई, क्रुलोबी, आईओडब्ल्यू विभाग, रेलवे अस्पताल सहित अन्य सभी विभागों में रेलकर्मियों के बीच चुनाव में मतदान करने को लेकर रेलकर्मियों के बीच प्रचार प्रसार किया गया। युनियन के लोगों ने कहा कि हमारी यूनियन सत्ता में न रहते हुए भी रेलकर्मियों के लिए कई ऐसे महत्वपूर्ण कार्य किया जिसकी गणना की जाए तो वह कम होगा। सत्ताधारी यूनियन झाझा सहित पूरे दानापुर डिवीजन में रेलकर्मियों के लिए कुछ भी ऐसा कार्य नही किया है जिसकी गणना भी रेलकर्मी कर सके। उन्होंने आगे कहा कि एनएफआईआर की एकमात्र ताकत भारतीय रेलवे की मानवपूंजी और उसकी सहायक शक्ति है। उन्होंने आगे कहा कि इस बार हमलोग रेलकर्मियों के हित के लिए प्रमुख मुद्दे को रखा है जिसमे रेलवे में एनपीएस को समाप्त किया जाए तथा एकीकृत पेंशन योजना(यूपीएस) को सभी मामलों में ओपीएस यानी पुरानी पेंशन स्कीम के बराबर सुधारा जाए। किसी कर्मचारी के कैरियर के दौरान न्यूनतम 5 पदोन्नति सुनिश्चित किया जाए, टावर वैगन चालक की पदोन्नति 420प रुपए ग्रेड पे तक किया जाए, 45 वर्षीय एवं उससे अधिक आयु की महिला कर्मचारियों के लिए स्पेशल के जुअल लीव का प्रावधान किया जाए सहित अन्य कई ऐसे मुद्दों के साथ रेलकर्मियों के बीच पहुंचकर उनका समर्थन चुनाव में मत के साथ मांग रहे हैं। मौके पर यूनियन के अन्य सदस्य भी मौजूद थे।

जदयू कार्यकर्ता सम्मेलन को लेकर जिला अध्यक्ष ने की बैठक

प्रातः किरण संवाददाता

मुंगेर जिला अतिथिगृह में जनता दल यूनाइटेड के मुंगेर जिला संगठन के सभी प्रखंड अध्यक्ष नगर के अध्यक्षों, प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्षों की बैठक जिला अध्यक्ष नचिकेता मंडल की अध्यक्षता में हुई जिसके मुख्य अतिथि जेडीयू के प्रमंडल प्रभारी, विशिष्ट अतिथि मुंगेर विधानसभा प्रभारी, जमालपुर विधानसभा प्रभारी, तारापुर विधानसभा प्रभारी, प्रदेश महासचिव सह सूर्यगढ़ा विधानसभा प्रभारी मौजूद थे। आगामी 30 नवंबर 2024 को टाऊन हॉल मैदान में आयोजित जेडीयू के कार्यकर्ता सम्मेलन को ऐतिहासिक बनाने के लिए बैठक में चर्चा हुई। पार्टी के सभी प्रखंड और नगर अध्यक्षों ने एक सुर में इस कार्यक्रम को सफल करने के लिए आश्वस्त किया। प्रखंड में तैयारी की बैठकों में कार्यकताओं का उत्साह चरम पर है। वहीं माननीय सांसद के केंद्रीय मंत्री बनने के बाद उनका पहला कार्यक्रम कार्यकताओं के साथ होने जा रहा है और इस कार्यक्रम के माध्यम से अपने नेता के स्वागत के लिए भी जिले के कोने कोने से कार्य करता उत्साहित है और हजारों हजार की संख्या में कार्यकर्ता इस सम्मेलन में भाग लेंगे। जेडीयू जिला अध्यक्ष नचिकेता मंडल ने कहा कि मुख्यमंत्री और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने 2025 विधानसभा में एनडीए के लिए 225 सीटों का लक्ष्य रखा है और इस लक्ष्य सात प्रतिशत जमीन पर उतरने की जिम्मेवारी हम सभी पार्टी के कार्यकताओं की है। यह कार्यकर्ता सम्मेलन उस लक्ष्य को प्राप्त करने के संघर्ष का शंखनाद करेगा और मुंगेर के साथियों के का जोश पूरे बिहार को ऊर्जा देगा यह हम सबों को विश्वास है। पंचायत प्रखंड और जिला के सभी साथी समन्वय बना एक दूसरे का सहयोग कर इस कार्यक्रम को ऐतिहासिक बनाएंगे। प्रदेश महासचिव शोरभ निधि ने कहा कि बिहार विधानसभा के उपचुनाव का परिणाम इस बात का संकेत है कि बिहार की जनता का निर्णय आ गया है कि आने वाले 2025 के विधानसभा चुनाव में भी नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार में एनडीए की सरकार पूर्ण बहुमत ही नहीं बल्कि ऐतिहासिक बहुमत से जीतेगी।

हथियार के बल पर ट्रक चालक से रुपए की मांग किया

प्रातः किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र के धवटिया गांव के रहने वाले एक ट्रक चालक ने दर्जनभर लोगों पट हथियार के बल पर रास्ता रोककर रुपए मांगने और जान मारने की धमकी देने को लेकर थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है। ट्रक चालक मनोज कुमार ने दर्ज आवेदन में बताया कि रविवार की देर शाम को भागलपुर पीरपैंती से सीमेंट उतार कर खाली ट्रक को लेकर झाझा थानाक्षेत्र में पड़ने वाले पैरगाहा कटहरा नदी एवं दुहरपहड़ी के बीच ज्योही पहुंचा तभी बिना नम्बर प्लेट के चार बाइक पर बैठे 12 लोगों ने हथियार दिखाते हुए रास्ता रोक लिया और मुझे पकड़कर रुपए को लेकर मेरी तलाशी हुए ट्रक की तलाशी लेकर जो भी रुपये है देने की बात करते हुए जान मार देने की धमकी दिया। ट्रक चालक ने बताया उक्त सभी लोगों में आठ लोगों की पहचान किया जिसमें धमना गांव के रहने वाले कुंदन कुमार, कुमार यादव, राहुल कुमार, रांगा गांव के उमेश यादव, बेलहर थानाक्षेत्र के सौताडीह गांव के बिक्की यादव, योगियाटिला गांव के श्रीकांत यादव, नीतीश कुमार, करहरा गांव के कुलदीप शामिल था जबकि अन्य 4-5 लोग अज्ञात था। प्राथमिकी दर्ज होने के बाद पुलिस के द्वारा छानबीन की जा रही है।

कांग्रेस अब भी प्रासंगिक

बेशक कांग्रेस महत्वपूर्ण चुनावों में पराजित होती रही है, उसमें बिखराव और अलग-अलग नजरिये भी सामने आते रहे हैं, लेकिन कांग्रेस आज भी जिंदा और प्रासंगिक राजनीतिक पार्टी है। करीब 20 फीसदी मतदाताओं की पसंद आज भी कांग्रेस है। मतदाताओं और समर्थकों की संख्या करोड़ों में है। भारतीय लोकतंत्र के लिए कांग्रेस की मौजूदगी और उसका राजनीतिक अस्तित्व बेहद जरूरी है। कांग्रेस लोकतंत्र में अपनी बात कहने और सत्ता से असहमति जताने का विस्तृत, पुराना और पुख्ता मंच है। महाराष्ट्र जनादेश के मद्देनजर जो राजनीतिक और चुनावी विश्लेषक कांग्रेस का फातिहा पढ़ रहे हैं और उसके वजूद पर सवाल उठा रहे हैं, दरअसल वे अपनी पेशेवर ईमानदारी से बेईमानी कर रहे हैं। उनके विश्लेषण पूर्वाग्रही और कांग्रेस-विरोधी हैं। यथार्थ स्थिति यह है कि लोकसभा में आज भी कांग्रेस के 98 सांसद और नेता प्रतिपक्ष हैं। तेलंगाना, कर्नाटक और हिमाचल में कांग्रेस सरकारें हैं। झारखंड, तमिलनाडु जैसे राज्यों में कांग्रेस सत्ता में साझेदार दल है। दरअसल देश के 20 राज्यों में सत्तारूढ़ भाजपा के लिए कांग्रेस आज भी प्रथम, प्रत्यक्ष चुनौती है। किसी भी लोकतंत्र में राजनीतिक दल खत्म, अस्तित्वहीन नहीं हुआ करते। भाजपा ही इसका सबसे बड़ा, प्रमाणित उदाहरण है। 1984 के आम चुनाव में भाजपा मात्र दो सांसदों तक सिमट गई थी। उसके शिखर-पुरुष अटल बिहारी वाजपेयी भी चुनाव हार गए थे, लेकिन 1996 के बाद भाजपा हर लोकसभा चुनाव में सबसे बड़ी पार्टी के तौर पर उभर रही है। मई, 2014 से लगातार वह देश की सत्ता पर काबिज है। यह स्थिति कांग्रेस की क्यों नहीं हो सकती? कांग्रेस को 1989 के बाद लोकसभा चुनाव में कभी भी बहुमत हासिल नहीं हुआ। हालांकि उसकी अल्पमत और गठबंधन की सरकारें बनती रही हैं और उन्होंने अपने कार्यकाल भी पूरे किए हैं। यही बिंदु है, जिस पर कांग्रेस नेतृत्व को व्यापक मंथन करना है। सवाल है कि मंथन कौन करेगा और वह कितना ईमानदार प्रयास होगा? मंथन की दिशा कौन तय करेगा और किसका नेतृत्व सर्व स्वीकार्य होगा? यही बुनियादी चिंता और विरोधाभास भी है। इतने बड़े और राष्ट्रीय समर्थन के बावजूद कांग्रेस का नेतृत्व एक एनजीओ या एक कंपनी सरीखा लगता है, जिसमें ह्यविरोधह्ल की कोई गुंजाइश ही नहीं है। नेतृत्व सिर्फ मल्लिकार्जुन खडगे ही नहीं हैं। वह तो कुछ साल के लिए निर्वाचित अध्यक्ष हैं, लेकिन आज भी नेतृत्व तो गांधी परिवार ही करता है। दरअसल कांग्रेस कार्यसमिति पार्टी का सर्वोच्च, निर्णायक निकाय है। वह राजनीतिक चापलूसों का मंच है। अधिकतर नेता राज्यसभा में घुसेड़े गए हैं। अलबत्ता वे लोकसभा या विधानसभा चुनाव जीतने लायक भी नहीं हैं, लेकिन वे कांग्रेस की देशव्यापी रणनीति, संसदीय रणनीति, वैचारिक आधार-भूमि तय करने वाले हैं। जब उन्हें देश के यथार्थ का ज्ञान अथवा एहसास ही नहीं है, तो दशकों से वे ही पार्टी की रणनीति कैसे तैयार कर रहे हैं? कांग्रेस को जनादेश आखिर कैसे मिलेंगे? महाराष्ट्र जनादेश की प्रतिक्रिया में अलग-अलग बयान दिए गए हैं। यहां तक कहा गया है कि यह जनता का फैसला नहीं है, लिहाजा कांग्रेस को स्वीकार्य नहीं है। क्या जनादेश पर सवाल, संदेह जताते हुए कांग्रेस आत्ममंथन कर सकती है? क्या ऐसा चिंतन आत्मघाती ही साबित नहीं होगा? दरअसल कांग्रेस के लिए यह आमूल परिवर्तन का दौर है। बेशक इसकी शुरूआत गांधी परिवार को ही करनी चाहिए। कांग्रेस को गांधी परिवार से मुक्त नहीं किया जा सकता। वह पार्टी की धुरी है, लेकिन परिवर्तन कौन करेगा? कार्यसमिति में बदलाव कब संभव हैं? नई पीढ़ी की भूमिका क्या होगी, जो नए दौर के नए एजेंडे तय करने में सार्थक साबित हो सकती है? यह पारदर्शिता का भी दौर है।

भाजपा के हिंदुत्व पर भारी पड़ा झारखंड मुक्ति मोर्चा का आदिवासी कार्ड

वनाच्छादित, खनिज संपदा से भरपूर और आदिवासी बहुल झारखंड के अब तक के राजनीतिक इतिहास में यह पहला मौका है, जब जनता ने लगातार दूसरी बार किसी दल को सत्तासीन होने का जनादेश दिया है। यहां इंडिया गठबंधन ने 81 सीटों में से 56 सीटें जीतीं, जबकि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन 24 सीटों पर सिमट गया। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की झारखंड मुक्ति मोर्चा ने सबसे अधिक सीटें (34) हासिल कीं, जबकि कांग्रेस ने 16, राष्ट्रीय जनता दल ने 4 और सीपीआई (एमएल) ने 2 सीटें जीतीं। वहीं, दूसरी तरफ तीन सीट के नुकसान के साथ भाजपा ने 21, दो के नुकसान के साथ एजेएसयू ने एक सीट हासिल की। पहली बार एक सीट जेडीयू के खाते में गई। इनके अन्य सहयोगियों को भी दो सीटों का नुकसान हुआ, उन्हें केवल एक सीट मिली। वहीं, पिछले विधानसभा चुनाव यानी 2019 में झारखंड में झारखंड मुक्ति मोर्चा को 30, भाजपा को 25, कांग्रेस को 16, जेवीएम को तीन तथा एजेएसयू को दो और आरजेडी को एक सीट मिली थी। झारखंड के राज्यपाल संतोष गंगवार से मुलाकात के बाद हेमंत सोरेन सरकार बनाने का दावा पेश कर चुके हैं। 28 नवंबर को नई सरकार का शपथ ग्रहण समारोह होगा। इस चुनाव में हाल के वर्षों में राजनीति व पूंजीपतियों के नये उभरे समीकरण के चलते इस क्षेत्र पर वर्चस्व स्थापित करने के लिए भाजपा ने पूरी ताकत झोंक दी। इस बार भाजपा पूरे जोश के साथ झारखंड का चुनाव जीतने के लिये वैसी ही आमादा दिखी, जैसी वह छत्तीसगढ़ और ओडिशा में थी जहां उसने जीत दर्ज करने के लिये सारे पैंतरे लगाये और सफलता पायी थी। झारखंड में आदिवासी वोट निर्णायक होते हैं। झारखंड में एक तिहाई से ज्यादा (28) अनुसूचित जनजाति सीटें हैं। आबादी का 26 फीसदी हिस्सा आदिवासी है। 21सीटों में आदिवासियों की आबादी कम से कम एक लाख है। इन सीटों पर झामुमो की अच्छी पकड़ है। भाजपा इसे तोड़ने में सफल नहीं रही। इस बार झारखंड में चुनाव प्रचार के दौरान राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की तरफ से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छह, अमित शाह ने 16, योगी आदित्यनाथ ने 14 सभाएं कीं। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान और असम के सीएम हिमंत बिस्वा सरमा ने तो झारखंड में ही डेरा डाल रखा था। भाजपा के कई धुरंधर नेताओं ने झारखंड में धुआंधार प्रचार किया। संथाल परगना क्षेत्र में घुसपैठ को लेकर भाजपा काफी आक्रामक रही। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने तो यहां तक कहा कि झारखंड में भाजपा की सरकार बनाइए, घुसपैठियों को उल्टा लटका देंगे। उन्होंने घुसपैठियों को ही झारखंड मुक्ति मोर्चा, राष्ट्रीय जनता दल और कांग्रेस का वोट बैंक बताया। जमशेदपुर में स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि वोट और तुष्टिकरण की राजनीति करने वाले घुसपैठियों को संरक्षण दे रहे हैं। उन्होंने चंपई सोरेन और सीता सोरेन के अपमान को आदिवासियों का अपमान बताया। भाजपा ने ह्लबंटोगे तो कटोगेह्व का नारा देकर घुसपैठ की चर्चा करते हुए हिंदुत्व कार्ड खेला। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा दिए गए नारे बंटोगे तो कटोगे को भाजपा के नेताओं ने इस चुनाव में खूब उछाला। यह नारा बीजेपी के लिए नुकसानदेह ही साबित हुआ। वहीं, इंडिया गठबंधन की तरफ से राहुल गांधी की छह सभाओं के अलावा लगभग पूरा जोर हेमंत सोरेन और उनकी पत्न ी कल्पना सोरेन ने ही लगाया। पूर्णिया के सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव ने स्टार प्रचारक के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, उन्होंनें पचीस दिनों तक यहां कैंप कर इंडिया गठबंधन के प्रत्याशियों के पक्ष में धुआँधार प्रचार किया, तो हेमंत सोरेन ने पूरी ईमानदारी से गठबंधन धर्म का पालन किया। झारखंड मुक्ति मोर्चा ने अपनी योजनाओं की चर्चा के साथ आदिवासी कार्ड खेला। झारखंड मुक्ति मोर्चा का आदिवासी कार्ड भाजपा के हिंदुत्व कार्ड पर भारी पड़ गया। आदिवासियों का भरोसा गुरुजी शिबू सोरेन के पुत्र हेमंत सोरेन पर ही रहा। झारखंड में हेमंत सोरेन के पक्ष में सहानुभूति भी काफी प्रभावी रहा। हेमंत सोरेन अपने चुनाव प्रचार के दौरान लगातार यह संदेश देने की कोशिश करते रहे कि आदिवासी चेहरे को कुचलने के लिए किस तरह उन्हें गलत तरीके से जेल में डाला गया। इसमें वे कामयाब भी रहे।

संभल की दुर्भाग्यपूर्ण घटना से उपजे जटिल सवाल

एक सम्प्रदाय विशेष के हिंसक हमलों ने आज तेजी के साथ हिंसा, असहिष्णुता, नफरत, बिखराव और घृणा की साम्प्रदायिक जीवन शैली का रूप ग्रहण कर लिया है। यह खतरनाक स्थिति है, कारण सबको अपनी-अपनी पहचान समाप्त होने का खतरा दिख रहा है। भारत मुस्लिम सम्प्रदायवाद से आतंकित रहा है। आवश्यकता है धर्म को प्रतिष्ठापित करने के बहाने राजनीति का खेल न खेला जाए। धर्म और सम्प्रदाय के भेद को गड्मड् न करें। धर्म सम्प्रदाय से ऊपर है। धर्म में धार्मिकता आये, कट्टरता न आये। राजनीति में सम्प्रदाय न आये, नैतिकता आए, आदर्श आए, श्रेष्ठ मूल्य आएँ, सहिष्णुता आये, सह-अस्तित्व के प्राचीन मूल्य एवं जीवनशैली आये।

ललित गर्ग
लेखक

यह दुर्भाग्यपूर्ण एवं त्रासद है कि उत्तर प्रदेश के संभल में एक बार फिर एक सम्प्रदाय विशेष के लोगों ने जो हिंसा, नफरत एवं द्वेष को हथियार बनाकर अशांति फैलायी, वह भारत की एकता, अखण्डता एवं भाईचारे की संस्कृति को क्षति पहुंचाने का माध्यम बनी है। स्थानीय अदालत के आदेश पर एक मस्जिद के सर्वे के दौरान हिंसा एवं उन्माद का भड़क उठना और इसके चलते तीन लोगों की जान चले जाना, चुनौतीपूर्ण, विडम्बनापूर्ण एवं शर्मनाक है। इस घटना में कई अन्य लोग घायल भी हुए, जिनमें 30 से अधिक पुलिसकर्मी भी हैं। इस हिंसा को टाला जा सकता था यदि अदालत के आदेश पर हो रहे सर्वेक्षण का हिंसक विरोध नहीं किया जाता। ध्यान रहे कि जब ऐसा होता है तो बैर बढ़ने के साथ देश की छवि पर भी बुरा असर पड़ता है। निःसंदेह इस सम्प्रदाय विशेष को भी यह समझने की आवश्यकता है कि जब देश कई चुनौतियों से दो-चार है, तब राष्ट्रीय एकता एवं सद्भाव को बल देना सबकी पहली और साझी प्राथमिकता बननी चाहिए। एक उन्मादी, विभाजित और वैमनस्यग्रस्त समाज न तो अपना भला कर सकता है और न ही देश को आगे ले जा सकता है। समय आ गया है कि उन मूल कारणों पर विचार किया जाए, जिनके चलते साम्प्रदायिक तनाव, नफरत एवं द्वेष बढ़ाने वाली घटनाएं थम नहीं रही हैं। संभल की स्थानीय अदालत ने उस याचिका पर जामा मस्जिद के सर्वेक्षण का आदेश दिया था, जिसमें दावा किया गया था कि मुगल बादशाह बाबर ने इस मस्जिद का निर्माण एक मंदिर के स्थान पर किया था। स्थानीय अदालत के आदेश पर इसी मंगलवार को जब प्रारंभिक सर्वे किया गया था तब भी इलाके में तनाव फैला था, लेकिन उसे दूर कर लिया गया था। समझना कठिन है कि गत दिवस सर्वे के दौरान ऐसे प्रयास क्यों नहीं किए गए जिससे किसी तरह की अव्यवस्था और अशांति न फैलने पाए। रविवार को सर्वे के दौरान जिस तरह पुलिस पर पथराव किया गया और वाहनों में तोड़फोड़ करने के साथ उन्हें आग के हवाले किया गया, उससे लगता है कि कुछ उन्मादी तत्वों ने उपद्रव की तैयारी कर रखी थी। ऐसी घटनाएं सामाजिक तानेबाने को क्षति पहुंचाने के साथ कानून एवं व्यवस्था के समक्ष चुनौती भी खड़ी करती हैं। यह चिंता की बात है कि यह एक चलन सा बनता जा रहा है कि जब सार्वजनिक स्थलों पर कोई धार्मिक आयोजन होता है, किसी अदालती आदेश पर जांच कार्य होता है तो प्रायः पहले किसी बात को लेकर विवाद होता है और फिर हिंसा शुरू हो जाती है। कई बार तो यह हिंसा बड़े पैमाने पर और किसी सुनियोजित साजिश के तहत होती दिखती है। उत्तर प्रदेश के संभल में हुई भीषण हिंसा यही संकेत करती है कि उसे लेकर पूरी तैयारी की गई थी। संभल की ताजा घटनाओं के मूल में भड़काऊ नारे एवं संकीर्ण धार्मिकता के मनसूंबे सामने आये हैं। इस तरह की घटनाओं का बार-बार होना अच्छा नहीं है, मंदिर-मस्जिद के एक और मामले ने तनाव की स्थिति उत्पन्न करके शांति एवं सौहार्द को खण्डित किया। यदि मस्जिद पक्ष का यह मानना है कि जामा मस्जिद के सर्वे का आदेश सही नहीं तो उसे ऊपरी अदालत का दरवाजा खटखटाना चाहिए था। अदालत के आदेश की अवहेलना करने के लिए हिंसा का सहारा लेने का कहीं कोई औचित्य नहीं और तब तो बिल्कुल भी नहीं जब निचली अदालत के किसी फैसले के खिलाफ ऊंची अदालतों में जाने का रास्ता खुला हो। यह भी देखा जाना चाहिए कि क्या कुछ राजनीतिक दल एवं सम्प्रदाय विशेष के लोग किसी भी बहाने भड़कने और हिंसा करने के लिए तैयार बैठे रहते हैं? वास्तव में जैसे यह एक सवाल है कि क्या भारतीय संस्कृति के अस्तित्व एवं अस्मिता से जुड़े इन धार्मिक स्थलों के नाम पर पथराव, तोड़फोड़ और आगजनी करना जरूरी समझ लिया गया है? इन प्रश्नों पर संकीर्ण धार्मिकता से परे होकर गंभीरता के साथ विचार होना चाहिए। इसी तरह पुलिस प्रशासन को भी यह देखना होगा कि वैमनस्य बढ़ाने वाली घटनाएं क्यों बढ़ती चली जा रही हैं? यह सही है कि 1991 का पूजा स्थल अधिनियम किसी धार्मिक स्थल में बदलाव का निषेध करता है, लेकिन इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि यह अधिनियम ऐसे किसी स्थल के सर्वेक्षण की अनुमति भी प्रदान करता है और इसी कारण वाराणसी में ज्ञानवापी परिसर का सर्वेक्षण हुआ और धार में भोजशाला परिसर का भी। मथुरा में ईदगाह परिसर के सर्वेक्षण का मामला सुप्रीम कोर्ट के समक्ष विचाराधीन है। मंदिर-मस्जिद के विवाद नए नहीं हैं। इन विवादों को सुलझाने की आवश्यकता है। इसका एक तरीका न्यायपालिका का सहारा लेना है और दूसरा आपसी सहमति से विवाद को हल करना। इससे बेहतर और कुछ नहीं कि जहां भी ऐसे विवाद हैं, उन्हें दोनों समुदाय आपस में मिल-बैठकर हल करें। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि समाज में सद्भाव, सौहार्द एवं शांति बनी रहेगी। यह समझा जाना चाहिए कि इन दोनों उपायों के अतिरिक्त हिंसा एवं नफरत कोई उपाय नहीं है। इसी के साथ यह भी समझना होगा कि देश को अतीत से अधिक भविष्य की ओर देखने और मंदिर-मस्जिद विवादों से बाहर निकलने की आवश्यकता है। इससे इन्कार नहीं कि विदेशी आक्रमणकारियों ने अनगिनत मंदिरों का ध्वंस किया। अतीत में हुए इन ज्यादतियों, अत्याचारों एवं विध्वंस घटनाक्रमों को सुधारने की संभावनाएं किसी भी दृष्टि से गलत नहीं कही जा सकती। देश का चरित्र बनाना है तथा स्वस्थ, सौहार्दपूर्ण एवं शांतिपूर्ण समाज की रचना करनी है तो हमें एक ऐसी आचार संहिता को स्वीकार करना होगा जो जीवन में पवित्रता दे। राष्ट्रीय प्रेम व स्वस्थ समाज की रचना की दृष्टि दे एवं कदाचार-संकीर्णता-कट्टरता के इस अंधेरे कुएँ से निकाले। बिना इसके देश का विकास और भौतिक उपलब्धियां बेमानी हैं। व्यक्ति, परिवार और राष्ट्रीय स्तर पर हमारे इरादों की शुद्धता महत्व रखती है, जबकि हमने इसका राजनीतिकरण कर परिणाम को महत्व दे दिया। घटिया उत्पादन के पर्याय के रूप में जाना जाने वाला जापान आज अपनी जीवन शैली को बदल कर उत्कृष्ट उत्पादन का प्रतीक बन विश्वविख्यात हो गया। यह राष्ट्रीय जीवन शैली की पवित्रता का प्रतीक है। इसी तरह भारत भी आज विश्वविख्यात होने की दिशा में अग्रसर हो रहा है, तो उसकी बढ़ती साख एवं समझ को खण्डित करने वाली शक्तियों को सावधान करना ही होगा। भारत जैसी माटी में जन्म लेना बड़ी मुश्किल से मिलता है। विश्व बंधुत्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम की विचारधारा वाला यह राष्ट्र विभिन्न संस्कृतियों एवं सम्प्रदायों को अपने में समेटे है ।

संविधान, संसद और हमारी सरकार

इस बार भी मुझे यही आशंका है कि सरकार सदन चलाना ही नहीं चाहती। सरकार के तेवर बता रहे हैं कि उसे किसी की परवाह नहीं है। न सदन की गरिमा की, न सदन के सदस्यों के मान-अपमान की और न जनाकांक्षाओं की। लोकसभा और राज्य सभा के हिस्से में पहली बार सरकार के कठपुतली पीठासीन प्रमुख आये हैं, जो सदन को नियमों , और परम्पराओं के अनुरूप चलने के बजाय सरकार के इशारों से चलना चाहते हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि जो सरकार संविधान की लाल जिल्द देखकर बिदकती हो वो संविधान और संसद की गरिमा की रक्षा क्या खाक करेगी?

राकेश अचल
लेखक

विषय गंभीर है, इसलिए इसे गंभीरता से ही पढ़िए। देश के संविधान के 74 साल पूरे हो गए हैं और 75 वां साल शुरू हो गया है। इसी दीर्घायु संविधान से आज की सरकार धर्मनिरपेक्षता को निकाल फेंकना चाहती है, लेकिन लाख-लाख शुक्रिया कि सरकार की बदनीयत पर देश की सबसे बड़ी अदालत ने पानी फेर दिया। इसी संविधान की शपथ लेकर संसद में जाने वाले लोग दूसरी तरफ संसद को बहरा और गूंगा बनाने पर आमादा हैं। अब सवाल ये है कि हमारा संविधान और संसद क्या किसी सनक का शिकार हो सकता है? देश के संविधान की प्रस्तावना में पिछली सरकार द्वारा जोड़े गए दो शब्द आज की सरकार और उसके समर्थकों की आँख में कांटे की तरह चुभ रहे है। इन्हें विलोपित करने के लिए फिलहाल संसद में प्रस्ताव नहीं आया है लेकिन कुछ लोग सर्वोच्च न्यायालय जा पहुंचे। सुप्रीम कोर्ट ने संविधान की प्रस्तावना में समाजवादी और पंथनिरपेक्ष शब्दों को हटाने की मांग वाली याचिकाओं को खारिज कर दिया। अदालत ने कहा कि प्रस्तावना के मूल सिद्धांत पंथनिरपेक्ष लोकाचार को दर्शाते हैं। केशवानंद भारती और एसआर बोम्मई सहित कई फैसलों में कहा गया है कि पंथनिरपेक्षता संविधान की एक बुनियादी विशेषता है। इन दो शब्दों को लेकर आज की सरकार और संविधान के बीच का टकराव साफ देखा जा सकता है। हाल ही में सम्पन्न हुए महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा के चुनावों में संविधान की मूल भावना के खिलाफ सरकार और सरकारी पार्टी ने बटोगे तो कटोगे का बीभत्स नारा उछाला। लेकिन किसी ने सरकार को रोका नहीं। आखिर किसके पास इतनी ताकत है कि जो वो सरकार को संविधान के खिलाफ जाने से रोके? ये काम या तो देश की सबसे बड़ी अदालत कर सकती है या फिर जनता की अदालत। जनता की अदालत संसद होती है उसे गूंगा-बहरा बनाने की कोशिश की जा रही है। संसद के शीत सत्र के पहले ही दिन लोकसभा की कार्रवाई केवल 1 मिनिट चली और तत्काल स्थगित कर दी गयी। लोकसभा अध्यक्ष ने सदन चलने की कोई कोशिश नहीं की। लगता है जैसे वे घर से ही सोचकर निकले थे कि संसद की कार्रवाई को चलाना ही नहीं है। प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र दामोदर दास मोदी ने संसद में प्रवेश से पहले ही कह दिया कि जिन लोगों को जनता ने ठुकरा दिया है वे मुठ्ठी भर लोग संसद में हंगामा करते है। अब कोई मोदी जी से कैसे पूछे कि सदन में जनता द्वारा चुने हुए लोग ही प्रवेश करते हैं ठुकराए हुए नहीं। और ये लोग मुठ्ठी भर नहीं हैं सैकड़ों की संख्या में हैं। इन्हें इस तरह से लांछित नहीं किया जा सकता। मुश्किल ये है कि माननीय प्रधानमंत्री न संसद के बाहर सवालों का सामना करते हैं और न संसद में। उनकी अग्निवीर सेना संसद में संविधान के बजाय मोदी- मोदी के नारे लगाकर आतंक पैदा करना चाहती है। आखिर मोदी जी महाराष्ट्र में जीते हैं तो झारखण्ड में बुरी तरह हारे भी हैं। फिर इस नारेबाजी का क्या अर्थ है ?इससे क्या हासिल होने वाला है? हमारी मौजूदा बैशाखी पर टिकी सरकार को शायद ये भरम हो गया है कि हमारा संविधान उनके मतलब का नहीं है, क्योंकि जब संविधान बनाया गया तब माननीय मोदी जी थे ही नहीं। आपको बता दें कि भारतीय संविधान की प्रस्तावना एक संक्षिप्त परिचयात्मक कथन है। प्रस्तावना किसी दस्तावेज के दर्शन और उद्देश्यों को बताती है। इसे 26 नवंबर 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा अपनाया गया था। इसके बाद 26 जनवरी 1950 को देश का संविधान लागू हुआ था। दरअसल, 1946 में जवाहरलाल नेहरू ने संवैधानिक ढांचे का वर्णन करते हुए उद्देश्य प्रस्ताव पेश किया था। 1947 (22 जनवरी) में इसे अपनाया गया। इसने भारत के संविधान को आकार दिया और इसका संशोधित रूप भारतीय संविधान की प्रस्तावना में परिलक्षित होता है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में केवल एक बार 42वें संशोधन अधिनियम, 1976 के जरिए संशोधन किया गया है। समाजवादी, पंथनिरपेक्ष और अखंडता शब्द 42वें संशोधन अधिनियम, 1976 के जरिए प्रस्तावना में जोड़े गए। संप्रभु और लोकतांत्रिक के बीच समाजवादी और पंथनिरपेक्ष शब्द जोड़ दिए गए। राष्ट्र की एकता को बदलकर राष्ट्र की एकता और अखंडता कर दिया गया। ये शब्द भाजपा को अजीर्ण पैदा करते हैं। इसीलिए भाजपा न जाने कब से संविधना से इन शब्दों को हटाने की फिराक में हैं, लेकिन कहते हैं की ऊपर वाला बड़ा दयालु है। गंजों को नाखून नहीं देता। संविधान में संशोधन के लिए जितनी ताकत [संख्या बल] चाहिए उतना भाजपा अभी तक जुटा नहीं पायी। हारकर उसने अदालत की शरण ली। शीर्ष अदालत में भाजपा नेता डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी, सुप्रीम कोर्ट के वकील अश्विनी उपाध्याय और बलराम सिंह ने इसे लेकर याचिकाएं दाखिल की थीं। याचिकाओं में 1976 में 42वें संशोधन के जरिये संविधान की प्रस्तावना में शामिल किए गए दो शब्दों पंथनिरपेक्ष और सामाजवाद को हटाने की मांग की गई। याचिकाओं में कहा गया कि ये दोनों शब्द 1949 में तैयार किए गए संविधान के मूल प्रस्तावना में नहीं हैं। मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और जस्टिस संजय कुमार की पीठ ने इन याचिकाओं पर सुनवाई की और 22 नवंबर को आदेश सुरक्षित रखा था। अब शीर्ष अदालत में भी भाजपा का सपना चकनाचूर हो चुका है। इसकी खीज आप संसद में साफ देख सकते हैं। सरकार ने मन बना लिया है की उसे संसद में हंगामे को बहना बनाकर किसी भी सवाल का उत्तर देना ही नहीं है। देश का दुर्भाग्य ये है कि देश के पास इस समय एक कजहिजी हुई, बौखलाई हुई, मन से हारी हुई एक ऐसी सरकार है जो विपक्ष को फूटी आँख नहीं देखना चाहती आपको याद होगा कि इसी पार्टी की सरकार ने पिछली संसद में किस तरह से थोक में सांसदों को सदन से बाहर का रास्ता दिखाकर अपनी मनमानी की थी।

संभल : देश को कौन जला रहा है?

राजेंद्र शर्मा

दुर्भाग्य ये यह सब एक प्रकार से सुप्रीम कोर्ट की शह से ही हो रहा है। याद रहे कि काशी की ज्ञानवापी मस्जिद को लेकर इस तरह से विवाद खड़ा किए जाने का मुद्दा जब सुप्रीम कोर्ट में पहुंचा था और इस तरह की कार्रवाइयों को 1991 के धार्मिक स्थल कानून के आधार पर चुनौती दी गयी थी, डीवीइ चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने इस तकनीकी तर्क के आधार पर सर्वे का अनुमोदन कर दिया था कि सर्वे की मांग, सिर्फ यह जानने की मांग है कि क्या वहां कोई मंदिर रहा था? और यह मांग, धार्मिक स्थल की प्रकृति को बदलने की मांग से अलग है, जो कि 1991 के कानून के अंतर्गत प्रतिबंधित है। उत्तर प्रदेश में संभल के दुःखद घटनाक्रम के संबंध में, एक प्रभावशाली राय यह है कि यह दंगा जान-बूझकर शासन के इशारे पर कराया गया था, जिससे एक दिन पहले ही गाढ़े रंग से रेखांकित होकर सामने आये प्रदेश में नौ विधानसभाई सीटों के उपचुनाव में खुली धांधली के सवालों की ओर से ध्यान हटाया जा सके। सभी जानते हैं कि उप-चुनावों में 23 नवंबर को घोषित नतीजों में, भाजपा ने सपा से तीन सीटें छीन ली हैं। इन नतीजों में मुरादाबाद की कुंदरकी की सीट जैसे चमत्कार भी शामिल हैं, जहां करीब 65 फीसद मुस्लिम मतदाताओं के बावजूद और मुस्लिम वोटों में किसी खास विभाजन के न होने के बावजूद, भाजपा के उम्मीदवार को एक लाख से ज्यादा वोटों से विजयी घोषित किया गया है। वैसे इन उपचुनावों के सिलसिले में यह उल्लेखनीय है कि मतदान के दिन, 20 नवंबर को ही समाजवादी पार्टी ने कुंदरकी के अलावा भी कम से कम तीन चुनाव क्षेत्रों—अंबेडकर नगर में कटेहरी, मुजफ्फरनगर में मीरापुर तथा कानपुर में सीमामऊ—में बड़े पैमाने पर चुनाव धांधली और खासतौर पर मुस्लिम मतदाताओं को पुलिस द्वारा रोके, डराए-धमकाए जाने और उन पर लाठियां बरसाए जाने के, सप्रमाण आरोप लगाए थे। यहां तक कि प्रायः विपक्ष की शिकायतों को अनसुना करने वाले चुनाव आयोग तक को, अलग-अलग चुनाव क्षेत्रों में करीब आधा दर्जन पुलिस अधिकारियों के निलंबन के आदेश जारी करने पड़े थे। मतगणना के बाद, विपक्ष चुनाव धांधली की इन शिकायतों को जोरदार तरीके से उठाता, उससे पहले ही अगली सुबह संभल में दंगा करा दिया गया, जिसमें इन पंक्तियों के लिखे जाने तक चार और कई खबरों के अनुसार एक ही समुदाय के पांच लोगों की जान जा चुकी थी और पुलिसवालों समेत भारी संख्या में लोग घायल हो गए थे। खैर! संभल की त्रासदी किसी षडयंत्र के अर्थ में भले ही जान-बूझकर नहीं करायी गयी हो, लेकिन दंगा जिस तरह से भड़काया गया है, उस अर्थ में जरूर यह दंगा प्रशासन की मिलीभगत से कराया गया है। यह संयोग ही नहीं है कि एकाएक एक जिला अदालत द्वारा इस कस्बे के सबसे पुराने स्मारक, साढ़े चार सौ साल पुरानी शाही मस्जिद में यह पता लगाने के लिए कि क्या वहां पहले मंदिर रहा था, सर्वे कराने के आदेश दे दिए। आश्चर्यजनक रूप से ये आदेश मुस्लिम पक्ष की अनुपस्थिति में, अल्पसंख्यकों के लिए बिना किसी पूर्व-सूचना के ही जारी कर दिए गए। फिर भी यह सर्वे बिना किसी अप्रिय घटना के हो भी गया। लेकिन, आश्चर्यजनक रूप से 24 तारीख की सुबह सर्वेक्षण टीम, पुलिस की सुरक्षा में और जय श्रीराम के नारे लगाते समूह के साथ, दोबारा सर्वेक्षण के लिए पहुंच गयी। बताया जाता है कि दोबारा सर्वे करने के लिए किसी प्रकार का अदालती आदेश तक नहीं था। उसके बाद वही हुआ जो सकता था। सर्वेक्षण के पक्ष और विरोध में तनाव पैदा होने लगा। विरोध में भीड़ जमा हो गयी और जल्द ही भीड़ और पुलिस के बीच झड़प की नौबत आ गयी। और फिर वह हुआ, जो उत्तर प्रदेश में योगी राज में हर बार होता है—पुलिस ने मुसलमानों के खिलाफ युद्ध जैसा छेड़ दिया। ज्यादातर जानें पुलिस की गोलीबारी में गयी हैं, हालांकि पुलिस ने गोली चलाने से इंकार ही किया है। पुलिस ने 2, 500 लोगों के खिलाफ एफआइआर दर्ज की बताते हैं। दुर्भाग्य से उत्तर प्रदेश पुलिस की इन जुल्म-ज्यादतियों को चूंकि वर्तमान शासन का पूरा-पूरा अनुमोदन हासिल है बल्कि शासन द्वारा इन्हें बढ़ावा ही दिया जाता है, इसलिए न सिर्फ इन पर रोक-टोक का कोई दरवाजा नहीं है, मुसलमानों की किसी भी तरह की सुनवाई की उम्मीद ही तेजी से खत्म होती जा रही है। कहने की जरूरत नहीं है कि इस हताशा ने भी संभल के दंगे की आग में घी डालने का काम किया है। यह नाउम्मीदी इस बात से और भी मुकम्मल हो जाती है कि बढ़ते पैमाने पर अदालतें, समस्या के समाधान का साधन बनने के बजाए, समस्या भड़काने का ही साधन बनती जा रही हैं।

संक्षिप्त खबरें

लूट की सूचना देकर पुलिस में मचाया हड़कंप, हिरासत में लिया

हसनपुर। उधार के रुपये मांगने को लेकर दो युवकों में जमकर मारपीट हुई। इस दौरान एक युवक ने लूट की झूठी सूचना देकर पुलिस में हड़कंप मचा दिया। पुलिस ने जांच के बाद दोनों युवकों को हिरासत में ले लिया। बताया जा रहा है कि कोतवाली क्षेत्र के गांव बाईखेड़ा निवासी जगत सिंह के सतेड़ा निवासी नितिन पर 20 हजार रुपये उधार थे। इनमें से दस हजार रुपये कुछ समय पूर्व उसने लौटा दिए थे। बाकी की रकम मांगने के लिए सोमवार रात जगत सिंह नितिन के घर गया था, जिसको लेकर दोनों के बीच मारपीट हो गई। इसी बीच नितिन ने कोतवाली पुलिस को लूट की झूठी सूचना दे दी। पुलिस में हड़कंच मच गया। पुलिस ने मामले की जानकारी की तो हकीकत सामने आ गई। पुलिस जगत सिंह और नितिन को कोतवाली ले आई। एसएसआई कुमरेश त्यागी ने बताया कि दोनों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

बिजली निजीकरण का फैसला वापस लेने की मांग

हसनपुर।भारतीय किसान यूनियन संयुक्त मोर्चा पदाधिकारियों ने बिजली निजीकरण का फैसला वापस लेने के साथ ही किसानों से जुड़ी अन्य समस्याओं को उठाया। सभी समस्याओं का जल्द समाधान नहीं होने पर आंदोलन शुरू करने की चेतावनी दी। मंगलवार दोपहर प्रधानमंत्री को संबोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपा गया। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेश चौधरी ने कहा कि एमएसपी पर कानूनी गारंटी देकर सभी फसलों पर लागू किया जाए। कृषि के लिए केंद्र सरकार अलग से बजट लागू करें। सरकार डब्ल्यूटीओ से नाता तोड़ने के साथ ही कृषि यंत्रों पर जीएसटी नहीं लगाए। सहकारिता विभाग खत्म किया जाए। कृषि उत्पादन और व्यापार से बहुराष्ट्रीय कंपनियां दूर रहें। किसान और खेती मजदूर को पेंशन दी जाए। बिजली निजीकरण का फैसला वापस लेने के साथ ही किसानों को सिंचाई के लिए फ्री बिजली दी जाए। कारगर फसल बीमा की व्यवस्था करने, दिल्ली आंदोलन के दौरान जिन किसानों की मौत हुई थी, उनकी याद में गाजीपुर, सीकरी व सिंघु बॉर्डर पर किसान शहीद स्मारक बनाने की मांग भी उठाई। क्षेत्र में फसलों को नुकसान पहुंचा रहे छुट्टा पशुओं को पकड़ने के अलावा फसल सिंचाई के लिए दिन में ही बिजली आपूर्ति किए जाने पर जोर दिया। इस दौरान सीमा चौधरी, रवि चौधरी, मयंक धारीवाल, यशवीर सिंह, अरुण कुमार, सुक्खनलाल, अशोक चौधरी, अभिषेक गुर्जर, नकुल चौधरी, अमन कुमार आदि रहे।

आईएम इंटर कॉलेज में छात्र-छात्राओं को बताया संविधान का महत्व

अमरोहा।शहर के आईएम इंटर कॉलेज में मंगलवार को संविधान दिवस मनाया गया। भारतीय संविधान के 75 वर्ष पूरे होने पर प्रधानाचार्य डा. जमशेद कमाल ने छात्र-छात्राओं को संविधान के महत्व की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा ने भारत के संविधान को अपनाया, जो 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया।इसी दिन भारत के इतिहास में एक नए युग की शुरूआत हुई। यह दिन बहुत महत्व रखता है, क्योंकि ये दुनिया के सबसे लंबे लिखित संविधान की स्थापना का प्रतीक है, जो लोकतंत्र की जीत का प्रतिनिधित्व करता है। बाबा साहब डा. भीमराव आंबेडकर के योगदान की जानकारी भी दी। आखिर में संविधान की प्रस्तावना पढ़ते हुए संविधान के प्रति निष्ठा रखने का संकल्प लिया गया।बाबा साहब डा. भीमराव आंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन भी किया गया। संचालन डा. मुनव्वर व नदीम रजा ने संयुक्त रूप से किया।

अपार्टमेंट की पार्किंग में लगी आग, कार समेत 5 वाहन जलकर राख, महिला समेत 2 बच्चों का हुआ रेस्क्यू

ग्रेटर नोएडा,। ग्रेटर नोएडा वेस्ट में एक बड़ा हादसा हो गया। जिसमें एक अपार्टमेंट की पार्किंग में भीषण आग लग गई।इस आग की चपेट में आने की वजह से एक कार समेत पांच वाहन जलकर राख हो गए। मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की गाड़ी ने आग पर काबू पाया। इसी दौरान ऊपर के फ्लोर में एक महिला समेत फंसे दो बच्चों को भी रेस्क्यू किया गया। गनीमत रही कि इस घटना में कोई जनहानि नहीं हुई है। जानकारी के मुताबिक ग्रेटर नोएडा वेस्ट के शाहबेरी में स्थित एक अपार्टमेंट में आग लग गई। इस घटना में 5 वाहन जल गए। इसके अलावा महिला समेत 2 बच्चे ऊपर की मंजिल में फंसे हुए थे। सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने फायर ब्रिगेड की टीम के साथ मिलकर आग पर काबू पाया है। पुलिस को फायर ब्रिगेड के साथ मिलकर आग पर काबू पाने में तकरीबन 2 घंटे का वक्त लगा। फिलहाल इस घटना में कोई जनहानि नहीं हुई है। डीसीपी सेंट्रल नोएडा ने बताया कि थाना बिसरख क्षेत्र के मयूर गोल्ड अपार्टमेंट बालाजी एनक्लेव (शाहबेरी) में स्थित एक बिल्डिंग के ग्राउंड फ्लोर पर शार्ट सर्किट की वजह से आग लग गई। इस घटना में एक कार, दो बाइक, एक स्कूटी और एक स्कूटर जलकर राख हो गए।

भव्य और दिव्य होगा महाकुंभ, स्वच्छता और सुरक्षा व्यवस्थाओं पर सीएम योगी का विशेष ध्यान

प्रात: किरण, संवाददाता

प्रयागराज,। महाकुंभ 2025 को भव्य और दिव्य बनाने के लिए प्रयासरत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 27 नवंबर को स्वयं यहां चल रही तैयारियों का जायजा लेंगे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री महाकुंभ के लिए 238 करोड़ से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण भी करेंगे। इन परियोजनाओं में महाकुम्भ को स्वच्छ और सुरक्षित बनाने वाले विभिन्न उपकरणों के साथ-साथ नगर निगम में नवनिर्मित कंट्रोल रूम का अनावरण भी शामिल है। इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री स्वच्छाग्रहियों एवं सफाईकर्मियों को यूनिफॉर्म किट तथा नाविकों को लाइफ जैकेट समेत विभिन्न योजनाओं से भी लाभान्वित करेंगे। इससे पूर्व सीएम योगी विभिन्न धार्मिक स्थलों में चल रहे विकास कार्यों का जायजा भी लेंगे। उल्लेखनीय है कि योगी सरकार महाकुंभ को स्वच्छ और सुरक्षित महाकुंभ के तौर पर प्रस्तुत करने पर सर्वाधिक जोर दे रही है। इसी वजह से यहां विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है, जिसे सीएम स्वयं हरी झंडी दिखाएंगे। प्रयागराज दौरे पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ विभिन्न कार्यक्रमों में हिस्सा लेंगे। इसमें सबसे पहले सीएम नगर निगम कार्यालय में स्वच्छता परियोजनाओं की मॉनिटरिंग के लिए नवनिर्मित कंट्रोल रूम का अनावरण करेंगे। कंट्रोल रूम के साथ ही अन्य परियोजनाओं और सफाई उपकरणों को भी सीएम द्वारा लोकार्पित किया जाएगा। इन सभी परियोजनाओं की लागत करीब 14 करोड़ रुपए होगी। इसके अतिरिक्त सीएम योगी परेड मेला क्षेत्र में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में स्वच्छता उपकरणों (टिपर, कॉम्पैक्टर आदि) का भी अनावरण करेंगे, जिसकी कुल लागत 50.38 करोड़ रुपए है। यही नहीं, सीएम 173 करोड़ रुपए के फायर, जल पुलिस, रेडियो, यातायात के उपकरणों का भी अनावरण करेंगे। इस तरह सीएम योगी महाकुंभ 2025 में सुरक्षा, स्वच्छाग्रहियों एवं गंगा सेवा दूतों के लिए 237.38 करोड़ रुपए की परियोजनाओं का शुभारंभ करेंगे। इन उपकरणों के माध्यम से महाकुंभ को स्वच्छ और सुरक्षित बनाने में मदद मिलेगी। एक तरफ सीएम योगी स्वच्छता और सुरक्षा को मजबूत करने के लिए विभिन्न परियोजनाओं का अनावरण करेंगे तो दूसरी ओर वह महाकुंभ को स्वच्छ बनाने में जुटे स्वच्छाग्रहियों व सफाई कर्मियों को विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित भी करेंगे। इसके तहत सीएम योगी करीब 20 हजार स्वच्छाग्रहियों व सफाई मित्रों को यूनिफॉर्म किट तथा नाविकों को लाइफ जैकेट प्रदान करेंगे। इसी तरह, स्वच्छ कुंभ कोष के अंतर्गत 15 हजार से अधिक कर्मियों (10 हजार कार्मिक, 3 हजार नविक और अन्य) को 5 से अधिक योजनाओं से भी जोड़ने का काम करेंगे। इन योजनाओं के तहत कर्मियों को बीमा प्रमाण पत्र भी वितरित किए जाएंगे। इस अवसर पर सीएम योगी समेत गणमान्य अतिथि स्वच्छ कुम्भ एवं स्वच्छ प्रयागराज की परिकल्पना की शपथ भी लेंगे। प्रयागराज में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ विभिन्न विकास कार्यों का जायजा भी लेंगे।

संविधान दिवसः श्री वैंकटेश्वरा संस्थान में भारतीय संविधान का महत्व विषय पर संगोष्ठी

प्रात : किरण, संवाददाता

अमरोह।श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय में संविधान दिवस पर आम आदमी के अधिकारों में भारतीय संविधान का महत्व विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शानदार आयोजन किया गया। जिसमे वक्ताओं एवं कानूनविदों ने भारतीय संविधान में सभी के लिए समान अधिकारों की विशेषता बताते हुए इसे दुनिया का सबसे शक्तिशाली संविधान करार दिया। इसके साथ ही उपस्थित छात्र-छात्राओं को संविधान में निहित अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक करते हुए सभी से संविधान के अक्षरशः पालन एवं उसकी रक्षा की शपथ दिलायी गयी।श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय के बी. आर. अम्बेडर सेन्ट्रल सभागार में संविधान दिवस पर आयोजित आम आदमी के अधिकारों में संविधान का महत्व विषय पर आयोजित संगोष्ठी का शुभारम्भ संस्थापक अध्यक्ष श्री सुधीर गिरि, प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी, प्रधान सलाहकार प्रो. वी.पी. एस.अरोड़ा, कुलपति प्रो. (डा.) कृष्ण कान्त दवे, डीन मेडिकल डा. अतुल वर्मा, डा. मधु चतुवेर्दी आदि ने सरस्वती माँ की प्रतिमा के सन्मुख दीप प्रज्ज्वलित करके किया।अपने सम्बोधन में संस्थापक अध्यक्ष डा. सुधीर गिरि ने कहा कि आज दुनिया के सबसे मजबूत एवं शक्तिशाली संविधान में प्रत्येक व्यक्ति के लिए दिए गये अधिकारों के बल पर आम आदमी को भी देश के प्रधानमंत्री की तरह शिक्षा का अधिकार, समानता का अधिकार, स्वतन्त्रता का अधिकार, मतदान का अधिकार समेत तमाम समानता के अधिकार दिए गये है। प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी ने कहा कि राईट टू एजुकेशन जैसे शक्तिशाली मौलिक अधिकार के दम पर आज गरीब व्यक्ति का होनहार बच्चा भी महंगे पब्लिक स्कूल में बिल्कुल मुफ्त शिक्षा प्राप्त कर सकता है। संविधान दिवस पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को डा. राजेश सिंह, लॉ विभाग के डा. राजवर्धन सिंह एवं डा. मधु चतुवेर्दी आदि ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर डा. टी.पी.सिंह, डा. दिव्या गिरधर, डा. आशुतोष सिंह, डा. योगेश्वर सिंह, डा. अनिल जायसवाल, डा. शिल्पा रैना, डा. सीमा शर्मा एवं मेरठ परिसर से निदेशक डा. प्रताप सिंह एवं मीडिया प्रभारी विश्वास राणा आदि लोग सम्मिलित रहे।

राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन 3 दिसंबर को करेगी दिव्यांगों के उपकरण बांटने के लिये रजिस्ट्रेशन

- समय से रजिस्ट्रेशन करने वाले पात्रजनों को मिलेगा लाभः एम.आर.पाशा

प्रात : किरण संवाददाता, नादिर त्यागी

बिजनौर। राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन के द्वारा 3 दिसंबर को एजाज अली हाल नगर पालिका बिजनौर में किया जाएगा निशुल्क कंबल ट्राई साइकिल, व्हील चेयर, कैलिपर्स, बैसाखी, सिलाई मशीन वितरण के लिये रजिस्ट्रेशन। समय से रजिस्ट्रेशन करने वाले पात्रजनो को इसका लाभ मिलेगा।प्राप्त जानकारी के अनुसार राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एम आर पाशा ने प्रेस वार्ता करते हुए बताया कि कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी एक निशुल्क विशाल कैंप का आयोजन किया जाएगा। जिसमें भारी मात्रा में कंबल लिहाफ सिलाई मशीन, ट्राई साइकिल,व्हीलचेयर,कैलीपर्स, बैसाखी आदि का बड़ी तादाद में निशुल्क वितरण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सभी दिव्यांगजनों, गरीब वर्गों,विधवाओं,महिला वर्गों से अपील है कि अधिक से अधिक संख्या में 3 दिसंबर 2024 को एजाज अली हाल बिजनौर में पहुंच कर अधिक से अधिक संख्या में अपना रजिस्ट्रेशन कराये। जिससे हम ज्यादा से ज्यादा रजिस्ट्रेशन के आधार पर इन वर्गों को सभी सामान निशुल्क वितरण कर सके।

कांग्रेस व भाजपा ने संविधान को इसकी असली मंशा के हिसाब से लागू नहीं किया : मायावती

प्रात : किरण, संवाददाता

लखनऊ,। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने संविधान दिवस पर भाजपा और कांग्रेस पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि सत्ता में रहने वाली कांग्रेस व भाजपा ने संविधान को इसकी असली जनकल्याणकारी मंशा के हिसाब से लागू नहीं किया जो अति-दुखद है। बसपा मुखिया मायावती ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर मंगलवार को लिखा कि देश का संविधान कोई दिखावटी चीज नहीं बल्कि इसको दिल से अंगीकार करके उसके अनुरूप व्यवहार करना भी बहुत जरूरी है। खासकर भारतीय संविधान ह्लसर्वजन हिताय व सर्वजन सुखायह्व के मानवतावादी व कल्याणकारी उद्देश्यों को लेकर है ताकि यहां जात-पात मुक्त समतामूलक समाज की स्थापना हो व देश महान बने। उन्होंने आगे लिखा कि देश में संविधान लागू होने के इतने दशकों के बाद भी जमीनी स्तर पर सही व सच्चे सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक लोकतंत्र का अभाव यह साबित करता है कि यहाँ सत्ता में रहने वाली खासकर कांग्रेस व भाजपा ने संविधान को इसकी असली जनकल्याणकारी मंशा के हिसाब से लागू नहीं किया जो अति-दुखद है। बसपा प्रमुख ने लिखा कि दरिद्रता झेल रहे लगभग 140 करोड़ लोगों के भारत देश की पूंजी में विकास के जरिए जनता की गरीबी, बेरोजगारी एवं पिछड़ापन दूर करने के लिए जनहित व जनकल्याण का कार्य नहीं होकर, कुछ मुट्ठी भर लोगों का विकास होना यहां हर संतुलन को बिगाड़ने वाला है, जिससे बहु-अपेक्षित जनविकास कैसे संभव है? उन्होंने आगे लिखा कि आज संविधान दिवस पर बीएसपी संविधान की भूरि-भूरि प्रशंसा करती है किन्तु इसके मुख्य शिल्पी परमपूज्य बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर को सच्ची श्रद्धांजलि तभी संभव जब उनके करोड़ों शोषित-उपेक्षित अनुयायियों के जीवन में आरक्षण आदि के जरिए बेहतरी आएगी, जिसके लिए बीएसपी ही समर्पित है।

पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय में मनाया गया संविधान दिवस

प्रात : किरण संवाददाता, अवनीश त्यागी

अमरोहा। पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय में धूमधाम से मनाया गया संविधान दिवस। विद्यालय के प्राचार्य श्री एच एस जीना द्वारा बाबा साहब अंबेडकर के चित्र एवं संविधान की पुस्तक पर भी श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। प्रार्थना सभा में संपन्न हुए इस कार्यक्रम में अनेक छात्र-छात्राओं ने प्रतिभा किया जिनमें हिमांशी(मौलिक कर्तव्य) ,अंशिका(प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम), गुरदीप(संविधान की आत्मा प्रस्तावना एवं सभी को प्रतिज्ञा कराना), प्रीति (बाबा साहब अंबेडकर के जीवन पर प्रकाश डालना) आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का संचालन कृतिका द्वारा किया गया। विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक श्री राजेंद्र सर द्वारा भी संविधान दिवस पर प्रकाश डाला गया एवं संविधान का महत्व समझाया गया। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य महोदय द्वारा भी प्रार्थना सभा को संबोधित करते हुए अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना, देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाना एवं संविधान का सम्मान करना आदि जैसे आशीर्वचन द्वारा छात्रों को अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया। सीसीए प्रभारी लक्ष्मी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कला शिक्षक बृजेंद्र सर, मंच सज्जा करने वाली छात्राएं, संविधान की पुस्तक का निर्माण करने वाले छात्र हर्षित, कुशल एवं आरजू एवं विद्यालय के उप प्राचार्य आर के दिवाकर के सफल निर्देशन में यह कार्यक्रम अत्यंत हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

डेनमार्क राजदूत फ्रेडी स्वेन ने स्वतंत्रदेव सिंह से की भेंट, जल जीवन मिशन के कार्यो की जमकर की सराहना

प्रातः किरण संवाददाता

लखनऊ,। भारत में डेनमार्क के राजदूत फ्रेडी स्वेन ने अपने विदाई कार्यक्रम से पहले मंगलवार को उत्तर प्रदेश में पुराने परिचितों से भेंट मुलाकात की। राजदूत फ्रेडी स्वेन ने उत्तर प्रदेश के जलशक्ति मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह से शिष्टाचार भेंट करते हुए जल जीवन मिशन के कार्यो की जमकर सराहना की। जलशक्ति मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह ने डेनमार्क के राजदूत फ्रेडी स्वेन को स्मृति चिन्ह भेंट स्वरूप देकर उनका अभिवादन किया। जलशक्ति मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह ने डेनमार्क के राजदूत से हुई चर्चा के संबंध में हिन्दुस्थान समाचार से बताया कि आज सुबह मेरे सरकारी आवास पर डेनमार्क के राजदूत फ्रेडी स्वेन पधारें और उनसे तमाम बिन्दुओं पर चर्चा हुई। जिसमें उत्तर प्रदेश सहित देश में जल जीवन मिशन के कार्यो की चर्चा के दौरान उन्होंने जमकर सराहना किया। मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह ने बताया कि मैंने राजदूत फ्रेडी स्वेन से महानगरों में बह रही नदियों की चर्चा की। जिसमें दिल्ली में यमुना और लखनऊ में गोमती नदियों के जल के दूषित होने पर फ्रेडी स्वेन से सुझाव मांगा। जिस पर उन्होंने कहा कि इस संबंध में आपको वाट्सअप पर एक रिपोर्ट दूंगा। जिससे नदियों के जल को दूषित होने से बचाया जा सकेगा। जलशक्ति मंत्री ने बताया कि राजदूत फ्रेडी स्वेन ने मुझसे चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भी जमकर तारीफ की। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बारे में कहा कि आज भारत से डेनमार्क के अच्छे संबंध है। डेनमार्क सहित विश्व के सभी देशों के विकसित होने में भारत अच्छा संबंध निभाता है। इसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की महत्वपूर्ण भूमिका है। स्वतंत्रदेव सिंह ने बताया कि राजदूत फ्रेडी स्वेन ने जाते जाते वक्त तक कहा, एक - एक घर तक पानी पहुंचना चुनौती पूर्ण कार्य है। आप लोग जो घर तक पानी पहुंचा रहे हैं, ये बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। देश और उत्तर प्रदेश की विकास योजनाएं लोगों को ध्यान में रखकर बनायी जा रही हैं।

खाद ना नहीं मिलने से परेशान किसानों ने पीसीएफ केंद्र पर किया पथराव

हमीरपुर,। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर में मंगलवार को खाद न मिलने से परेशान किसानों ने पीसीएफ (प्रादेशिक कोआपरेटिव फेडरेशन) केंद्र पर पथराव कर दिया। इस दौरान उग्र किसानों ने खाद वितरण करा रहे एसडीएम और मंडी सचिव पर भी पथराव किया। वहीं, पथराव के बाद मौके पर बड़ी संख्या में पुलिसबलों को तैनात कर दिया गया है, जो हर गतिविधि पर पैनी नजर रख रहे हैं। इस दौरान पुलिसबल किसानों की समझाइश करते हुए भी दिखे। किसानों ने प्रशासन से कहा है कि अगर खाद की समस्याओं का समाधान नहीं किया गया, तो आगामी दिनों में प्रदर्शन और उग्र होगा। दूसरी ओर, कई किसानों ने पीसीएफ अधिकारियों पर लापरवाही बरतने का भी आरोप लगाया। किसानों ने कहा कि अधिकारियों द्वारा लापरवाही बरते जाने की वजह से उन्हें खाद नहीं मिल पा रहा है। बता दें कि पिछले कई दिनों से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश सहित कई देश के कई हिस्सों में किसान में खाद नहीं मिलने की वजह से रोष व्याप्त है। किसानों का कहना है कि बिचौलियों की वजह से उन्हें खाद नहीं मिल पा रहा है।

मेरठ में पुलिस मुठभेड़ के बाद तीन बदमाश गिरफ्तार

प्रातः किरण संवाददाता

मेरठ,। मेरठ जिले में पुलिस के साथ मुठभेड़ में एक इनामी अपराधी और उसका साथी पैर में गोली लगने से घायल हो गया ।

जिसके बाद दोनों घायल बदमाशों और उनके एक अन्य साथी को गिरफ्तार कर लिया गया।

पुलिस के एक अधिकारी ने मंगलवार की सुबह यह जानकारी दी।

अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) (नगर) आयुष विक्रम सिंह ने बताया कि सोमवार देर रात कंकरखेड़ा थाने की पुलिस की एक टीम लाला मोहम्मदपुर की तरफ जाने वाले मार्ग पर जांच कर रही थी।

जांच के दौरान मुखबिर से जानकारी मिली कि इनामी बदमाश मोनू उर्फ मोहन गिरी (गाजियाबाद) एक बाइक से अपने दो साथियों के साथ आ रहा है।

मोनू उर्फ मोहन गिरी ग्राम पोहल्ली निवासी लाखन सिंह (27) की आठ जून को अपहरण कर गोली मारकर हत्या करने के मामले में वांछित था। सिंह ने बताया कि पुलिस की टीम ने बाइक सवारों को रोकने का प्रयास किया, लेकिन वे भागने लगे। पुलिस ने बदमाशों का पीछा किया, तभी लाला मोहम्मदपुर की तरफ जाने वाले मार्ग पर बदमाशों ने पुलिस को निशाना बनाकर गोलीबारी शुरू कर दी।

पुलिस ने जवाबी गोलीबारी की जिसमें अभियुक्त मोनू उर्फ मोहन गिरी और सोहेल कुरैशी (मेरठ) पैर में गोली लगने से घायल हो गये।

उन्होंने बताया कि बदमाशों के एक अन्य साथी हारुन कुरैशी (गाजियाबाद) ने अंधेरे का लाभ उठाकर फरार होने की कोशिश की, लेकिन पुलिस ने घेराबंदी कर उसे भी पकड़ लिया। घायल अभियुक्तों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

पुलिस के अनुसार, गिरफ्तार तीनों अभियुक्त शातिर किस्म के अपराधी हैं।

इनमें अभियुक्त मोनू उर्फ मोहनगिरि के खिलाफ मेरठ के कंकरखेड़ा के अलावा गाजियाबाद के कई थानों में हत्या समेत गंभीर मामले दर्ज हैं। एएसपी ने बताया कि पुलिस को गिरफ्तार बदमाशों के कब्जे से दो तमंचे और बाइक बरामद हुई है। मामले में आगे की विधिक कार्रवाई की जा रही है।

अपार्टमेंट की पार्किंग में लगी आग, कार समेत 5 वाहन जलकर राख, महिला समेत 2 बच्चों का हुआ रेस्क्यू

प्रात : किरण संवाददाता

ग्रेटर नोएडा,। ग्रेटर नोएडा वेस्ट में एक बड़ा हादसा हो गया। जिसमें एक अपार्टमेंट की पार्किंग में भीषण आग लग गई। इस आग की चपेट में आने की वजह से एक कार समेत पांच वाहन जलकर राख हो गए। मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की गाड़ी ने आग पर काबू पाया। इसी दौरान ऊपर के फ्लोर में एक महिला समेत फंसे दो बच्चों को भी रेस्क्यू किया गया। गनीमत रही कि इस घटना में कोई जनहानि नहीं हुई है। जानकारी के मुताबिक ग्रेटर नोएडा वेस्ट के शाहबेरी में स्थित एक अपार्टमेंट में आग लग गई। इस घटना में 5 वाहन जल गए। इसके अलावा महिला समेत 2 बच्चे ऊपर की मंजिल में फंसे हुए थे। सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने फायर ब्रिगेड की टीम के साथ मिलकर आग पर काबू पाया है। पुलिस को फायर ब्रिगेड के साथ मिलकर आग पर काबू पाने में तकरीबन 2 घंटे का वक्त लगा। फिलहाल इस घटना में कोई जनहानि नहीं हुई है। डीसीपी सेंट्रल नोएडा ने बताया कि थाना बिसरख क्षेत्र के मयूर गोल्ड अपार्टमेंट बालाजी एनक्लेव (शाहबेरी) में स्थित एक बिल्डिंग के ग्राउंड फ्लोर पर शार्ट सर्किट की वजह से आग लग गई। इस घटना में एक कार, दो बाइक, एक स्कूटी और एक स्कूटर जलकर राख हो गए। उन्होंने बताया है कि ये घटना थाना बिसरख इलाके में हुई थी। डीसीपी ने बताया कि आग लगने के बाद तीसरे फ्लोर पर एक महिला के साथ दो बच्चे फंस गये थे। जिनको फायर यूनिट द्वारा सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है। आग को पूर्णरूप से बुझा दिया गया है। आग बुझाने के बाद पूरी तरीके से पुलिस ने यह सुनिश्चित किया की बिल्डिंग में कोई और फंसा हुआ तो नहीं है।

रायबरेली जिला कारागार में कैदियों की फरमाइश पूरी करेगा बंदी रेडियो

प्रात : किरण संवाददाता

रायबरेली,। उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिला कारागार में कैदियों के लिए बंदी रेडियो शुरू किया गया है। जिसमें कैदी फरमाइशी गीत भी सुन सकते हैं। शुरूआत कारागार परिसर में एक कार्यक्रम के जरिए की गई। बंदी रेडियो की खास प्रस्तुति के जरिए रेडियो पर भक्ति और देश भक्ति गीतों के अलावा फरमाइशी गानों का कार्यक्रम भी होगा। जेल प्रशासन के अनुसार इसका उद्देश्य बंदियों में कैद रहने के दौरान उनमें आ चुकी नकारात्मक सोच को समाप्त करना है। इसके जरिए बंदियों के मानसिक और शारीरिक विकास को बढ़ावा देने के साथ उन्हें समाज से जोड़ने की कोशिश करना है। बंदी रेडियो कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए जेल अधीक्षक अमन कुमार ने बताया कि यह रेडियो पब्लिक ऐड्रेस सिस्टम (पीए सिस्टम) के माध्यम से प्रसारित किया जाएगा। इसमें सुबह सबसे पहले राष्ट्रगान बजेगा। इसके बाद भक्ति संगीत और फिर दोपहर में फिल्मी गानों का प्रसारण होगा। वहीं शाम के समय बंदियों के फरमाइशी गीत बजेंगे। इसके लिये बैरकों से कार्यक्रम के नोडल डिप्टी जेलर रैंक के अधिकारी गानों का कलेक्शन कराएंगे फिर इन्हें बजाया जाएगा। अमन कुमार ने आगे कहा कि इसके लिए रेडियो जॉकी का काम वह बंदी करेंगे जो जेल में आने से पहले डीजे से जुड़े रहे हैं। जेल अधीक्षक ने बताया कि संगीत नकारात्मक ऊर्जा का क्षय करता है। इसी उद्देश्य के मद्देनजर रायबरेली जिला जेल में बंदी रेडियो की शुरूआत हुई है। बंदी रेडियो जेल के अंदर महिला अस्पताल एवं सभी बैरकों में लगाया जाएगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बंदियों को आत्मसम्मान और सामाजिक जिम्मेदारी का अहसास कराना है, ताकि वे अपने जीवन में सुधार ला सकें और समाज में फिर से अपने स्थान को हासिल कर सकें। ये पहली बार नहीं है, इससे पहले भी समय-समय पर जिला कारागार की ओर से अनूठी पहल देखने को मिलती रहती है।

सोनभद्र में युवती का अपहरण कर हाथ-पैर बांध वीडियो बनाकर घर वालों को भेजा, फिरौती मांगी

प्रात : किरण संवाददाता

सोनभद्र,। सोनभद्र जिले के म्योरपुर थाना क्षेत्र में एक युवती का अपहरण करने के बाद उसका हाथ पैर बांधे वीडियो बनाकर घर वालों को भेजकर फिरौती मांगने का मामला सामने आया है। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। म्योरपुर के थाना प्रभारी निरीक्षक (एसएचओ) हेमंत कुमार सिंह ने बताया कि थाना क्षेत्र के अंतर्गत एक गांव की 19 वर्षीय युवती के भाई के मोबाइल पर एक वीडियो भेजकर फिरौती की मांग की गयी है। उन्होंने घटना का सिलसिलेवार ब्योरा देते हुए बताया कि थाना क्षेत्र के एक गांव की निवासी महिला ने 22 नवंबर को पुलिस को सूचित किया कि उसकी बेटी 19 नवंबर को अपनी एक सहेली से मिलने गई थी, लेकिन वापस घर नहीं लौटी। एसएचओ ने बताया कि अपनी बेटी की काफी तलाश करने के बाद शिकायतकर्ता महिला ने विंढमगंज निवासी एक युवक पर उसे भगाने का आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज कराई। एसएसओ ने बताया कि शिकायत के आधार पर पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया, लेकिन मामले में नया मोड़ तब आया जब सोमवार को पीड़ित महिला के पुत्र के मोबाइल पर एक वीडियो आया जिसमें उसकी बेटी के हाथ पैर बंधे हुए दिख रहे हैं और वह अपने परिजनों से अपहरणकताओं को पैसे देकर खुद को छुड़ाने की गुहार लगा रही है। सिंह ने बताया कि पीड़ित ने पुलिस को सोमवार की शाम इस मामले से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि पुलिस मामले जांच कर रही है।

संक्षिप्त खबरें

चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी से भारत के मुस्लिम चिंतित : मौलाना शहाबुद्दीन रजवी बरेलवी

बरेली, । बांग्लादेश में इस्कॉन पुंडरीक धाम के अध्यक्ष चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी पर विरोध जारी है। इस बीच ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना शहाबुद्दीन रजवी बरेलवी ने भी चिन्मय दास की गिरफ्तारी की निंदा की है। उन्होंने बांग्लादेश की अंतरिम सरकार और भारत सरकार से अपील की है कि वहां अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचार को लेकर हस्तक्षेप करें। मौलाना शहाबुद्दीन रजवी बरेलवी ने मांग करते हुए कहा कि चिन्मय दास को बांग्लादेश सरकार फौरन रिहा करे। भारत सरकार बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचार पर हस्तक्षेप करे। बांग्लादेश में ऐसे हालात तब हुए हैं, जबसे शेख हसीना की सरकार हटाई गई है। उनकी जगह मोहम्मद यूनुस को सत्ता मिली है। उनके सत्ता में आते ही अल्पसंख्यकों पर अत्याचार शुरू हो गया है। उसी सिलसिले में सनातनी चेतना के मुखिया को ढाका से गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ्तारी से भारत के मुस्लिम चिंतित हैं। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश सरकार की इस हरकत से एक गलत संदेश जा रहा है। बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों को सुरक्षा दी जाए। उन पर जो जुल्म हो रहे हैं, वो रुकें। उसके लिए बांग्लादेश और भारत सरकार को दखल देना चाहिए। वहीं, भारत के विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को एक बयान जारी कर चिन्मय दास की गिरफ्तारी और जमानत नहीं दिए जाने पर गहरी चिंता जताई है।

आजमगढ़ पुलिस ने साइबर ठगी करने वाले अंतरराष्ट्रीय संगठित गैंग का पदार्फाश किया, 11 आरोपी गिरफ्तार

आजमगढ़, । आजमगढ़ पुलिस ने 190 करोड़ की साइबर ठगी करने वाले अंतरराष्ट्रीय संगठित गैंग का पदार्फाश करते हुए 11 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इस मामले में कुल 169 बैंक खातों में करीब 2 करोड़ रुपए फ्रीज किए गए हैं। पुलिस का कहना है कि अन्य ट्रांजेक्शन का भी पता लगाया जाएगा। मामले की जांच की जा रही है। एसपी हेमराज मीणा ने पुलिस लाइन सभागार में मंगलवार को बताया कि आजमगढ़ जिले में स्वाट टीम और साइबर टीम के संयुक्त ऑपरेशन में जिले में चल रहे ऑनलाइन जुआ गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए 11 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

उत्तर प्रदेश: संभल में हालात पहले से बेहतर, स्कूल खुले

संभल, । उत्तर प्रदेश के संभल जिले में विवादित जामा मस्जिद परिसर में रविवार को सर्वे के दौरान भड़की हिंसा के तीसरे दिन मंगलवार को हालात में सुधार देखने को मिला और स्कूल खोल दिये गये। इस हादसे से उबरने की कोशिश में जुटे हिंदू और मुस्लिम समाज के लोग घटना को भूलकर अब संभल को विकास की राह पर ले जाने और सामाजिक सदभाव व आपसी एकता पर जोर दे रहे हैं। संभल में रविवार को जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान हालत खराब हो गये और पत्थरबाजी व आगजनी की घटना में चार लोगों की मौत हो गयी। इस घटना में करीब 20 लोग घायल भी हुए थे।पुलिस ने इस संबंध में सोमवार को 25 लोगों को गिरफ्तार किया था और इस दौरान बाजार बंद रहे थे हालांकि कई इलाकों में दुकानें खुली देखी गईं।

संभल की हिंसा को स्वीकारा नहीं जा सकता: नरेंद्र कश्यप

मैनपुरी, । पिछड़ा वर्ग एवं दिव्यांग कल्याण राज्यमंत्री और जनपद मैनपुरी के प्रभारी मंत्री नरेंद्र कश्यप ने मंगलवार को संभल की घटना और खाद के मुद्दे पर बयान दिया है। नरेंद्र कश्यप ने मैनपुरी में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए एक सवाल के जवाब में कहा कि मैनपुरी में सोमवार से हम हैं और हम गांव में भी गए हैं। हालांकि, किसानों से नहीं मिले हैं, लेकिन कोई मिलता है तो हम उससे हमेशा मिलते हैं। जहां भी डीएपी की समस्या होगी उसे हम दूर कराएंगे। परसों हम शाहजहांपुर में थे, वहां के कुछ किसान हमसे मिले थे। कुछ किसानों ने हमसे शिकायत की थी कि हमको डीएपी नहीं मिली है। इसके बाद हमने जनपद के संबंधित अधिकारियों से बात करके कल ही खाद (डीएपी) की व्यवस्था कराई थी। यदि मैनपुरी में भी खाद की समस्या है तो हमें बताइए। हम उसको दूर कराएंगे। संभल की घटना को नरेंद्र कश्यप ने दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि हमारी भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था तीन ध्रुवों पर चलती है न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका। न्यायपालिका हमारे लोकतंत्र का सबसे सर्वोत्तम घटक है। यदि न्यायालय के निर्णय पर लोग आपत्ति करेंगे, लोग विरोध करेंगे या दंगा करने का प्रयास करेंगे, मैं समझता हूं कि यह भारतीय समाज के लिए एक चिंता की बात है। संभल की जनता को न्यायालय का सम्मान करते हुए न्यायालय के निर्देश के क्रम में जो कार्रवाई आगे बढ़नी है, उसमें साथ देना चाहिए।

कांग्रेस ने संविधान का गला घोंटा, अंबेडकर के संविधान में नहीं थे सेक्युलर और समाजवादी : सीएम योगी

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ, । संविधान दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लोकभवन में आयोजित समारोह के दौरान संविधान की उद्देशिका का पाठन कराया और संविधान निमार्ताओं को नमन किया। मुख्यमंत्री ने भारत के संविधान को दुनिया का सबसे विस्तृत और सशक्त संविधान बताया। कहा कि बाबा साहब ने सबसे पहले संविधान के रूप में एक भारत श्रेष्ठ भारत की आधारशिला रखी थी। इस दौरान सीएम योगी ने कांग्रेस पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि संविधान की उद्देशिका से छेड़छाड़ कर कांग्रेस ने भारत के संविधान का गला घोंटा है। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर ने जो संविधान 26 नवंबर 1949 को दिया था सेक्युलर और समाजवादी शब्द नहीं थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संविधान दिवस पर प्रदेशवासियों को बधाई देते हुए कहा कि यह दिन हमें अपने लोकतंत्र और संविधान की महानता का स्मरण कराता है। उन्होंने बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर को भारत का सच्चा सपूत बताते हुए कहा कि उनकी अगुवाई में बनी संविधान सभा की ड्राफ्टिंग कमेटी ने न्याय, समता और बंधुता जैसे मूल्यों को संविधान में शामिल कर देश को एक सशक्त भविष्य दिया। उन्होंने बताया कि 15 अगस्त 1947 को देश की आजादी के बाद 1946 में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की मांग पर संविधान सभा का गठन हुआ था। संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर 1946 को हुई, जिसमें डॉ. राजेंद्र प्रसाद को अध्यक्ष चुना गया। 13 समितियों के माध्यम से संविधान निर्माण का कार्य किया गया, जिसमें ड्राफ्टिंग कमेटी का नेतृत्व बाबा साहब डॉ. अंबेडकर ने किया। संविधान निर्माण के लिए 13 कमेटियों के बहस और फिर उसके महत्वपूर्ण अंशों को संविधान में शामिल किया गया, मुख्यमंत्री ने इन बहसों को संविधान का सार बताते हुए कहा कि विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका को इनसे मार्गदर्शन लेना चाहिए। सीएम योगी ने भारत के लोकतंत्र की तारीफ करते हुए कहा कि भारत का संविधान हर जाति, मत और मजहब के व्यक्ति को समान मताधिकार देता है। जब दुनिया के अन्य लोकतंत्रों में भेदभाव जारी था, भारत ने पहले ही आम चुनाव में हर वयस्क नागरिक को वोट देने का अधिकार दिया। यह बाबा साहब अंबेडकर और संविधान सभा की दूरदर्शिता का परिणाम है। संविधान दिवस का यह आयोजन प्रदेशवासियों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों की महत्ता को समझाने और लोकतंत्र के प्रति उनकी आस्था को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कांग्रेस पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि संविधान की उद्देशिका से छेड़छाड़ कर कांग्रेस ने संविधान का गला घोंटा है। कांग्रेस ने संविधान के मूल स्वरूप को बदलने का प्रयास किया और देश की जनता के विश्वास को ठेस पहुंचाई। यह भाजपा की सरकार है जिसने संविधान के प्रति लोगों की आस्था को मजबूत किया। सीएम योगी ने कहा कि जिन लोगों ने भारत के संविधान का गला घोंटने का काम किया था जनता ने उनको भी सबक सिखाने में कोई कोताही नहीं बरती है। उन्होंने कहा कि किसी भी संविधान या किसी भी पवित्र कार्यक्रम की आत्मा उसका उद्देश्य होता है, भारत का जो मूल संविधान बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर ने 26 नवंबर 1949 को दिया जिसे भारत ने अंगीकार किया था, उसमें दो शब्द सेक्युलर और समाजवादी शब्द भी नहीं था।

ग्रेटर नोएडा : सोफा बनाने की फैक्ट्री में लगी आग, तीन लोगों की जलकर मौत

प्रात: किरण, संवाददाता

ग्रेटर नोएडा, । ग्रेटर नोएडा के बीटा 2 इलाके में एक सोफा बनाने की फैक्ट्री में भीषण आग लग गई। मौके पर पहुंची दमकल की गाड़ियों ने आग पर काबू पाया और आग बुझाने के बाद अंदर सर्च ऑपरेशन चलाया गया। इस दौरान तीन व्यक्ति अंदर गंभीर हालत में मिले। जिन्हें अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। बताया गया है कि तीनों इसी फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूर थे और आग लगने के दौरान यहां मौजूद थे। पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया है कि 26 नवंबर को थाना बीटा 2 क्षेत्र के अंतर्गत साइट फॉर फैक्ट्री नंबर 4 जी में आग लग गई। यहां सोफा बनाने का काम होता है। आग लगने की सूचना पर तत्काल स्थानीय पुलिस व फायर स्टेशन की गाड़िया मौके पर पहुंची और फायर यूनिट द्वारा आग पर काबू पा लिया गया है। जिसके बाद स्थानीय पुलिस व फायर ब्रिगेड द्वारा सर्च ऑपरेशन चलाया गया। जिन तीन व्यक्तियों की मृत्यु हुई है, उनके शव को पोस्टमार्टम के लिये भेजा गया है। पुलिस ने मृतकों की पहचान कर ली है और उनकी जानकारी साझा कर दी है। इनमें गुलफाम (23), थाना राया जिला मथुरा, मजहर आलम (29), थाना बारसोई जिला कटिहार बिहार और दिलशाद (24) निवासी अरहरिया बिहार की पहचान हुई है। एडीसीपी अशोक कुमार ने बताया कि आग लगने की सूचना पर पुलिस बल और फायर ब्रिगेड के लोग मौके पर पहुंचे। उन्होंने आग पर काबू पाया और सर्च ऑपरेशन के दौरान अंदर तीन व्यक्ति मृत अवस्था में मिले। उन्होंने बताया कि यह तीनों इसी फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूर हैं और आग लगने के दौरान यह अंदर ही मौजूद थे। उनके परिजनों को सूचना दे दी गई है। फायर ऑफिसर द्वारा फैक्ट्री में आग लगने के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

सात बार विधायक रहे दादा श्यामदेव चौधरी का निधन

प्रात: किरण, संवाददाता

वाराणसी, । वाराणसी में शहर दक्षिणी विधानसभा क्षेत्र से सात बार से भाजपा विधायक श्याम देव राय चौधरी दादा का मंगलवार को निधन हो गया। ओरियाना अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। वे काफी दिनों से अस्वस्थ थे। बीते मंगलवार को ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनका हालचाल जाना था। यह जानकारी शहर दक्षिणी विधायक डॉ. नीलकंठ तिवारी ने दी। उन्होंने बताया कि श्याम देव राय चौधरी पूर्वांचल के गांधी कहे जाते थे। वह क्षेत्र में विकास और सजगता के लिए हमेशा याद किए जाएंगे। विधायक ने बताया कि दादा श्याम देव राय चौधरी को ब्रेन हेमरेज की वजह से अस्पताल में भर्ती कराया गया था। वहां पर उनका इलाज चल रहा था। तिवारी ने बताया कि परिजनों ने मुझे जानकारी दी, जिसके बाद सीएमओ और प्रशासनिक अधिकारियों से वार्ता कर रविंद्रपुरी स्थित ओरियाना हॉस्पिटल में भर्ती कराया, जहां उनका इलाज चल रहा था। बीते दिनों मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित तमाम शीर्ष नेताओं ने श्याम देव राय चौधरी से अस्पताल में मुलाकात की थी। कुछ समय के लिए मंत्री रहे ह्यदादाह्न जनता में काफी लोकप्रिय थे और भाजपा के काशी क्षेत्र के बड़े चेहरे के रूप में उनकी पहचान थी। 2017 में उनकी उम्र को देखते हुए पार्टी ने उन्हें टिकट नहीं दिया था। इसके पहले उन्होंने वाराणसी दक्षिणी पर लगातार सात बार जीत हासिल की थी।

संविधान दिवस सच्चे मन से निभाने वाला फर्ज, कोई दिखावटी सालाना जलसा नहीं: अखिलेश यादव

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ, । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संविधान की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि संविधान ही संजीवनी है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर तंज कसते हुए लिखा, संविधान को मानना और उसके दिखाए रास्ते पर चलना ही सबसे बड़ा उत्सव है। ये हर दिन सच्चे मन से निभाने वाला फर्ज है, कोई दिखावटी सालाना जलसा नहीं। एक तरफ भाजपा संविधान को ताक पर रखकर मनमानी करना चाहती है, तो दूसरी तरफ दिखावा करना चाहती है। भाजपा का ये राजनीतिक दोहरापन देश और देशवासियों के लिए घातक है। जब संविधान के मान-सम्मान और उसे व्यवहार में लाने के संबंध में हालात बद से बदतर हो रहे हैं, संविधान का हर दिन तिरस्कार-अपमान हो रहा है, ऐसे में उत्सव मनाना हमारे सिद्धांतों के खिलाफ है। उत्सव में ढोंग नहीं होना चाहिए। इससे पहले, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संविधान की 75वीं वर्षगांठ पर अपने संदेश में कहा, भारतीय संविधान की 75वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को संविधान दिवस की शुभकामनाएं। संविधान दिवस भारत के संविधान को अपनाने के उपलक्ष्य में 26 नवंबर को प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इस दिन 1949 में भारत की संविधान सभा ने संविधान को अपनाया था, जो 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। साल 2015 में बाबा साहब अंबेडकर की 125 वीं जयंती के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा मुंबई में स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी की आधारशिला रखते हुए हर साल संविधान दिवस मनाने घोषणा की गई थी। जिसके बाद 19 नवंबर 2015 को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने नागरिकों के बीच संविधान में निहित मूल्यों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 26 नवंबर को ह्यसंविधान दिवसह्न के रूप में मनाने के भारत सरकार के निर्णय की घोषणा की थी।

उन्नाव में गंगा नदी पर बने ब्रिटिशकालीन पुल का एक हिस्सा गिरा

प्रात: किरण, संवाददाता

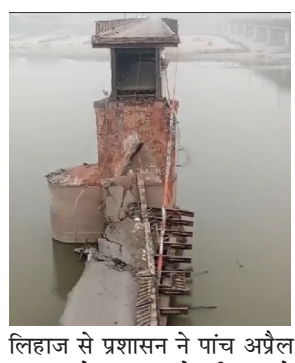

उन्नाव। पिछले चार वर्षों से बंद ब्रिटिश काल में बना और कानपुर–उन्नाव को जोड़ने वाला ऐतिहासिक गंगा पुल का एक हिस्सा मंगलवार तड़के अचानक गंगा नदी में गिर गया। हालांकि इससे कोई जनहानि नहीं हुई। स्थानीय लोगों ने यह जानकारी दी। वर्ष 2021 में पुल की स्थिति खराब होने के बाद इसको आवागमन के लिए बंद कर दिया गया था जिससे पुल के गिरने के दौरान किसी तरह की कोई अनहोनी नहीं हुई। स्थानीय निवासी आशू अवस्थी ने बताया कि मंगलवार भोर में दो बजे के बाद पुल के दो खंभों के बीच का हिस्सा गंगा में गिर गया। स्थानीय निवासियों का दावा है यह पुल 1874 में अवध एंड रूहेलखंड रेलवे लिमिटेड कंपनी द्वारा बनाया गया था। स्थानीय निवासी पंडा राजू ने बताया कि पुल को 2021 में दरारें आने के बाद यातायात के लिए बंद कर दिया गया था। स्थानीय लोगों ने बताया कि कानपुर की तरफ से 2, 10, 17 और 22 नंबर की कोठियों में गहरी दरारें पाई गई थीं जिसके चलते सुरक्षा के लिहाज से प्रशासन ने पांच अप्रैल 2021 को इस पुल को पूरी तरह से बंद कर दिया था। पुल बंद करते समय पुल के दोनों ओर दीवारें बनाकर इसे सील किया गया था। पुल का गिरा हुआ हिस्सा भोर पहर गंगा नदी में समा गया। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने पुल की स्थिति के वीडियो बनाए और उन्हें सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया। गंगा किनारे रहने वाले कृष्ण कुमार ने बताया कि कुछ अधिकारी सुबह आए थे जिन्होंने टूटे हिस्से के पास जाकर कुछ देर रुक कर मुआयना किया और उसके बाद वापस चले गए। इस मामले में अभी कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है।

हाशमी डिग्री कालेज में संविधान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

प्रात: किरण, संवाददाता

अमरोहा। हाशमी गर्ल्स पी0जी0 कालेज में संविधान दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओ को संविधान के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया। छात्राओं को संबोधित करते हाशमी एजुकेशनल ग्रुप के चेयरमैन व कालेज प्रबंधक डा0 सिराज उद्दीन हाशमी ने कहा कि 26 नवम्बर 1949 को हमारे मुल्क हिन्दुस्तान का संविधान बनकर तैयार हुआ था। इसे संविधान सभा द्वारा अंगीकृत किया गया। जबकि देश में 26 जनवरी 1950 को इसे लागू किया गया। संविधान दिवस हर साल 26 नवंबर को मनाया जाता है, जिस दिन भारत के संविधान मसौदे को अपनाया गया था। 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू होने से पहले 26 नवंबर 1949 को इसे अपनाया गया था। संविधान सभा के सदस्यों का पहला सेशन 9 दिसंबर 1947 को आयोजित हुआ। इसमें संविधान सभा के 207 सदस्य थे। संविधान की ड्रॉफ्टिंग कमेटी के अध्यक्ष डॉ बी आर अंबेडकर थे। इन्हें भारत के संविधान का निमार्ता भी कहा जाता है। सविधान सभा के सदस्यों ने हाथ से लिखी गई दो कॉपियों (हिंदी और अंग्रेजी) पर हस्ताक्षर किए। सरकार ने 19 नवंबर, 2015 को राजपत्र अधिसूचना की सहायता से 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में घोषित किया था।कालेज प्राचार्या डा0 रिजवाना कुलसुम ने कहा कि भारत के संविधान निमार्ता डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भारतीय संविधान के रूप में दुनिया का सबसे बड़ा संविधान तैयार किया है। यह दुनिया के सभी संविधानों को परखने के बाद बनाया गया था। इसे विश्व का सबसे बड़ा संविधान माना जाता है। जिसमें 448 अनुच्छेद, 12 अनुसूचियां और 94 संशोधन शामिल हैं। यह हस्तलिखित संविधान है जिसमें 48 आर्टिकल हैं। इसे तैयार करने में 2 साल 11 महीने और 17 दिन का वक्त लगा था। इसके लिए 29 अगस्त 1947 को भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने वाली समिति की स्थापना की गई थी और इसके अध्यक्ष के तौर पर डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की नियुक्ति हुई। राजनीति विभागध्यक्ष डॉ बबिता सिंह ने छात्राओ को जानकारी देते बताया कि संविधान का मसौदा तैयार करने वाली समिति हिंदी और अंग्रेजी दोनों में ही हस्तलिखित और कॉलीग्राफ्ड थी। इसमें किसी भी तरह की टाइपिंग या प्रिंट का इस्तेमाल नहीं किया गया था। संविधान सभा के 284 सदस्यों ने 24 जनवरी 1950 को दस्तावेज पर हस्ताक्षप किए। दो दिन बाद इसे लागू किया गया था। संविधान दिवस मनाने का मकसद नागरिकों को संविधान के प्रति सचेत करना, समाज में संविधान के महत्व का प्रसार करना है। इस अवसर पर कालेज का समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

खाद ना नहीं मिलने से परेशान किसानों ने पीसीएफ केंद्र पर किया पथराव

हमीरपुर, । उत्तर प्रदेश के हमीरपुर में मंगलवार को खाद न मिलने से परेशान किसानों ने पीसीएफ (प्रादेशिक कोआपरेटिव फेडरेशन) केंद्र पर पथराव कर दिया। इस दौरान उग्र किसानों ने खाद वितरण करा रहे एसडीएम और मंडी सचिव पर भी पथराव किया। वहीं, पथराव के बाद मौके पर बड़ी संख्या में पुलिसबलों को तैनात कर दिया गया है, जो हर गतिविधि पर पैनी नजर रख रहे हैं। इस दौरान पुलिसबल किसानों की समझाइश करते हुए भी दिखे। किसानों ने प्रशासन से कहा है कि अगर खाद की समस्याओं का समाधान नहीं किया गया, तो आगामी दिनों में प्रदर्शन और उग्र होगा। दूसरी ओर, कई किसानों ने पीसीएफ अधिकारियों पर लापरवाही बरतने का भी आरोप लगाया। किसानों ने कहा कि अधिकारियों द्वारा लापरवाही बरते जाने की वजह से उन्हें खाद नहीं मिल पा रहा है। बता दें कि पिछले कई दिनों से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश सहित कई देश के कई हिस्सों में किसान में खाद नहीं मिलने की वजह से रोष व्याप्त है। किसानों का कहना है कि बिचौलियों की वजह से उन्हें खाद नहीं मिल पा रहा है।

संभल हिंसा में शामिल लोगों पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए : देवकीनंदन ठाकुर

प्रात: किरण, संवाददाता

मथुरा। प्रसिद्ध कथावाचक देवकीनंदन ठाकुर ने सोमवार को उत्तर प्रदेश के संभल की घटना पर प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा है कि जो लोग हिंसा में शामिल थे, उन पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। उन्होंने एक वीडियो जारी कर कहा है कि संभल में जो हिंसा हुई है वह उचित नहीं है और आज हिंदुओं और सनातनियों में यही डर है कि अगर 2024 में जांच एजेंसियां अदालत के आदेश पर जांच करने जाए तो हिंसा भड़क सकती है और मौतें हो सकती हैं। कल्पना कीजिए कि 2044 में क्या हो सकता है। इसलिए जनसंख्या नियंत्रण होना चाहिए। हम इसलिए सनातन बोर्ड की मांग कर रहे हैं। कम से कम हम अपने सनातनी स्थानों को बचा सकेंगे। उन्होंने कहा,मेरी एक प्रार्थना है कि जो हिंसा में शामिल हैं उन्हें इतनी बड़ी सजा मिलनी चाहिए जिससे वे भविष्य में ऐसा करने की सोच भी न सकें। सभी सनातनियों से कह रहे हैं कि सनातन बोर्ड की गहराई को समझें। इस बोर्ड के पीछे के उद्देश्य को समझिए। हम सब मिटते हुए भारत को नहीं देख सकते हैं। हम लोग उभरते हुए भारत को देखना चाहते हैं। अगर हम भारत को आगे बढ़ते देखना चाहते हैं तो इसके लिए बहुत जरूरी है कि ऐसी विचारधारा का हनन होना चाहिए, उन पर विराम लगना चाहिए। प्रसिद्ध कथावाचक देवकीनंदन ठाकुर ने संभल घटना पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट किया। पोस्ट में उन्होंने लिखा है कि भारत में कई ऐसे जिले और गलियां हैं, जहां पुलिस प्रशासन और हाई कोर्ट का ऑर्डर भी नहीं जा सकता है। संभल एक छोटी पिक्चर है। इसीलिए एक होकर ह्यसनातन बोर्डह्न की मांग कीजिए, वरना जो संभल में हुआ वह कल आपकी अपनी गली में भी हो सकता है। इन सभी से एक मजबूत सनातन बोर्ड ही बचाएगा।

संभल में हिंसा के बाद सामान्य हुए हालात, दुकानदारों ने खोली अपनी दुकानें

प्रात: किरण, संवाददाता

संभल, । संभल में रविवार को शाही जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान भड़की हिंसा के बाद अब हालात सामान्य होने लगे हैं। संभल जिले में मंगलवार सुबह को मार्केट खुल गई है और दुकानों पर लोग सामान खरीदते हुए दिखाई दे रहे हैं। दुकानदार प्रदीप कुमार ने बताया कि मेरी दुकान काफी पुरानी है और सोमवार को ही दुकान को खोल दिया गया था। हालांकि, अभी दुकानों पर खरीददारी करने वाले ग्राहकों की कमी है। दुकानदार सुरेश चंद ने कहा कि सोमवार को ही बाजार खुल गया था। अभी जिले में हालात सामान्य हैं। आज और अधिक दुकानें खुलने से बाजार में ग्राहकों के आने की उम्मीद है। प्रशासन ने घटना के बाद हालात पर अच्छे से काबू किया। पुलिस की ओर से भी आश्वासन दिया गया है। दुकानदार मोहित राज ने बताया कि मेरे पूर्वजों ने दुकान को शुरू किया था और अभी तीसरी पीढ़ी दुकान को संभाल रही है। संभल एक अच्छा शहर है, लेकिन यहां हिंदू-मुस्लिम एकता पर ग्रहण लग जाता है। हमें उम्मीद है कि शहर के हालात संभलेंगे और ग्राहकों की रौनक फिर से बाजारों में दिखाई देगी। मनोज भारद्वाज ने कहा कि हमारी दुकान पिछले 40 सालों से चल रही है। रविवार की घटना के बाद अब जिले के हालात सामान्य हैं और लोग खरीददारी के लिए भी आ रहे हैं। दुकानदार मुजाहिद अंसारी ने कहा कि सोमवार को चिंताजनक माहौल था, लेकिन मंगलवार को हालात सामान्य हो गए हैं। पुलिस की तरफ से भी दुकानदारों को आश्वासन दिया गया है। अब धीरे-धीरे लोग खरीददारी करने के लिए आ रहे हैं। उल्लेखनीय है कि रविवार (24 नवंबर) की सुबह संभल की शाही जामा मस्जिद का सर्वेक्षण किया गया था। इस दौरान मस्जिद के पास अराजक तत्वों ने सर्वेक्षण टीम पर पथराव कर दिया। देखते ही देखते माहौल बिगड़ता चला गया। पुलिस ने हालात को काबू करने के लिए आंसू गैसे के गोले छोड़े और अराजक तत्वों को चेतावनी भी दी। हालांकि, हिंसा के दौरान चार लोगों की मौत हो गई।

कृपालु महाराज की बेटी की सड़क हादसे में मौत के मामले में आरोपी कैंटर चालक, परिचालक गिरफ्तार

प्रात: किरण, संवाददाता

नोएडा, । उत्तर प्रदेश के वृंदावन स्थित प्रेम मंदिर के संस्थापक कृपालु महाराज की बेटी की कार में दो दिन पहले टक्कर मारने के आरोपी कैंटर चालक और परिचालक को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि दनकौर थाना क्षेत्र में रविवार को सड़क हादसे में कृपालु महाराज की बड़ी बेटी डॉ. विशाखा त्रिपाठी (78) की मौत हो गई थी। घटना के बाद आरोपी कैंटर चालक सोनू और परिचालक बबलू उर्फ उपेंद्र कुमार फरार हो गए। दोनों आरोपी फिरोजाबाद जिले के निवासी हैं। दनकौर पुलिस ने सोनू को मंगलवार को गिरफ्तार किया जबकि परिचालक को सोमवार को गिरफ्तार किया गया था। दनकौर के थाना प्रभारी निरीक्षक मुनेंद्र कुमार ने बताया कि मंगलवार को तड़के चालक सोनू की गिरफ्तारी हुई। उससे पूछताछ की जा रही है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के द्वारका में सेक्टर-10 की निवासी डॉ. विशाखा त्रिपाठी, उनकी बहनें डॉ. श्यामा त्रिपाठी व डॉ. कृष्णा त्रिपाठी रविवार को तड़के मथुरा के वृंदावन से दिल्ली के लिए चली थीं। उनके साथ चालक संजय मलिक व अनुयायी मथुरा निवासी हंसा पटेल, प्रतापगढ़ निवासी कंचन उर्फ कश्मीरा, दिल्ली निवासी गरिमा, दिल्ली निवासी दीपक भरेजा भी थे। ये सभी सिंगापुर जाने के लिए वृंदावन से दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा जा रहे थे। दनकौर कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत यमुना एक्सप्रेस-वे पर रविवार तड़के फिरोजाबाद से तेज गति से करनाल जा रहे एक कैंटर ने डॉ. विशाखा त्रिपाठी के काफिले में शामिल ह्यटोयोटा कैमरी, इनोवा, हायक्रॉसह्न कारों को टक्कर मार दी। हायक्रॉस कार बायीं ओर क्रैश बैरियर पर चढ़ गई थी। वहीं, कैंटर इनोवा कार के आगे खड़ी टोयोटा कैमरी कार पर चढ़ गया था। इससे टोयोटा कैमरी में सवार डॉ. विशाखा त्रिपाठी उसमें दब गईं। अन्य कारों में सवार डॉ. श्यामा त्रिपाठी व डॉ. कृष्णा त्रिपाठी के अलावा चालक संजय, दीपक भरेजा, गरिमा गुप्ता, हंसा पटेल, कंचन पटेल घायल हो गई थीं। दिल्ली के अपोलो अस्पताल में इलाज के दौरान डॉ. विशाखा त्रिपाठी की मौत हो गई। उनकी दोनों बहनें भी दिल्ली के अपोलो अस्पताल में भर्ती हैं और कंचन पटेल ग्रेटर नोएडा के ओमेगा-1 स्थित कैलाश अस्पताल में भर्ती हैं। तीनों महिलाओं की हालत गंभीर बनी हुई है, जबकि चालक दीपक भरेजा, अनुयायी गरिमा गुप्ता, हंसा पटेल की हालत सामान्य बताई जा रही है। वहीं, हादसे में घायल पटेल के सिर की सर्जरी की गई है। उनके सीने में भी गहरी चोट आई है। अभी वह वेंटिलेटर पर हैं और उनकी हालत नाजुक बनी हुई है। पुलिस ने मामले में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 281 (लापरवाही से वाहन चलाने), 125 ए (मानव जीवन या व्यक्तिगत सुरक्षा को खतरे में डालना), धारा 106 (1) (लापरवाही से वाहन चलाने के कारण किसी व्यक्ति की मृत्यु), धारा 125 बी (किसी व्यक्ति की जान या व्यक्तिगत सुरक्षा को जानबूझकर खतरे में डालने वाला कार्य), धारा 324 (2) (शरारती कार्य से व्यक्ति को क्षति पहुंचाने) के तहत मामला दर्ज किया है। घटना के बाद क्षतिग्रस्त कारों और कैंटर का एक वीडियो भी सामने आया है। 51 सेकेंड के वीडियो में देखा जा सकता है कि इनोवा, हायक्रॉस को टक्कर मारने के बाद कैंटर टोयोटा कैमरी पर गिरा पड़ा है। वीडियो में तेज टक्कर के कारण दोनों कारें बुरी तरह से क्षतिग्रस्त नजर आ रही हैं, जबकि कारों के पास मौजूद लोग और पुलिसकर्मी राहत और बचाव कार्य में जुटे दिख रहे हैं।

तेलुगु फिल्म कनप्पा में नजर आएंगे अक्षय कुमार

अक्षय कुमार तेलुगु फिल्म में कैमियो करने जा रहे हैं। फिल्म कनप्पा के पहले पोस्टर और रिलीज डेट से पर्दा उठ गया है। ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अगले साल दस्तक देगी।

शिव के किरदार में नजर आए अक्षय कुमार

अक्षय कुमार की फिल्म कनप्पा की पहली झलक सामने आ गई है। लगभग पांच महीने पहले भी इस फिल्म के टीजर में अक्षय कुमार की झलक नजर आई थी। जिसे देखकर लगा कि वह फिल्म कनप्पा में भगवान शिव की भूमिका निभाएंगे। फिल्म की पहली झलक के साथ ही अक्षय कुमार ने इसकी रिलीज डेट का खुलासा किया है। पांच भाषाओं में रिलीज होगी फिल्म विष्णु मांचू के ड्रीम प्रोजेक्ट कनप्पा का शानदार टीजर रिलीज हो चुका है। इस फिल्म का टीजर कुल पांच भाषाओं में रिलीज किया गया है। फिल्म में प्रभास, अक्षय कुमार, काजल अग्रवाल, मोहनलाल ने अलावा कई अभिनेताओं ने अहम भूमिका निभाई हैं। फिल्म के टीजर में साउथ के अलावा बॉलीवुड के भी कई सितारे नजर आए। फिल्म का टीजर कुल पांच भाषाओं में जारी किया गया है, जिसमें तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ और हिंदी भाषा शामिल हैं। इस महाकाव्य की कहानी को अब दुनिया भर के दर्शक पांच भाषाओं में देख सकेंगे।

फिल्म में है शिव भक्त की कहानी

फिल्म कनप्पा की कहानी भगवान शिव के एक भक्त कनप्पा की है। वह शिव की भक्ति में अपनी आंखें फोड़ देता है। इस तरह की कहानियां दर्शकों को काफी पसंद आती है। वैसे भी जब इस फिल्म का ट्रेलर आया था तो दर्शकों ने इसे भी काफी सराहा था। अभिनेता विष्णु मांचू ने कनप्पा के किरदार को निभाने के लिए काफी मेहनत की है उन्होंने अपनी फिटनेस पर भी काफी काम किया है। इस फिल्म में कई और बड़े कलाकार भी हैं जो इसमें अपने अभिनय से चार चांद लगा देंगे। अक्षय भी इस फिल्म का हिस्सा बनकर काफी खुश हैं। इस फिल्म का निर्देशन मुकेश कुमार सिंह ने किया है और इसका निर्माण मोहन बाबू ने किया है।

क्या विजय देवरकोंडा के साथ अपने रिश्ते पर रश्मिका मंदाना ने लगा दी मुहर?

रश्मिका मंदाना इस समय काफी ज्यादा चर्चा में हैं। उनकी आगामी फिल्म पुष्पा 2 को लेकर फैंस के बीच काफी ज्यादा उत्साह देखा जा रहा है। हाल में ही इस फिल्म के लिए चेन्नई में आयोजित प्रमोशनल इवेंट में अभिनेत्री ने शिरकत की। इस दौरान शो के मेजबानों द्वारा उनके लाइफ पार्टनर के बारे में पूछा गया, जिस पर अभिनेत्री ने दिलचस्प जवाब दिया है, जिसे उनके डेटिंग से जुड़ी अफवाहों की पुष्टीकरण के रूप में देखा जा रहा है।

लाइफ पार्टनर के सवाल पर रश्मिका ने दिया ये जवाब

पुष्पा 2 के लिए चेन्नई में आयोजित इवेंट में अभिनेत्री से पूछा गया था कि क्या उनका लाइफ पार्टनर फिल्म इंडस्ट्री से ही होगा या बाहर से? इसका दिलचस्प जवाब देते हुए अभिनेत्री ने कहा, सभी इस सवाल का जवाब जानते हैं। उनके इस जवाब के बाद इवेंट में मौजूद फैंस ने जबर्दस्त शोर मचाते हुए अभिनेत्री के जवाब का समर्थन किया। रश्मिका के इस जवाब से वहां मौजूद अल्लू अर्जुन और श्रीलीला भी मुस्कुराते हुए नजर आए। अभिनेत्री के इस जवाब के बाद कई फैंस उनके इस जवाब को विजय देवरकोंडा के साथ उनके रिश्ते के पुष्टीकरण के रूप में देख रहे हैं।

सुर्खियों में रही हैं विजय-रश्मिका की डेटिंग से जुड़ी अफवाहें

बताते चलें कि रश्मिका मंदाना और विजय देवरकोंडा के डेटिंग से जुड़ी अफवाहें काफी समय से सुर्खियां बटोरती रही हैं। हर गुजरते दिन के साथ इन अफवाहों को थोड़ी और मजबूती मिल जाती है। फैंस दोनों की साथ होने की आधिकारिक घोषणा का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। इस बीच हाल में ही रश्मिका और विजय की साथ में लंच डेट की वायरल तस्वीरें सामने आई हैं, जिनमें दोनों एक साथ लंच का आनंद लेते दिख रहे हैं। इन तस्वीरों में रश्मिका नीले रंग की ड्रेस में बेहद खूबसूरत लग रही हैं। गौरतलब है कि कुछ समय पहले ही विजय देवरकोंडा ने भी घोषणा की थी कि वो अब सिंगल नहीं हैं।

रश्मिका मंदाना की आगामी फिल्में

बताते चलें कि रश्मिका मंदाना की आगामी फिल्म पुष्पा द रूल को लेकर जबर्दस्त उत्साह देखा जा रहा है। फिल्म में उनके साथ साउथ सुपरस्टार अल्लू अर्जुन, सुनील, श्रीलीला आदि कलाकार भी नजर आएंगे। ये फिल्म इस साल 05 दिसंबर को रिलीज होने वाली है। इस फिल्म के अलावा रश्मिका, धनुष की कुबेर और सलमान खान के साथ फिल्म सिकंदर में भी नजर आएंगी। इसके अलावा वो रणबीर कपूर के साथ संदीप रेड्डी वंगा की फिल्म एनिमल पार्क में भी दिखाई देंगी।

मां बनने के बाद काम पर लौटीं यामी, शुरू की शूटिंग

अभिनेत्री यामी गौतम ने इस साल मई में पहली संतान के रूप में बेटे का स्वागत किया। मां बनने के बाद अभिनेत्री काम पर लौट आई हैं और अगले प्रोजेक्ट की शूटिंग में जुट गई हैं। उन्होंने इंस्टाग्राम पोस्ट के जरिए फैंस को अपडेट दिया है और पहले दिन की शूटिंग की झलकियां साझा की हैं। अभिनेत्री ने एक फोटो शेयर किया है, इसमें वे पंजीरी लड्डू खाती दिख रही हैं, कैप्शन लिखा है, सोमवार की खुशहाल सुबह, बेबी के बाद शूट का पहला दिन और पंजीरी के लड्डू। हालांकि, यामी किस फिल्म की शूटिंग कर रही हैं, इसे लेकर कोई डिटेल नहीं दी गई है। यामी के पति निर्देशक आदित्य धर रणवीर सिंह, संजय दत्त, आर माधवन और अक्षय खन्ना के साथ फिल्म बना रहे हैं। कहा जा रहा है कि इसमें यामी लीड रोल में नजर आएंगी।

अपने जन्मदिन पर इस बार क्या करेंगी श्रुति हासन?

श्रुति हासन इन दिनों बहुप्रतीक्षित फिल्म कुली की शूटिंग में व्यस्त हैं। हाल ही में उन्होंने इंस्टाग्राम पर अपने फैंस के साथ बातचीत के सत्र में इस फिल्म के बारे में रोचक जानकारी साझा की। इस फिल्म का निर्देशन लोकेश कनगराज कर रहे हैं। इसमें दिग्गज अभिनेता रजनीकांत मुख्य भूमिका में हैं। जब एक फैन ने फिल्म के बारे में अपडेट पूछा तो श्रुति ने उत्साह के साथ जवाब दिया, कुली की शूटिंग बहुत बढ़िया चल रही है। इस बातचीत के दौरान उन्होंने अपने फैंस के साथ हंसी मजाक भी किया। अभिनेत्री ने अपने नजदीक आ रहे जन्मदिन के बारे में मजाक करते हुए बताया कि वह इस बार क्या करने की सोच रही हैं।

बर्थडे की योजना पर की बात

अपने खास अंदाज में श्रुति ने कहा, मैं वो सारे तोहफे पोस्ट करने वाली हूं, जो मैं चाहती हूं, लेकिन मुझे कभी मिलते नहीं। हालांकि, इस बातचीत में उनके काम से गहरी लगन भी देखने को मिली। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि इस जन्मदिन पर मैं काम करूंगी और काम करते हुए जन्मदिन मनाना शानदार है। मैं हर दिन काम करने की दुआ करती हूं, तो मेरे लिए काम करते हुए जन्मदिन मनाना सबसे बेहतरीन विचार है।

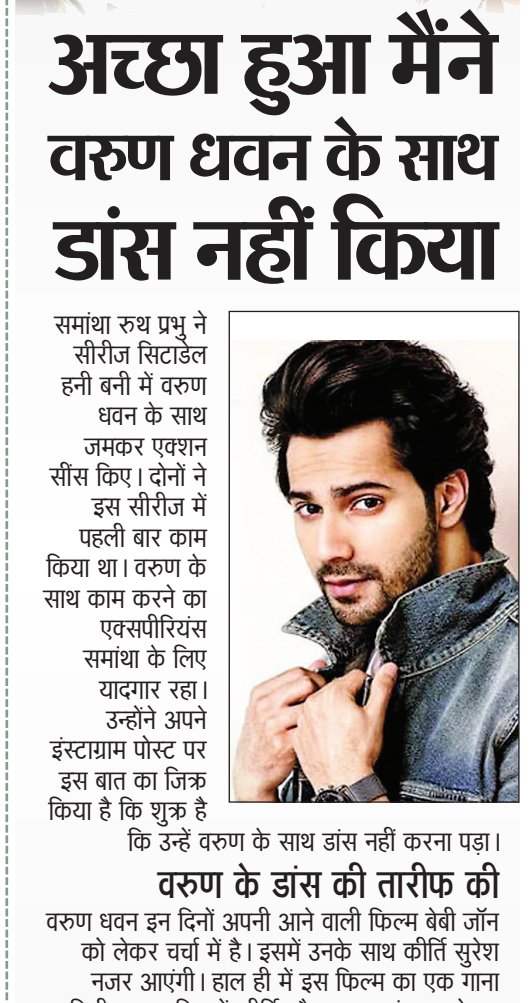

अच्छा हुआ मैंने वरुण धवन के साथ डांस नहीं किया

समांथा रुथ प्रभु ने सीरीज सिटाडेल हनी बनी में वरुण धवन के साथ जमकर एक्शन सींस किए। दोनों ने इस सीरीज में पहली बार काम किया था। वरुण के साथ काम करने का एक्सपीरियंस समांथा के लिए यादगार रहा। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पोस्ट पर इस बात का जिक्र किया है कि शुक्र है कि उन्हें वरुण के साथ डांस नहीं करना पड़ा।

वरुण के डांस की तारीफ की

वरुण धवन इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म बेबी जॉन को लेकर चर्चा में है। इसमें उनके साथ कीर्ति सुरेश नजर आएंगी। हाल ही में इस फिल्म का एक गाना रिलीज हुआ जिसमें कीर्ति और वरुण डांस करते हुए नजर आए। यह गाना सिटाडेल हनी बनी में वरुण की को स्टार्स रही समांथा को भी काफी पसंद आया। उन्होंने इस गाने को अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर शेयर किया। जिसमें वह कीर्ति और वरुण के डांस की तारीफ कर रही हैं। साथ ही इस पोस्ट पर उन्होंने एक कैप्शन भी लिखा कि भगवान का शुक्र है कि मैंने वरुण के साथ डांस नहीं किया। मैं इस गाने से काफी इंप्रेस हूं।

श्रीलीला को भी सराहा

वरुण की तारीफ करने के बाद समांथा ने पुष्पा 2 के नए गाने में नजर आईं अभिनेत्री श्रीलीला के डांस की भी तारीफ की है। वह उनके डांस को देखकर भी काफी खुश हैं। फिल्म पुष्पा में समांथा ने ऊ अंटावा गाने पर जबरदस्त डांस किया था। इस गाने को दर्शकों ने काफी पसंद किया।

खुद भी हैं अच्छी डांसर

श्रीलीला और वरुण के डांस की तारीफ करने वाली समांथा खुद भी अच्छी डांसर हैं। लेकिन वह डांस से ज्यादा अपने अभिनय पर ध्यान देती हैं। अपने करियर में वह अलग अलग तरह के किरदार करने की ख्वाहिश रखती हैं।

ट्रोल करने वालों को भी जवाब देती हैं

एक तरफ समांथा अपने इंस्टाग्राम पेज के जरिए अपने को स्टार्स की तारीफ करती हैं। वह ट्रोल करने वालों को भी यहां पर तगड़ा जवाब देती हैं। पिछले दिनों किसी ने उन्हें वजन को लेकर इंस्टाग्राम पर टोक दिया। इस पर समांथा ने तगड़ा जवाब उस शख्स को दिया और कहा कि जियो और जीने दो मेरी यकीन करना चाहिए।

दिग्विजय राठी के समर्थन में आईं उर्फी जावेद, बिना वजह निशाना बनाने का निर्माताओं पर लगाया आरोप

'बिग बॉस 18' लगातार शो को मजेदार और मनोरंजक बनाने के लिए काम कर रहा है। इस सिलसिले में घर के अंदर पहले 'स्प्लिट्सविला 5' के प्रतिभागी दिग्विजय सिंह और कशिश कपूर ने वाइल्ड कार्ड एंट्री ली। इसके बाद शो में तीन और प्रतियोगियों ने बतौर वाइल्ड कार्ड एंट्री ली, जिसमें, यामिनी मल्होत्रा, अदिति मिस्त्री और एडिन रोज शामिल हैं। शो के प्रतियोगियों को प्रशंसकों के अलावा फिल्म जगत से जुड़े लोग भी अपना समर्थन देते हुए नजर आते हैं। अब वाइल्ड कार्ड एंट्री दिग्विजय राठी की के समर्थन में उर्फी जावेद आई हैं। ऊर्फी जावेद ने दिग्विजय का समर्थन करने के लिए अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी का सहारा लिया। उन्होंने 'बिग बॉस 18' के निर्माताओं पर दिग्विजय को टारगेट करने के लिए एक तंज भी किया। राठी का एक वीडियो साझा करते हुए उन्होंने लिखा, मुझे लगता है कि दिग्विजय राठी कमाल कर रहे हैं, लेकिन फिर भी उन्हें बिना किसी कारण के निशाना बनाया जा रहा है।

दिग्विजय बने नए टाइम गॉड

हाल ही में दिग्विजय को घर का नया टाइम गॉड बनाया गया है। हालांकि, विवियन डीसेना, अविनाश मिश्रा और तजिंदर बग्गा ने उनका विद्रोह किया, क्योंकि उनका मानना है कि कि वह अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन नहीं करेंगे। जिसके बाद दिग्विजय ने घोषणा तीनों को अपने बर्तन खुद पकाने और धोने के लिए कहा। हालिया एपिसोड में दिग्विजय को एक विशेष शक्ति दी गई। इसकी बदौल उन्हें कशिश कपूर को बचाने का मौका मिला, लेकिन उन्होंने इसके लिए माना कर दिया। नतीजतन, दोनों के बीच काफी तीखी बहस हुई। इस बीच घर में तीन वाइल्ड कार्ड कंटेस्टेंट, एडिन रोज, यामिनी मल्होत्रा और अदिति मिस्त्री ने घर में प्रवेश किया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक वीकेंड का वार के दौरान एलिस कौशिक को एलिमिनेट किया जा सकता है।

रवि किशन ने इंडस्ट्री में नाम बनाने के लिए किया संघर्ष

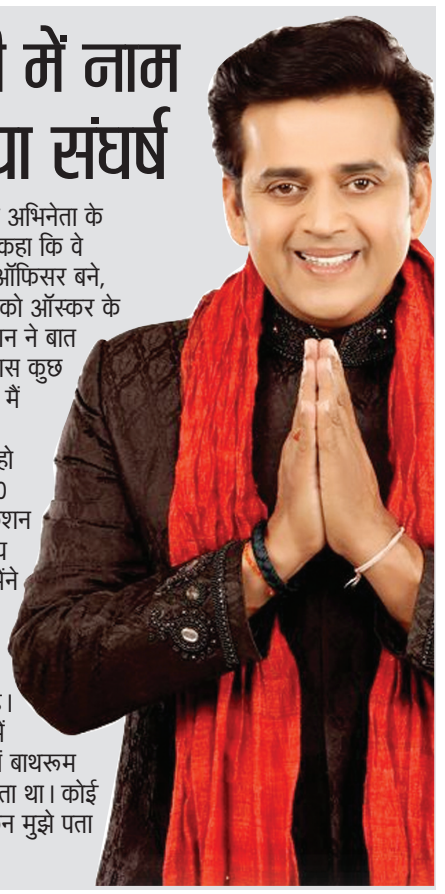

अभिनेता रवि किशन ने मीडिया बातचीत में बताया कि अभिनेता के तौर पर उनके लिए चीजें बहुत कठिन रही है। उन्होंने कहा कि वे किरण राव की लापता लेडीज फिल्म के लिए पुलिस ऑफिसर बने, उस किरदार को लेकर भी उन्होंने बात की है। फिल्म को ऑस्कर के लिए नामांकित किया गया है। इसे लेकर भी रवि किशन ने बात की है। रवि किशन ने कहा, मैं संत का बेटा हूं। मेरे पास कुछ नहीं है। मैं धर्म और ईमानदारी पर विश्वास करता हूं। मैं पहले थिएटर करता था। मैं रामलीला में सीता जी का किरदार निभाता था। मेरे पिता की नजरों में मैं बर्बाद हो गया था। मेरे पिता कहते थे कि ये नचनिया बनेगा। 80 और 90 इन बातों को कोई समझता नहीं था। रवि किशन ने कहा, मैं 34 साल के संघर्ष का परिणाम है, जो आप देख रहे हैं। मैंने तेलुगू सिनेमा में भी काम किया है। मैंने हिंदी फिल्मों में भी काम किया है। मैंने टीवी के लिए भी काम किया है। मैं अपनी पहचान बनाने के लिए लड़ रहा था। मुझे ऐसा कोई मौका नहीं मिल पा रहा था। इसके बाद मेरी किरण राव से मुलाकात हो गई है। रवि किशन ने कहा कि उन्होंने बहुत संघर्ष किया है। मैं मुंबई में पैदल चला हूं, 10ङ्क12 के घर में रहा हूं, जहां बाथरूम बाहर हुआ करता था। मैं मुंबई में किसी को नहीं जानता था। कोई गॉडफादर नहीं था, किसी ने मेरी मदद नहीं की, लेकिन मुझे पता था कि मेरी जिंदगी में एक नई सुबह आएगी।

संक्षिप्त समाचार

मर्क्यूरी ट्रेड लिंक्स लिमिटेड का रु. 48.95 करोड का राइट्स इश्यू खुला

अहमदाबाद एजेंसी। कृषि उत्पादों के कारोबार में लगी अहमदाबाद स्थित मर्क्यूरी ट्रेड लिंक्स लिमिटेड का रु. 48.95 करोड का राइट्स इश्यू 7 नवंबर, 2024 को सब्स्क्रीप्शन के लिए खुला। राइट्स इश्यू के माध्यम से जुटाई गई धनराशि का उपयोग कंपनी की कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं को निधि देने के लिए, इश्यू के खर्च और सामान्य क़ॉर्पोरेट हेतुओ के लिए किया जाएगा। कंपनी का राइट्स इश्यू 6 नवंबर, 2024 को रु. 60.43 प्रति शेयर के बंध कीमत की तुलना में रु. 44.95 प्रति शेयर की कीमत पर पेश किया गया है। राइट्स इश्यू 05 दिसंबर, 2024 को बंद होगा। यह दूसरा राइट्स इश्यू है। मार्च 2024 में कंपनी रु. 9.90 करोड जुटाने के लिए रु. 40.00 प्रति शेयर की कीमत पर पहला राइट्स इश्यू लाई थी। कंपनी रु. 10 अंकित मूल्य के 1,08,90,000 पूर्ण रुप से भुगतानवाले इक्विटी शेयर नकद में रु. 44.95 प्रति इक्विटी शेयर (रु. 34.95 प्रति इक्विटी शेयर के प्रीमियम सहित) की कीमत पर जारी करेगी, जिसका कुल मूल्य रु. 48.95 करोड होगा। प्रस्तावित इश्यू के लिए राइट्स एंटाइटेलमेंट अनुपात 4:1 पर तय किया गया है

लंग्स कैंसर जागरूकता माह के दौरान मैरिंगो सीआईएमएस हॉस्पिटल ने इस मुहिम की अगुवाई की

अहमदाबाद , एजेंसी। नवंबर का महीना फेफड़े के कैंसर के बारे में जागरूकता फैलाने को समर्पित है और मैरिंगो सीआईएमएस हॉस्पिटल ने फेफड़ों के कैंसर के खिलाफ जारी संघर्ष में बचाव से लेकर उपचार तक के सफ़र की गहराई से पड़ताल की है, ताकि दुनिया भर में कैंसर के सबसे सामान्य और जानलेवा रूप को उजागर किया जा सके। दुनिया भर में कैंसर की वजह से होने वाली मौतों में फेफड़े का कैंसर सबसे प्रमुख कारण है, जिसे देखते हुए मैरिंगो सीआईएमएस हॉस्पिटल इस जानलेवा बीमारी की शुरुआत में पहचान करने, इसकी रोकथाम करने और इसके इलाज में हुई प्रगति के बारे में जागरूकता बढ़ाने के संकल्प पर कायम है। अस्पताल इस बात पर भी जोर देता है कि, परिणामों को बेहतर बनाने और लोगों की ज़िंदगी बचाने के लिए, आम लोगों को जानकारी देने से लेकर उपचार के अत्याधुनिक विकल्प उपलब्ध कराने तक के सभी पहलुओं को शामिल करना जरूरी है। डॉ. सरव शाह, थोरैसिक ऑन्को सर्जन; डॉ. भावेश पारेख, मेडिकल ऑन्कोलॉजिस्ट, और; डॉ. देवांग भावसार, रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट सहित विशेषों की एक टीम साथ मिलकर एमडीटी की बैठकों में इलाज के लिए प्रोटोकॉल तैयार करती है।

लोग कॉमेडी पर फोकस करते हैं, जो अच्छा है : रयान रेनॉल्ड्स

मुंबई। डिज़्नी+ हॉटस्टार पर इंग्लिश, हिंदी, तमिल और तेलुगु में स्ट्रीम हो रही डेडपूल एंड वूल्वरिन में जबरदस्त एक्शन के साथ खुशनुमा सफर का अनुभव मिलेगा इंतजार की घड़ियाँ खत्म हुईं, डेडपूल एंड वूल्वरिन डिज़्नी+ हॉटस्टार पर इंग्लिश, हिंदी, तमिल और तेलुगु में स्ट्रीम होना शुरू हो गई है। इसमें रयान रेनॉल्ड्स बुद्धिमान डेडपूल की भूमिका में हैं तथा ह्यूग जैकमैन वूल्वरिन का किरदार निभा रहे हैं। इस जीवंत जोड़ी के साथ देखने को मिल रहा है, जबरदस्त करिश्मा और एक्शन, जो उनकी केमिस्ट्री के साथ दर्शकों को मल्टीवर्स के रोमांचक एवं खुशनुमा सफर पर ले जा रहा है। डेडपूल का किरदार निभा रहे रयान रेनॉल्ड्स ने कहा, लोग कॉमेडी पर फोकस करते हैं, जो अच्छा है। लेकिन कॉमेडी तब तक काम नहीं करती जब तक कि उसमें असली भावनाएँ, जोखिम और कमजोरी ना हों।

भारत में आईफोन प्रोडक्शन 10 अरब डॉलर के पार, निर्यात में भी बन गया रिकॉर्ड

नई दिल्ली, एजेंसी। कोई सोच सकता था कि भारत में ऐपल का आईफोन 10 अरब डॉलर का बनेगा, वह भी सिर्फ सात महीनों में। लेकिन आज की तारीख में यह हकीकत है। यह कमाल हुआ है केंद्र सरकार की प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव स्कीम के कारण। यही नहीं, अब भारत से काफी मात्रा में आईफोन का एक्सपोर्ट भी होने लगा है।

केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव के मुताबिक वित्त वर्ष 2025-26 के शुरुआती 7 महीनों के दौरान ही देश में 10 अरब डॉलर के आईफोन का प्रोडक्शन हुआ है। उन्होंने बताया कि इस साल अप्रैल से अक्टूबर के बीच किए गए 10 अरब डॉलर के उत्पादन में से करीब 7 अरब डॉलर के आईफोन का निर्यात किया गया है। उल्लेखनीय है कि साल 2023-24 के दौरान भारत में कुल 14 अरब डॉलर के आईफोन की मैन्युफैक्चरिंग हुई थी। इसमें से 10 अरब डॉलर से अधिक के आईफोन का निर्यात किया गया था।

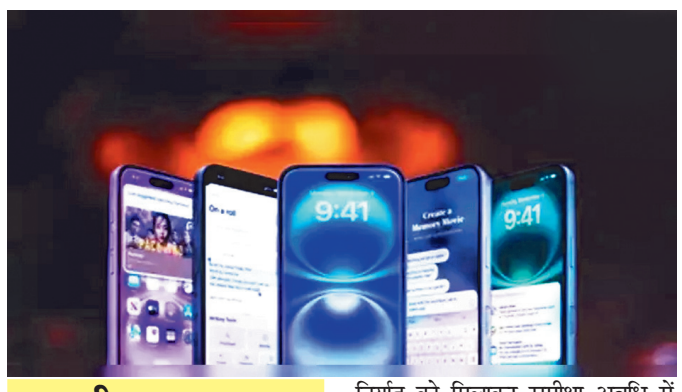

मील का पत्थर

केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि यह स्मार्टफोन पीएलआई योजना के लिए 7 महीनों में एक और मील का पत्थर है। मंत्री ने बताया कि इस दौरान एप्पल द्वारा कुल 10 अरब डॉलर के आईफोन का प्रोडक्शन किया गया है। इसमें से 7 अरब डॉलर का निर्यात किया गया है। आईफोन निर्यात को मिलाकर समीक्षा अवधि में भारत से कुल 10.6 अरब डॉलर के स्मार्टफोन का निर्यात हुआ है।

ज्यादातर महिलाओं को रोजगार

केंद्रीय मंत्री वैष्णव ने आगे बताया कि ऐपल इकोसिस्टम ने पिछले चार वर्षों में 1,75,000 प्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा किए हैं। इसमें 72 प्रतिशत से अधिक रोजगार महिलाओं को मिला है। इंडस्ट्री डेटा के मुताबिक, कैलिफोर्निया स्थित टेक दिग्गज ने चालू वित्त वर्ष के पहले सात महीनों में भारत से 60,000 करोड़ रुपये (लगभग 7 अरब डॉलर) के आईफोन का निर्यात किया है।

यह वर्ष ऐपल के लिए असाधारण

कंपनी के सीईओ टिम कुक ने कहा, ÷जुलाई-सितंबर की अवधि में ऐपल ने भारत में अब तक का सबसे अधिक राजस्व का रिकॉर्ड बनाया है। हम भारत में जो उत्साह देख रहे हैं, उससे हम उत्साहित हैं। यह वर्ष ऐपल के लिए असाधारण रहा है।÷ आईफोन की बढ़ती मांग के कारण वित्त वर्ष 2023-24 में ऐपल की आय सालाना आधार पर 36 प्रतिशत बढ़कर 66,700 करोड़ रुपये रही है। इस दौरान कंपनी ने 2,746 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया था।

सोलर स्टॉक 7 प्रतिशत तक टूटा, क्यू2 नतीजों से निराश दिखे निवेशक

नई दिल्ली, एजेंसी। हाल ही में शेयर बाजार में लिस्ट हुए सोलर स्टॉक एसीएमई सोलर होल्डिंग्स के शेयरों की कीमतों में गिरावट देखने को मिली है। कंपनी के शेयरों का भाव 7.4 प्रतिशत तक लुढ़क गया है। कंपनी के शेयरों की कीमतों में गिरानट के पीछे की वजह कमजोर तिमाही नतीजों का माना जा रहा है। कंपनी ने सोमवार को तिमाही नतीजों का ऐलान किया था। एसीएमई सोलर होल्डिंग्स को सितंबर तिमाही में 15 करोड़ रुपये का प्रॉफिट हुआ है। सालाना आधार पर कंपनी के प्रॉफिट में 60 प्रतिशत की गिरावट देखने को मिली है। एक साल पहले कंपनी का प्रॉफिट सितंबर तिमाही में 39 करोड़ रुपये रहा था। कंपनी के रेवन्यू में भी गिरावट देखने को मिली है। सितंबर तिमाही में कंपनी का रेवन्यू 260 करोड़ रुपये रहा है। एक साल पहले इसी तिमाही में कंपनी का रेवन्यू 323 करोड़ रुपये रहा था। बता दें, सालाना आधार पर कंपनी का रेवन्यू 19.70 प्रतिशत घटा है।

239 रुपये तक लुढ़का शेयर

बीएसई में कंपनी के शेयर सोमवार की तुलना में गिरावट के साथ 245.65 रुपये के लेवल पर ओपन हुआ। कंपनी का इंट्रा-डे लो लेवल 256 रुपये प्रति शेयर रहा है। बता दें, कंपनी का मार्केट कैप 15,260.31 करोड़ रुपये का है। एसीएमई सोलर होल्डिंग्स ने लिस्टिंग के दिन ही निवेशकों को निराश किया था। कंपनी की बीएसई सेंसेक्स में लिस्टिंग 259 रुपये पर हुई थी। वहीं, इस आईपीओ का प्राइस बैंड 289 रुपये है। बता दें, एसीएमई सोलर होल्डिंग्स की लिस्टिंग 13 नवंबर को हुई थी। बीएसई में कंपनी का 52 वीक हाई 279 रुपये है। कंपनी का 52 वीक लो लेवल 228.15 रुपये प्रति शेयर है।

एक साल में 85 प्रतिशत बढ़ गए यूपीआई फ्रॉड, सदन में सवाल के जवाब में वित्त राज्य मंत्री ने कही यह बात

नई दिल्ली, एजेंसी। जहां एक तरफ देश में डिजिटल पेमेंट बढ़ रहा है, दूसरी तरफ उससे जुड़े फ्रॉड भी। डिजिटल पेमेंट में यूपीआई पेमेंट सबसे आगे है और लोग किराना स्टोर से लेकर महंगे रेस्टोरेंट की बिल पेमेंट और ट्रेन टिकट बुकिंग से लेकर होटल बुकिंग जैसे तमाम कामों के लिए यूपीआई पेमेंट कर रहे हैं। जिस तेजी से यूपीआई का इस्तेमाल बढ़ रहा है, उतनी ही तेजी से यूपीआई से जुड़े फ्रॉड भी बढ़ रहे हैं। इसे आप इस आंकड़े से समझ सकते हैं कि साल 2023 में देश में यूपीआई फ्रॉड के मामले 85 प्रतिशत बढ़ गए।

वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने संसद में एक सवाल के जवाब में बताया कि साल 2023 में यूपीआई फ्रॉड के मामले 85 प्रतिशत बढ़ गए। उन्होंने बताया कि जहां वित्त वर्ष 2022-23 में 8,300 करोड़ (8371।43) से ज्यादा यूपीआई ट्रांजेक्शन हुए और उनमें करीब 140 (139।15) लाख करोड़ रुपए का लेनदेन हुआ, 2023-24 में ये आंकड़ा क्रमशः 13,100 (13,112।96) करोड़ से ज्यादा और करीब 200 (199।96) लाख करोड़ रुपए था। इसी तरह वित्त वर्ष 2022-23 में यूपीआई फ्रॉड के 7।2 लाख (7।25 लाख) से ज्यादा मामले हुए जिनमें लोगों को 573 करोड़ रुपए की चपत लगी, 2023-24 में यूपीआई फ्रॉड के मामलों की संख्या 13।4 लाख (13।42 लाख) से ज्यादा थी और इनमें लोगों से कुल 1,087 करोड़ रुपए ठगे गए। यानी एक साल में यूपीआई फ्रॉड के मामले करीब 85 प्रतिशत बढ़ गए। वहीं, चालू वित्त वर्ष (2024-25) में सितंबर 2024 तक यूपीआई फ्रॉड के मामलों की संख्या 6।3 (6।32) लाख थी और इनमें कुल 485 करोड़ रुपए की ठगी की गई। हालांकि वित्त राज्य मंत्री ने ये भी बताया कि बढ़ते यूपीआई फ्रॉड को रोकने के लिए पुरजोर उपाए किए जा रहे हैं। रिजर्व बैंक ने मार्च 2020 से सेंट्रल पेमेंट फ्रॉड इंफोर्मेशन रजिस्ट्री शुरू की जो कि पेमेंट से जुड़ी फ्रॉड की जानकारी देने वाली एक वेब आधारित रजिस्ट्री है।

कॉरपोरेट प्रशासन में खामियों के कारण एडटेक फर्म बायजू के खिलाफ नई जांच

नई दिल्ली, एजेंसी। सरकार ने संकटग्रस्त एडटेक कंपनी बायजू की वित्तीय और लेखा प्रथाओं की नई जांच शुरू की है। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार, मामले से परिचित सूत्रों ने बताया है कि नई जांच कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय की ओर से पिछली समीक्षा के बाद की गई, जिसमें कंपनी में कॉरपोरेट प्रशासन में खामियों से जुड़ी जानकारी सामने आई। हैदराबाद में रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज के क्षेत्रीय कार्यालय को बायजू के वित्तीय रिकॉर्ड की जांच करने के लिए कहा गया है। जांच का उद्देश्य यह पता लगाना है कि क्या कंपनी ने अपने वित्तीय विवरण गलत तरीके से प्रस्तुत किए हैं या फिर फंड का गलत तरीके से इस्तेमाल किया गया है।

यह ताजा जांच कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय द्वारा एक साल पहले किए गए निरीक्षण के बाद की गई है। हालांकि उस समीक्षा में बायजू में कॉरपोरेट गवर्नेंस संबंधी समस्याएं पाई गईं, लेकिन वित्तीय गड़बड़ियों का कोई निर्णायक सबूत सामने नहीं आया।

कभी 22 बिलियन डॉलर के मूल्यांकन के साथ भारत का सबसे मूल्यवान स्टार्टअप रहा बायजू अब वित्तीय उथल-पुथल और कानूनी चुनौतियों से जूझ रहा है। कंपनी भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों में दिवालियापन की कार्यवाही में उलझी हुई है। अक्तूबर में, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने दिवालियापन न्यायाधिकरण के उस फैसले को पलट दिया, जिसने बायजू को एक प्रमुख लेनदार के साथ अपने ऋणों का निपटान करने की अनुमति दी थी। इस फैसले ने कंपनी को दिवालियापन प्रक्रिया में वापस ला दिया है, और इसके संचालन का नियंत्रण एक दिवालियापन समाधान पेशेवर को सौंप दिया गया है।

चिटफंड घोटाले में प्रयाग ग्रुप से जुड़ी संपत्तियों पर ईडी छापा, 1,900 करोड़ जुटाने का है आरोप

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कोलकाता में चिटफंड घोटाले की जांच के सिलसिले में प्रयाग समूह से जुड़े कई स्थानों पर मंगलवार सुबह छापेमारी शुरू की। अधिकारियों के अनुसार, जिन स्थानों पर तलाशी ली गई उनमें प्रयाग समूह के एक वरिष्ठ अधिकारी की न्यू अलीपुर स्थित एक आवासीय इमारत और उपनगरीय इकाले जोका स्थित एक गेस्ट हाउस शामिल हैं। उन्होंने बताया कि तलाशी लेने वाली ईडी टीमों के साथ केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों की एक बड़ी टुकड़ी भी शामिल थी।

प्रयाग ग्रुप का चिटफंड कारोबार पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत में फैला हुआ था, जिसमें पश्चिम बंगाल, ओडिशा, बिहार, असम और त्रिपुरा जैसे राज्य शामिल थे। आरोप है कि फर्म ने अवैध योजनाएं चलाकर जनता से 1,900 करोड़ रुपये से अधिक की रकम जुटाई थी। 2017 में सीबीआई ने ओडिशा में दर्ज एक मामले के आधार पर प्रयाग ग्रुप के सीएमडी बासुदेव बागची और उनके बेटे अविक बागची को गिरफ्तार किया था।

पाकिस्तान को रोजाना 6000 करोड़ रुपये का नुकसान, इमरान खान की एक जिद से कंगाली में आटा हो रहा गीला

नई दिल्ली, एजेंसी। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान इस समय जेल में बंद हैं। उनकी रिहाई की मांग के लिए उनके समर्थक पाकिस्तान में विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं। करीब 200 समर्थकों को गिरफ्तार किया गया है। वहीं 1200 से ज्यादा को हिरासत में रखा गया है। इस विरोध-प्रदर्शन के कारण पाकिस्तान के कई शहरों में इंटरनेट और मोबाइल सर्विस तक बंद हैं।

इमरान के समर्थक मौजूदा प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली सरकार के खिलाफ भी विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। पिछले कई दिनों से यह विरोध प्रदर्शन जारी है। इकनॉमिक टाइम्स के अनुसार प्रदर्शनकारियों को खदेड़ने के लिए पुलिस ने न केवल उन्हें गिरफ्तार किया है लाठीचार्ज और आंसू गैस का भी इस्तेमाल किया है। इस विरोध प्रदर्शन के कारण पाकिस्तान को रोजाना करीब 6 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हो रहा है। कर्ज में डूबे पाकिस्तान के लिए यह नुकसान कंगाली में आटा गीला होने से कम नहीं है।

पहली नौकरी से लेकर जीवनसाथी तक... 14 साल बेंगलुरु में रहा यह कारोबारी, अब क्यों कह दिया इस शहर को अलविदा

इमरान की रिहाई के लिए यह विरोध प्रदर्शन बड़े स्तर पर हो रहा है। झड़पों में एक पुलिस अधिकारी की मौत हो चुकी है। विरोध प्रदर्शन का आह्वान करने वाले इमरान खान ने इसे आजादी की लड़ाई के रूप में पेश किया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा है, 24 नवंबर गुलामी से मुक्त होने का दिन है। देश को यह तय करना होगा कि बहादुर शाह जफर की तरह गुलामी का जुआ पहनना है या टीपू सुल्तान की तरह आजादी का ताज पहनना है।

इमरान खान की पोस्ट से स्पष्ट है कि उनकी जिद टीपू सुल्तान की तरह आजादी का ताज पहनने की है। पूर्व प्रधानमंत्री ने आरोप लगाया है कि उन्हें जेल में डालना उन्हें सत्ता में वापस आने से रोकने के लिए एक राजनीतिक चाल है। उनकी पार्टी नए चुनावों की मांग कर रही है, उनका दावा है कि पिछले चुनावों में धांधली हुई थी।

कारोबार में आ रही परेशानी

यह विरोध प्रदर्शन पाकिस्तान के लिए बहुत महंगा साबित हो रहा है। वित्त मंत्री मुहम्मद औरंगजेब ने कहा कि विपक्ष के नेतृत्व वाले विरोध प्रदर्शनों और लॉकडाउन से प्रतिदिन 190 बिलियन पाकिस्तानी रुपये (भारतीय मुद्रा में लगभग 6,000 करोड़ रुपये) से अधिक का नुकसान हो रहा है।

औरंगजेब के अनुसार, विरोध प्रदर्शन के कारण टैक्स कलेक्शन नहीं हो पा रहा है। साथ ही कारोबार भी नहीं चल रहे हैं जिससे लोगों को आर्थिक हानि भी हो रही है। इसके अलावा निर्यात करने में भी काफी परेशानी आ रही है। विरोध प्रदर्शनों के दौरान कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ रहा है। वित्त मंत्री ने आगे कहा कि आईटी और दूरसंचार जैसे क्षेत्रों को भी आर्थिक रूप से काफी नुकसान हो रहा है।

रोजाना कहां कितना नुकसान

एआरवाई न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान के वित्त मंत्रालय की एक रिपोर्ट से पता चला है कि विरोध प्रदर्शनों के कारण रोजाना काफी नुकसान हो रहा है। यह नुकसान इस प्रकार है-

144 बिलियन पाकिस्तानी रुपये का जीडीपी नुकसान

26 बिलियन पाकिस्तानी रुपये का कृषि क्षेत्र में नुकसान

20 बिलियन पाकिस्तानी रुपये से अधिक का औद्योगिक क्षेत्र में नुकसान

टेस्ला, फाल्कन, हाइपरलूप, स्टारलिंक, न्यूरालिंक... 40 साल में 48 प्रॉडक्ट्स बना चुके हैं एलन मस्क

नई दिल्ली, एजेंसी। दुनिया के सबसे बड़े रईस एलन मस्क की नेटवर्थ 348 अरब डॉलर पहुंच चुकी है। माना जा रहा है कि वह दुनिया के पहले ट्रिलिनेयर होंगे। साल 2027 में उन्हें यह मुकाम हासिल हो सकता है। 28 जून 1971 को दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया में जन्मे और पेशे से इंजीनियर मस्क एक साथ कई कंपनियां चला रहे हैं। वह इलेक्ट्रिक कार बनाने वाली कंपनी टेस्ला और स्पेसएक्स के सीईओ होने के साथ-साथ ट्विटर के चीफ टेक्नोलॉजी ऑफिसर हैं। इसके साथ ही कई दूसरी कंपनियों में भी उनका निवेश और हिस्सेदारी है। मस्क की उम्र अभी 53 साल है और वह अब तक 48 प्रॉडक्ट्स बना चुके हैं। मस्क ने महज 12 साल की उम्र में ही अपना पहला प्रॉडक्ट लॉन्च कर दिया था। उनका पहला प्रॉडक्ट ब्लास्टर एक वीडियो गेम था जो उन्होंने साल 1984 में बनाया था। इस सोर्स कोड को उन्होंने 500 डॉलर में बेच दिया था और बाद में यह एक मैगजीन में छपा। इसके बाद से वह अब तक 48 प्रॉडक्ट्स बना चुके हैं। मस्क का अगला प्रॉडक्ट 1995 में आया जब वह जिप2 लेकर आए। यह उनकी पहली कंपनी थी। यह ऑनलाइन सिटी गाइड सॉफ्टवेयर कंपनी थी जिसे उन्होंने अपने भाई के साथ मिलकर बनाया था।

खा झुनझुनवाला ने 2 शेयर से 10 मिनट में ही कमा लिए 105 करोड़

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय बेंचमार्क इंडेक्स ने मंगलवार को सुबह के कारोबार के दौरान लगातार तीसरे सत्र में तेजी जारी रखी। ऐसे में जहां इन दिनों निवेशकों को अपने निवेश पर शानदार रिटर्न मिल रहा है, वहीं कुछ दिग्गज निवेशक भी बढ़ते शेयर बाजार में जमकर कमा रहे हैं। इनमें टॉप पर रेखा झुनझुनवाला हैं। रेखा झुनझुनवाला को आज तगड़ा मुनाफा हुआ है। आइए जानते हैं कैसे शेयर बाजार के टॉप निवेशक रेखा झुनझुनवाला ने अपने पोर्टफोलियो में शामिल दो शेयर टाइटन कंपनी और मेट्रो ब्रांड्स से 10 मिनट में अपने दो पोर्टफोलियो शेयरों से 105 करोड़ से अधिक की कमाई की। टाइटन के शेयर की कीमत आज एनएसई पर पहले दस मिनट में 20.90 प्रति शेयर बढ़ गई, जबकि मेट्रो ब्रांड्स के शेयर की कीमत आज भारतीय शेयर बाजार के पहले दस मिनट में 3.90 प्रति शेयर बढ़ गई।

बता दें कि टाइटन का शेयर प्राइस आज एनएसई पर बढ़त के अंतर के साथ 3,310 प्रति शेयर पर खुला और 3,360 प्रति शेयर के इंट्राडे उच्चतम स्तर को छू गया। हालांकि, पहले दस मिनट में इसने 3,330 प्रति शेयर का आंकड़ा छू लिया, जिससे पहले दस मिनट में 20.90 प्रति शेयर की वृद्धि दर्ज की गई।

इसी तरह, मेट्रो ब्रांड्स का शेयर आज एनएसई पर 1,177.10 प्रति शेयर पर खुला और ओपनिंग बेल के पहले दस मिनट में 1,180.95 तक पहुंच गया, जिससे प्रति शेयर 3.90 की वृद्धि दर्ज की गई।

तुम हमेशा दिल्ली कैपिटल्स का हिस्सा रहोगे, ऋषभ पंत के जाने से सह-मालिक ने जताया दुख

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली कैपिटल्स के सह मालिक पार्थ जिंदल ने मंगलवार को ऋषभ पंत के टीम से अलग होने पर दुख जताने के साथ उम्मीद भी व्यक्ति की कि भविष्य में वे फिर कभी साथ आएंगे। दिल्ली ने आईपीएल की मेगा नीलामी से पहले कप्तान पंत को रिलीज कर दिया था। पंत को रिकॉर्ड 27 करोड़ रुपए में लखनऊ सुपर जाइंट्स ने खरीदा।

दिल्ली ने राइट टू मैच का प्रयोग करके पंत को वापस लेने की कोशिश भी की लेकिन लखनऊ की आखिरी बोली का मुकाबला नहीं कर सके। जिंदल ने एक्स पर भावुक पोस्ट में लिखा, 'ऋषभ तुम मेरे छोटे भाई हो और हमेशा रहोगे। मैं तहेदिल से तुम्हे प्यार करता हूं। मैने हमेशा कोशिश की कि यह सुनिश्चित करूं कि तुम खुश हो और तुम्हारे साथ अपने परिवार की तरह रहा। जेएसडब्ल्यू स्पोटर्स और जीएमआर टीम के सह मालिक हैं। पंत ने टीम से मतभेदों के बाद खुद को नीलामी में शामिल किया। जिंदल ने कहा, 'तुम्हे जाता देखना दुखद है और मैं इसे लेकर काफी भावुक हूं। तुम हमेशा दिल्ली कैपिटल्स का हिस्सा रहोगे और उम्मीद है कि एक दिन हम फिर साथ होंगे। शुक्रिया ऋषभ। याद रखना कि हम हमेशा तुमसे प्यार करते रहेंगे। दुनिया जीत लो। दिल्ली कैपिटल्स की ओर से शुभकामनाएं।

दिल्ली कैपिटल्स ने कुलदीप यादव, अक्षर पटेल, ट्रिस्टन स्टब्स और अभिषेक पोरेल को बरकरार रखा। टीम ने जेक फ्रेजर मैकगुर्क को 9 करोड़ में फिर खरीदा जबकि केएल राहुल पर 14 करोड़ रूपये खर्च किए।

आईपीएल 2025 के ऑक्शन में आरसीबी के खरीदते ही खुल गई इस खिलाड़ी की किस्मत

● देश की टेस्ट टीम में मिला मौका

नईदिल्ली, एजेंसी। आईपीएल को खिलाड़ियों की तकदीर का ताला कहते हैं. और, ये इसलिए क्योंकि बीसीसीआई की इस लीग में पैसे बरसते है, जिससे खिलाड़ी मालामाल होते हैं. लेकिन, एक खिलाड़ी ऐसा है जिसके लिए ऑक्शन में आरसीबी का उसे खरीदना इतना लकी रहा कि अब वो देश की टेस्ट टीम के लिए डेब्यू करने जा रहा है. हम बात कर रहे हैं. आरसीबी के जैकब बेथेल की, जो न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट में इंग्लैंड के लिए डेब्यू करने जा रहे हैं.

आरसीबी ने खरीदा, देश की टेस्ट टीम में मिला मौका – 21 साल के इंग्लैंड के ऑलराउंडर जैकब बेथेल 1.25 करोड़ की बेस प्राइस के साथ आईपीएल 2025 के ऑक्शन में उतरे थे. और, उन्हें आरसीबी ने 2.60 करोड़ में खरीद लिया. जैकब को खरीदने के लिए बोली पंजाब किंग्स ने भी लगाई थी लेकिन आखिर में बाजी आरसीबी के नाम रही. एक तरह इंग्लैंड के इस खिलाड़ी के जुड़ने से रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू को ये फायदा हुआ है कि उसकी ताकत में इजाफा देखने को मिला है. वहीं खुद जैकब को ऑक्शन के अगले ही दिन देश के लिए टेस्ट खेलने का चांस मिला है.

क्राइस्टचर्च में डेब्यू करेंगे जैकब – इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच टेस्ट सीरीज की शुरुआत 28 नवंबर से हो रही है. दोनों देशों के बीच 3 टेस्ट की सीरीज खेली जाएगी, जिसका पहला मैच क्राइस्टचर्च में होगा. पहले टेस्ट में डेब्यू करने जा रहे जैकब बेथेल इससे पहले इंग्लैंड के लिए वनडे और टी-20 डेब्यू कर चुके हैं. उनके फर्स्ट क्लास रिकॉर्ड को देखें तो सिर्फ 20 मैच खेले हैं, जिसमें 738 रन बनाने के अलावा 7 विकेट लिए हैं. जैकब बेथेल पहली बार आईपीएल खेलते हुए दिखेंगे. इससे पहले उन्होंने द हण्ड्रेड और टी-20 ब्लास्ट के मुकाबले खेले हैं. द हण्ड्रेड में उनका स्ट्राइक रेट 127 से ऊपर का है. वहीं ञ्20 ब्लास्ट में 141 से ज्यादा का है. टी-20 क्रिकेट में स्ट्राइक रेट मायने रखती है. लेकिन जैकब बेथेल के छोटे फॉर्मेट के आंकड़े उतने प्रभावशाली नहीं हैं. अब देखना ये है कि वो ऋष्क्क के लिए कितने फायदेमंद साबित होते हैं.

इंग्लैंड-न्यूजीलैंड

न्यूजीलैंड से पहले टेस्ट के लिए इंग्लैंड की प्लेइंग 11 का ऐलान

बेथल का डेब्यू; नई भूमिका में दिखेंगे ओली पोप

नई दिल्ली, एजेंसी। न्यूजीलैंड के खिलाफ 3 मैचों की टेस्ट सीरीज के पहले मैच के लिए इंग्लैंड ने मंगलवार (26 नवंबर) को प्लेइंग 11 घोषित कर दी। जैकब बेथेल पदार्पण करेंगे। युवा ऑलराउंडर को नंबर 3 पर बल्लेबाजी के लिए चुना गया है। बल्लेबाजी क्रम में फेरबदल में ओली पोप को नंबर 6 पर रखा गया है। वह विकेटकीपिंग करते दिखेंगे। पहला टेस्ट 28 नवंबर से क्राइस्टचर्च में शुरू होगा।

बेथेल पिछले महीने ही 21 साल के हुए हैं। उन्होंने पहले कभी प्रथम श्रेणी क्रिकेट में नंबर 3 पर बल्लेबाजी नहीं की है। वारविकशायर के लिए खेलने वाले बैटिंग ऑलराउंडर ने 20 मैचों में 25.44 की औसत से 738 रन बनाए हैं। उन्होंने अपने प्रथम श्रेणी करियर में सात विकेट भी लिए हैं। उन्होंने बर्मिंघम फीनिक्स के लिए 7 मैचों में 165 रन बनाने के बाद इंग्लैंड के लिए अपना टी20 और वनडे डेब्यू भी किया था।

जॉर्डन कॉक्स चोटिल होने के कारण डेब्यू नहीं कर पाएंगे – इस बीच विकेटकीपर जॉर्डन कॉक्स चोटिल होने के कारण डेब्यू नहीं कर पाएंगे। क्वीन्सटाउन में नेट सेशन के दौरान उनका अंगूठा टूट गया। इसके कारण उन्हें सीरीज से बाहर होना पड़ा। कॉक्स पहले नियमित विकेटकीपर बल्लेबाज जेमी स्मिथ की जगह आए थे, जो पितृत्व अवकाश पर हैं। अब पोप विकेटकीपिंग करते दिखेंगे।

यह पोप के लिए एक महत्वपूर्ण सीरीज है। उन्होंने पाकिस्तान में तीन मैचों में केवल 55 रन बनाए थे। उनका खराब फॉर्म अगस्त और सितंबर में स्वदेश में श्रीलंका के खिलाफ भी जारी रहा। तीसरे टेस्ट में 154 रन बनाने के बावजूद उन्होंने तीन मैचों की सीरीज में अपनी शेष पांच पारियों में केवल 37 रन बनाए।

बेन डकेट और जैक क्रॉली ओपनिंग करेंगे – बल्लेबाजी क्रम में बेन डकेट और जैक क्रॉली ओपनिंग करेंगे। जो रूट नंबर 4 और हैरी ब्रूक नंबर 5 पर बल्लेबाजी करेंगे। बेन स्टोक्स को नंबर 7 पर होंगे। इंग्लैंड ने तीन तेज गेंदबाजों क्रिस वोक्स, गस एटकिंसन और ब्रायडन कार्स को टीम में शामिल किया है, जबकि शोएब बशीर हेगले एकमात्र स्पिनर होंगे।

इंग्लैंड की प्लेइंग इलेवन

जैक क्रॉली, बेन डकेट, जैकब बेथेल, जो रूट, हैरी ब्रूक, ओली पोप (विकेटकीपर), बेन स्टोक्स (कप्तान), क्रिस वोक्स, गस एटकिंसन, ब्रायडन कार्से, शोएब बशीर।

सचिन और विराट की विरासत को आगे बढ़ा सकता है ये खिलाड़ी, ग्रेग चैपल ने की बड़ी भविष्यवाणी

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत के पूर्व कोच ग्रेग चैपल का मानना है कि यशस्वी जायसवाल में सचिन तेंदुलकर और विराट कोहली की बल्लेबाजी में उत्कृष्टता की परंपरा को आगे ले जाने का माद्दा है ।'सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड' के लिये अपने कॉलम में चैपल ने कहा कि वह आस्ट्रेलिया के खिलाफ यहां पहले टेस्ट में 161 रन की पारी खेलने वाले जायसवाल से काफी प्रभावित हैं । भारत ने पहला टेस्ट 295 रन से जीता। चैपल ने लिखा कि यह युवा सलामी बल्लेबाज निर्भीक है और सचिन तेंदुलकर तथा विराट कोहली की तरह उत्कृष्ट बल्लेबाजी की विरासत को आगे ले जा सकता है।वर्ष 2005 से 2007 के बीच भारत के कोच रहे चैपल ने पारंपरिक प्रारूप में युवाओं को तैयार करने में भारतीय और आस्ट्रेलियाई क्रिकेट बोर्ड की रणनीति में भारी अंतर को भी रेखांकित किया।

जायसवाल का सफर शानदार

उन्होंने लिखा कि जायसवाल का सफर दिखाता है कि भारत की रणनीति और बुनियादी ढांचे ने कैसे विश्व क्रिकेट में उसका दबदबा बनाया है ।भारत के लिये खेलने का सपना पूरा करने के लिये उसे सर्वश्रेष्ठ प्रतिस्पर्धाओं की तलाश में दस वर्ष की उम्र में यह युवा बल्लेबाज मुंबई आया था ।भारतीय अंतिम एकादश में जगह बनाना कितना मुश्किल है , यह देखते हुए उसकी प्रतिबद्धता गजब की है । भारत में इतने सारे खिलाड़ी हैं जो टेस्ट क्रिकेट खेल सकते हैं लेकिन कइयों को प्रदेश की टीम में भी मौका नहीं मिलता।

मैकस्वीनी से कई गुना आगे यशस्वी

ग्रेग चैपल ने आगे लिखा कि ऑस्ट्रेलिया के नाथन मैकस्वीनी से तुलना कर लीजिये ।बाईस वर्ष के जायसवाल ने 14 टेस्ट, 30 प्रथम श्रेणी मैच, 32 लिस्ट ए मैच और 53 आईपीएल मैच खेल लिये हैं ।वहीं 25 वर्ष के मैकस्वीनी ने पदार्पण टेस्ट खेलने के अलावा 34 प्रथम श्रेणी, 22 लिस्ट ए और 18 टी20 मैच खेले हैं।

पृथ्वी शॉ को मिली ऐसी सजा, लग गया 8 करोड़ का चूना, इस दिग्गज ने कहा- शर्म आनी चाहिए

नईदिल्ली, एजेंसी। पृथ्वी शॉ को अपनी लापरवाही की कीमत चुकानी पड़ी है. उन्हें उसके चलते सजा भुगतनी पड़ी है. और, सजा भी ऐसी मिली कि 8 करोड़ रुपये का चूना ही लग गया. पृथ्वी शॉ का गुनाह क्या है? यही सोच रहे हैं ना आप. ये भी सोच रहे होंगे कि सजा क्या मिल गई? दरअसल, आईपीएल ऑक्शन में जिन वजहों से वो चर्चा में रहे हैं वही उनकी सजा है. गलती इतनी थी कि उन्होंने अपने खेल में लापरवाही बरती. फिटनेस पर ध्यान नहीं दिया और दिल्ली कैपिटल्स में मिले मौकों को अच्छे से भुनाया नहीं, जिसका खुलासा दिल्ली फ्रेंचाइजी से जुड़े रहे मोहम्मद कैफ ने भी किया है.

पृथ्वी शॉ को लगा 8 करोड़ रुपये का चूना – आईपीएल 2025 के ऑक्शन में चुनना तो दूर उन पर बोली तक नहीं लगाई. जी नहीं, दिल्ली कैपिटल्स ने भी नहीं, जिससे वो 2018 से लगातार जुड़े रहे थे. ऐसा तब हुआ जब पृथ्वी शॉ ने अपनी बेस प्राइस सिर्फ 75 लाख रुपये रखी थी. अब इससे बड़ी शर्मिंदगी क्या होगी? इससे बड़ी सजा क्या होगी? किसी आईपीएल फ्रेंचाइजी का हिस्सा नहीं बनने के चलते पृथ्वी शॉ को 8 करोड़ रुपये का चूना लगा है. ये वो रकम है जो पिछले सीजन में दिल्ली कैपिटल्स से उन्हें मिल रहे थे.

शॉ के लिए शर्मनाक स्थिति- कैफ – पृथ्वी शॉ के ऑक्शन में अनसोल्ड रहने को मोहम्मद कैफ ने उनके लिए शर्मिंदगी वाली बात बताई है. कैफ ने जियो सिनेमा से बात करते हुए कहा कि शर्म आनी चाहिए कि उन्हें कोई खरीददार नहीं मिला. उन्होंने शॉ को लेकर तब के अनुभव शेयर किए जब वो दिल्ली कैपिटल्स के कोचिंग पैनल में होते थे. कैफ ने कहा कि दिल्ली कैपिटल्स ने उन्हें काफी सपोर्ट किया है. वो इकलौते ऐसे प्लेयर हैं जो इस बात की शिकायत नहीं कर सकते कि उन्हें प्लेइंग इलेवन में मौका नहीं मिला.

शॉ ने कैसे अपने लिए हालात बिगाड़े, कैफ की बातों से समझें – कैफ ने कहा कि दिल्ली कैपिटल्स ने शॉ को प्लेइंग इलेवन में लगातार मौके दिए, इसके बावजूद भी वो टीम में अपनी जगह नहीं पक्की कर सके. कैफ ने इसे समझाने के लिए टीम सेलेक्शन से जुड़ा किस्सा भी बताया. उन्होंने कहा कि रात में हम डिसाइड करते थे कि पृथ्वी शॉ को प्लेइंग इलेवन में नहीं रखेंगे. लेकिन फिर अगले दिन मैच से पहले हमें अपना फैसला बदलना पड़ता था क्योंकि हम ये सोचते थे कि हो सकता है कि वो बड़ी पारी खेल जाएं. अगर वो चले तो फिर जीत भी पक्की. लेकिन इस उम्मीद पर वो कभी खरे नहीं उतरे.

चैम्पियंस ट्रॉफी में अपनाया जाएगा हाइब्रिड मॉडल, पाकिस्तान की निकली हेकड़ी आईसीसी ने दिया दखल

नईदिल्ली, एजेंसी। चैम्पियंस ट्रॉफी 2025 को लेकर अभी भी सस्पेंस बना हुआ है. भारत ने तो साफ कर दिया है कि वह इस टूर्नामेंट में साफ हिस्सा नहीं लेगा. इसी बीच अब इस पूरे मामले में इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिलिंग ने दखल दिया है. सूत्रों के अनुसार, आईसीसी के कार्यकारी बोर्ड के मेंबर्स फाइनेंशियल इंसेटिव वृद्धि के वादे पर अगले साल की चैंपियंस ट्रॉफी के लिए हाइब्रिड मॉडल को स्वीकार करने के लिए पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड को मनाने की कोशिश कर रहे हैं. इस टूर्नामेंट का शेड्यूल अभी घोषित नहीं किया गया है, क्योंकि भारत ने आईसीसी को इस प्रमुख आयोजन के लिए पाकिस्तान की यात्रा करने में असमर्थता के बारे में जानकारी दे दी है. आईसीसी इस जटिल मुद्दे का समाधान खोजने के लिए आज (26 नवंबर) अपने एग्जीक्यूटिव बोर्ड की बैठक बुलाने वाला है. एक अंदरूनी सूत्र ने पीटीआई से कहा- पीसीबी हाइब्रिड मॉडल के तहत आयोजन की मेजबानी करने के लिए तैयार नहीं है।

कोहली के ओपनिंग पार्टनर हो सकते हैं 11.50 करोड़ में खरीदा गया खिलाड़ी

नई दिल्ली, एजेंसी। आईपीएल 2025 के लिए आरसीबी ने 22 खिलाड़ियों का दल तैयार किया है। आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी से पहले इस टीम ने विराट कोहली, रजत पाटीदार और यश दयाल के रूप में तीन खिलाड़ियों को रिटेन किया था और फिर नीलामी में 19 खिलाड़ियों को खरीदा। आरसीबी ने इस नीलामी में तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड को सबसे महंगा 12.50 करोड़ में खरीदा। अगले सीजन के लिए आरसीबी के कप्तान कौन होंगे इसे लेकर कुछ साफ नहीं है। इस बार आरसीबी ने जो टीम खरीदी है उसमें कई बेहतरीन गेंदबाज भी शामिल हैं। इस बार आरसीबी ने जोश हेजलवुड, भुवनेश्वर कुमार को अपने साथ जोड़ा तो शानदार फास्ट बॉलर हैं तो वहीं टीम में यश दयाल, लूंगी नगीडी भी हैं जबकि इस टीम में स्पिनर के रूप सुयश शर्मा भी जुड़े हैं। आइए अब बात करते हैं इस टीम की बेस्ट प्लेइंग इलेवन अगले सीजन के लिए क्या हो सकती है। अगले सीजन में विराट कोहली के साथ अपनिंग की जिम्मेदारी फिल साल्ट निभा सकते हैं जिसे इस बार टीम ने 11.50 करोड़ में खरीदा है। वहीं तीसरे नंबर पर लियाम लिविंगस्टोन हो सकते हैं जो आक्रामक अंदाज में बल्लेबाजी के लिए जाने जाते हैं। चौथे नंबर पर देवदत्त पडीक्कल हो सकते हैं जिसे आरसीबी ने इस बार 2 करोड़ में खरीदा है। इसके बाद टीम डेविड और फिर रजत पाटीदार हो सकते हैं जिसे टीम ने रिटेन किया था। अगले सीजन की प्लेइंग इलेवन में ऑलराउंडर क्रुणाल पांड्या हो सकते हैं जो स्पिन होने के साथ-साथ शानदार बैटिंग भी करते हैं। क्रुणाल पांड्या को आरसीबी ने इस बार 5.75 करोड़ में खरीदा है। आरसीबी की प्लेइंग इलेवन में तेज गेंदबाज के रूप में भुवनेश्वर कुमार, जोश हेजलवुड और यश दयाल हो सकते हैं जबकि स्पिनर के रूप में ये टीम सयश शर्मा के साथ उतर सकती है।

आईपीएल 2025 के लिए आरसीबी की बेस्ट प्लेइंग इलेवन

फिल साल्ट, विराट कोहली, लियाम लिविंगस्टोन, देवदत्त पडिक्कल, टिम डेविड, रजत पाटीदार, क्रुणाल पंड्या, भुवनेश्वर कुमार, यश दयाल, जोश हेजलवुड, सुयश शर्मा।

आईपीएल 2025 के लिए आरसीबी की पूरी टीम

विराट कोहली (21 करोड़), रजत पाटीदार (11 करोड़), यश दयाल (5 करोड़), लियाम लिविंगस्टोन- 8.75 करोड़, फिल साल्ट- 11.50 करोड़, जितेश शर्मा- 11 करोड़, जोश हेजलवुड- 12.50 करोड़, रसिकदार- 6 करोड़, सुयांश शर्मा- 2.60 करोड़, क्रुणाल पांड्या- 5.75 करोड़, भुवनेश्वर कुमार- 10.75 करोड़, स्वप्निल सिंह- 50 लाख, टिम डेविड- 3 करोड़, रोमारियो शेफर्ड- 1.50 करोड़, नुवान तुषारा- 1.60 करोड़, मनोज भांडगे- 30 लाख, जैकल बेथेल- 2.60 करोड़, देवदत्त पडीक्कल- 2 करोड़, सात्विक चिकारा- 30 लाख, लूंगी नगीडी- 1 करोड़, अभिनंदन सिंह- 30 लाख, मोहित राठी- 30 लाख।

आईपीएल ऑक्शन के टॉप-5 सरप्राइज

वेंकटेश की सैलरी ?15.75 करोड़ बढ़ी, वॉर्नर-शार्दूल अनसोल्ड; 13 साल का अनकैप्ड प्लेयर बना करोड़पति

नई दिल्ली, एजेंसी। आईपीएल का मेगा ऑक्शन 24 और 25 नवंबर को सऊदी अरब के जेद्दाह में हुआ। नीलामी इंडियन प्लेयर्स के लिए वाकई मेगा साबित हुई, क्योंकि सबसे महंगे पांचों टॉप खिलाड़ी भारत के ही रहे। ऑक्शन इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ। पहली बार ही 2 खिलाड़ियों की बोली 25 करोड़ रुपए पार भी कर गई।

ऑक्शन में कई और चौंकाने वाले फैसले भी देखने को मिले। आईपीएल चैंपियन कप्तान डेविड वॉर्नर और भारतीय ऑलराउंडर शार्दूल ठाकुर को खरीदार ही नहीं मिला। इंग्लिश ऑलराउंडर सैम करन की कीमत 16.10 करोड़ रुपए घट गई, वहीं 13 साल के अनकैप्ड बैटर वैभव सूर्यवंशी आईपीएल में करोड़पति बनने वाले सबसे युवा प्लेयर बने।

स्टोरी में ऑक्शन के टॉप-5 सरप्राइज

1. वेंकटेश की कीमत 3 गुना बढ़ी भारत के वेंकटेश अय्यर और अफगानिस्तान के नूर अहमद की कीमतों ने हैरान किया। कोलकाता ने वेंकटेश को 23.75 करोड़ रुपए में खरीदा, वह पिछले सीजन ऋयक्र से ही खेले थे। हालांकि, तब उनकी सैलेरी 8 करोड़ रुपए ही थी, उन्हें इस बार 3 गुना ज्यादा रकम मिल गई। वेंकटेश के लिए बेंगलुरु ने भी बोली लगाई थी, लेकिन केकेआर ने आखिर में बाजी मार ली। उन्होंने पिछले सीजन हैदराबाद के खिलाफ आईपीएल फाइनल में फिफ्टी लगाई थी। वेंकटेश ने केकेआर के लिए 51 मैचों में 137.12 के स्ट्राइक रेट से 1326 रन बनाए हैं।
2. विल जैक्स और नूर अहमद का इस्तेमाल इंग्लैंड के विल जैक्स और अफगानिस्तान के नूर अहमद की खरीदी ने भी चौंकाया। जैक्स को 5.25 करोड़ रुपए में मुंबई और नूर को 10 करोड़ रुपए में चेन्नई ने खरीदा।

ऑक्शन में मुंबई ने जैक्स पर 5.25 करोड़ रुपए की बोली लगाई, आरसीबी यहां राइट टु मैच कार्ड यूज कर सकती थी, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। आरसीबी के पास

पर्स में रकम भी बहुत थी। इस फैसले के बाद एमआई के आकाश अंबानी अपनी टेबल से उठकर आरसीबी मालिक से हाथ मिलाने पहुंच गए। जैक्स ने पिछले सीजन आरसीबी के लिए 8 मैचों में 175.57 की स्ट्राइक रेट से 230 रन बनाए थे।

अफगानिस्तान के नूर पर ऑक्शन में चेन्नई ने 5 करोड़ रुपए की बोली लगाई। यहां गुजरात ने आरटीएम इस्तेमाल कर लिया। चेन्नई से फाइनल बिड करने को कहा गया, टीम ने सीधे 10 करोड़ रुपए बोली लगा दी। गुजरात ने मना किया और नूर 10 करोड़ में ही सीएसके के हो गए। नूर पिछले सीजन 30 लाख रुपए में बिके थे, इस बार उनकी सैलरी करीब 33 गुना तक बढ़ गई।

3. 13 साल के वैभव बने अनकैप्ड करोड़पति ऑक्शन में कई अनकैप्ड प्लेयर्स भी करोड़पति बन गए। इनमें 13 साल के वैभव सूर्यवंशी का नाम सबसे चौंकाने वाला रहा। 30 लाख की बेस प्राइस पर उनके लिए राजस्थान और दिल्ली ने बोली लगाई। आखिर में राजस्थान ने उन्हें 1.10 करोड़ रुपए में खरीदा। इसी के साथ वह आईपीएल इतिहास के सबसे युवा करोड़पति बन गए।

वैभव बिहार से घरेलू क्रिकेट खेलते हैं और फर्स्ट क्लास डेब्यू कर चुके हैं। लेफ्ट हैंड ओपनिंग बैटर ने 2 महीने पहले ऑस्ट्रेलिया अंडर-19 टीम के खिलाफ अनऑफिशियल टेस्ट में शतक भी लगाया था। इसलिए उनका नाम तेजी से उभरा, जिसका फायदा उन्हें ऑक्शन में भी मिला।

4. शार्दूल-वॉर्नर को नहीं मिला खरीदार 2016 में हैदराबाद को आईपीएल चैंपियन बनाने वाले डेविड वॉर्नर को ऑक्शन में खरीदार ही नहीं मिला। उन्होंने पिछला सीजन दिल्ली से खेला था, वह 8 मैचों में 168 रन ही बना सके थे। उनके नाम आईपीएल करियर के 184 मैचों में 6565 रन हैं। ऑलराउंडर शार्दूल ठाकुर भी अनसोल्ड रहे, उनका नाम 2 बार ऑक्शन में आया, लेकिन किसी भी टीम ने बोली नहीं लगाई। शार्दूल को 2023 में कोलकाता ने 10 करोड़ रुपए में खरीदा था। वह पिछले सीजन सीएसके से 9 मैचों में 5 ही विकेट ले सके थे। उनके नाम करियर के 95 मैचों में 307 रन और 94 विकेट हैं।
5. करन की कीमत 7.7 गुना घटी, स्टार्क भी आधी कीमत पर आए 2023 के मिनी ऑक्शन में सबसे ज्यादा कीमत पाने वाले लेफ्ट आर्म पेसर मिचेल स्टार्क को इस बार आधी कीमत भी नहीं मिली। वहीं 18.50 करोड़ रुपए में बिकने वाले सैम करन की वैल्यू इस बार 7.7 गुना तक कम हो गई। करन को सीएसके ने महज 2.40 करोड़ रुपए में खरीद लिया, उन्होंने पिछले सीजन 13 मैचों में 16 विकेट लिए थे। करन को अब 16.10 करोड़ रुपए कम मिलेंगे। स्टार्क को पिछले सीजन केकेआर ने 24.75 करोड़ रुपए में खरीदा था। इस बार उन्हें दिल्ली ने 11.75 करोड़ में खरीद लिया। उनकी कीमत में 47.69त्न की गिरावट हुई, उन्हें पिछली बार से पूरे 13 करोड़ रुपए कम मिलेंगे। जो इस बार के खिलाड़ियों में करन के बाद सबसे कम है।

संक्षिप्त समाचार

ग्रेटर नोएडा में सोफा बनाने वाली फैक्ट्री में भीषण आग, जिंदा जल गए 3; एक मथुरा और दो बिहार के मजदूर

नोएडा एजेंसी। ग्रेटर नोएडा में सोफा बनाने वाली एक फैक्ट्री में भीषण आग लग जाने से तीन लोगों की मौत हो गई है। तीनों इस फैक्ट्री में काम करते थे। जिस वक्त आग लगी वे अंदर सो रहे थे। मारे गए लोगों में एक मथुरा और दो बिहार के रहने वाले हैं। आग पर काबू पा लिया गया है। फायर ब्रिगेड के मुताबिक, मंगलवार को थाना बीटा 2 थाना क्षेत्र में साइट फॉर फैक्ट्री नंबर 4जी में आग लगने की सूचना मिली थी। यहां सोफा बनाने का काम होता है। तत्काल स्थानीय पुलिस और फायर स्टेशन की गाड़ियां मौके पर पहुंची और राहत-बचाव का काम शुरू किया गया। आग बुझाने के बाद तलाशी के दौरान तीन शव पाए गए। मृतकों के शव का पंचायतनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। मृतकों की पहचान कर ली गई है। गुलफाम (23) पुत्र पप्पु निवासी ग्राम भूडा थाना राया जिला मथुरा, मजहर (29) आलम पुत्र जाहिद निवासी बैराजाल थाना बारसोई जिला कटिहार बिहार और दिलशाद (24) निवासी अररहिया बिहार ने इस भीषण अग्निकांड में अपनी जान गंवाई है। पुलिस ने मतृकों के परिवारों को सूचना दी है।

जींद के खनोरी बॉर्डर पर किसान आंदोलनः पुलिस ने रात 3 बजे जगजीत सिंह डल्लेवाल को हिरासत में लिया

जींद, एजेंसी। खनोरी बॉर्डर पर चल रहे किसान आंदोलन में पुलिस ने रात के समय बड़ी कार्रवाई की। पुलिस बल ने मंगलवार रात करीब 3 बजे किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल को धरनास्थल से हिरासत में ले लिया। डल्लेवाल आमरण अनशन पर बैठने की तैयारी कर रहे थे। पुलिस की इस कार्रवाई के बाद खनोरी बॉर्डर पर किसानों की संख्या बढ़ने लगी। आंदोलन स्थल पर तनाव का माहौल है। सूत्रों के मुताबिक, डल्लेवाल ने अनशन पर बैठने से पहले अपनी संपत्ति, जमीन और जायदाद अपने बेटे, बहू और पोते के नाम कर दी थी। पुलिस बल ने आधी रात के बाद यह कार्रवाई की, जब धरना स्थल पर अपेक्षाकृत कम संख्या में किसान मौजूद थे। किसान नेताओं ने पुलिस की इस कार्रवाई की कड़ी निंदा की है और इसे आंदोलन को दबाने की कोशिश करार दिया है। जगजीत सिंह डल्लेवाल की हिरासत के बाद आंदोलन स्थल पर किसानों का आक्रोश बढ़ रहा है। बड़ी संख्या में किसान खनोरी बॉर्डर पर जुटने लगे हैं। किसान संगठनों ने डल्लेवाल को रिहा करने की मांग की है और सरकार पर आरोप लगाया है कि वह आंदोलन को खत्म करने के लिए दबाव बना रही है।

शिवसेना-यूबीटी ने नेता प्रतिपक्ष के पद पर दावा किया ? नए विधायकों ने विधानसभा सचिव से की मुलाकात

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना (यूबीटी) ने अपने विधायक दल के नेता का चयन कर लिया है. शिवसेना (यूबीटी) के नवनिर्वाचित 20 विधायकों की बैठक सोमवार 25 नवंबर को मातोश्री में हुई. इस बैठक में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए और भास्कर जाधव को विधायक दल का नेता चुना गया. वहीं, आदित्य ठाकरे को सदन का नेता चुना गया. इस बीच, शिवसेना (यूबीटी) के नवनिर्वाचित विधायकों ने विधानसभा के सचिव से मुलाकात की और उन्हें पत्र सौंपा. मुलाकात के बाद शिवसेना (यूबीटी) विधायक दल के नेता भास्कर जाधव ने बताया, मातोश्री में नवनिर्वाचित 20 विधायकों की बैठक हुई. इसमें विधायक दल के नेता और सदन के नेता का चयन किया गया. हमने विधानसभा सचिव से मुलाकात की और उन्हें इस चयन से संबंधित पत्र सौंपा. इस बीच, सचिव से मुलाकात के बाद सभी विधायकों ने विधान भवन में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा का माल्यार्पण किया. इस अवसर पर आदित्य ठाकरे, महेश सावंत, सुनील प्रभु, सचिन अहीर आदि विधायक मौजूद थे. इस अवसर पर मीडिया से बात करते हुए भास्कर जाधव ने कहा, हमने विधानसभा के सचिव से मुलाकात की और चर्चा की कि विपक्ष के नेता पद के लिए क्या नियम हैं? क्या मापदंड हैं? हमने सचिव से यह भी मांग की कि वे हमें बताएं कि विपक्ष के नेता पद के लिए कितने सदस्यों की आवश्यकता है? इसके लिए क्या प्रक्रिया है? और इसके लिए क्या कानून है? हालांकि, इस दौरान सचिव भ्रमित दिखे.

परिवार के 32 वोट भी नहीं मिले, ईवीएम के खिलाफ आंदोलन की तैयारी में शरद पवार की एनसीपी

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में कांग्रेस, एनसीपी और उद्धव सेना के गठजोड़ को करारी हार मिली है। नतीजा आए तीन दिन हो गए हैं, लेकिन अब तक महाविकास अघाड़ी के नेता इस हार को स्वीकार नहीं कर पाए हैं। संजय राउत तो लगातार ईवीएम पर सवाल उठा रहे हैं और उनका कहना है कि बैलेट पेपर से चुनाव कराने चाहिए। इस बीच शरद पवार की एनसीपी के सीनियर नेता जितेंद्र अव्हाड ने भी सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि हम अपनी हार के लिए कोई एक कारण नहीं मान सकते। यही नहीं अव्हाड ने कहा कि मुझे तो यकीन नहीं होता कि लड़की बहिन योजना का इतना असर हो सकता है।

उन्होंने कहा, कोई एक कारण सामने नहीं आ रहा है। चुनाव के बाद कुछ बदला नहीं था। बेरोजगारी और महंगाई में इजाफा हुआ है। लड़कि बहिन योजना का कोई इतना असर नहीं होता

है। जैसे चंद्रपुर की सीट आप देखेंगे तो वह हमने 2 लाख 40 हजार के अंतर से जीती थी। अब आप देखिए कि वह 2 लाख 40 हजार तो गए ही उसके ऊपर 1 लाख वोट और कैसे चले गए। ऐसा नहीं हो सकता। यहां तक कि जीते हुए विधायकों ने भी कहा कि साहब हम जीतकर आए हैं, लेकिन कहीं न कहीं ईवीएम का बड़ा मसला है। इसके खिलाफ पूरे राज्य में आंदोलन खड़ा हो सकता है। अभी कई गांव खड़े हुए हैं। वहां लोगों का कहना है कि जब हमने वोट ही नहीं दिया तो आए कहां से।

अव्हाड ने कहा, एक परिवार में 32 वोट हैं। उन सभी लोगों ने अपने घर के कैंडिडेट को वोट दिया है। फिर भी उसे जीरो वोट दिखाया है। ऐसा कैसे हो सकता है? इससे पहले संजय राउत ने मांग उठाई थी कि दोबारा चुनाव होने चाहिए और वोटिंग बैलेट पेपर से कराई जाए। राउत ने कहा, 'ईवीएम को लेकर हमें करीब 450 शिकायतें मिलीं। बार-बार आपत्ति जताए जाने के बावजूद इन मामलों पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। हम कैसे कह सकते हैं कि ये चुनाव निष्पक्ष तरीके से हुए? इसलिए मेरी मांग है कि नतीजों को रद्द किया जाए और दोबारा चुनाव मत पत्रों के जरिए कराए जाएं।' संजय राउत बोले- कैंडिडेट के परिवार में 65 वोट, पर मिले सिर्फ 4

उन्होंने कहा कि नासिक में एक उम्मीदवार को कथित तौर पर केवल चार वोट मिले, जबकि उसके परिवार के 65 वोट थे। उन्होंने कहा कि डोंबिवली में ईवीएम की गिनती में विसंगतियां पाई गईं और चुनाव अधिकारियों ने आपत्तियों को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। शिवसेना यूबीटी के नेता ने कुछ उम्मीदवारों की भारी जीत की विश्वसनीयता पर भी सवाल उठाते हुए कहा, 'उन्होंने ऐसा कौन सा क्रांतिकारी काम किया जो उन्हें 1.5 लाख से अधिक वोट मिले? यहां तक ??कि हाल में पार्टी बदलने वाले नेता भी विधायक बन गए। इससे संदेह पैदा होता है।

रात में हैवान बन जाता था पति, पत्नी को बेहोश कर 11 वर्षीय बेटी से करता था दुष्कर्म; मां ने सुनाई करतूत

गाजियाबाद एजेंसी। गाजियाबाद के विजयनगर थाना क्षेत्र में एक सौतेले पिता द्वारा 11 साल की बेटी के साथ दुष्कर्म करने का शर्मनाक मामला सामने आया है। पुलिस ने उसकी पत्नी की शिकायत पर आरोपी को गिरफ्तार करने के बाद उसे कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया है। इस घटना के संबंध में पीड़ित बच्ची की मां ने ही केस दर्ज कराया है। विजयनगर थाना क्षेत्र में रहने वाली एक महिला ने बताया कि वह घरों में काम कर गुजर-बसर करती है। नौ साल पहले उसके पहले पति की मौत हो चुकी है। इसके बाद करीब छह साल पहले रोजी कॉलोनी निवासी आरिफ से उसका संपर्क हुआ। आरिफ ने उसे प्रेमजाल में फंसाकर उसकी और बच्ची की परवरिश का भरोसा दिया था। महिला के मुताबिक, आरिफ ने मंदिर में उसके साथ शादी की और तभी से वह साथ रह रहा था। कुछ दिनों से उसकी 11 वर्षीय बेटी की तबीयत खराब थी। मां द्वारा पूछताछ पर बच्ची ने आरिफ की घिनौनी हरकत के बारे में उसे बताया। बच्ची ने एक माह से दुष्कर्म करने की बात बताई। महिला ने पुलिस को बताया कि आरोपी रात में उसे नशीला पदार्थ देकर बेसुध कर देता था और फिर बेटी के साथ हैवानियत करता था। एसीपी कोतवाली रितेश त्रिपाठी का कहना है कि पॉक्सो ऐक्ट और दुष्कर्म का केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। वहीं, एक दूसरे मामले में गाजियाबाद के ही खोड़ा निवासी दुष्कर्म पीड़िता किशोरी को सोमवार को अस्पताल से छुट्टी मिल गई, जबकि उसका बच्चा अभी दिल्ली में ही भर्ती है। दोनों की हालत में सुधार है।

देश के लिए शहीद हो गए पापा, बेटी की शादी में कन्यादान कराने पहुंचे सीआरपीएफ जवान

जींद, एजेंसी। सीआरपीएफ के डीआइजी कोमल सिंह की टीम ने हरियाणा के जींद में शहीद सतीश कुमार की बेटी का कन्यादान किया। इसकी तस्वीरें और वीडियो फुटेज सोशल मीडिया पर वायल हो रहे हैं। इंटरनेट यूजर्स ने इसकी जमकर तारीफ की है और इसे दिल छू लेने वाली पहल बताया है। वीडियो में दिख रहा है कि शहीद की बेटी निशा की शादी में कई सीआरपीएफ जवान मौजूद हैं। दुल्हन और दूल्हा सोफे पर बैठकर अपने शहीद पिता की तस्वीर पकड़े हुए हैं। उनके पीछे खड़े जवान उन्हें आशीर्वाद देते नजर आ रहे हैं। मालूम हो कि सतीश कुमार 20 मार्च 2015 को जम्मू-कश्मीर के कठुआ में शहीद हो गए थे।

हरियाणा में जींद जिले के उचाना के छातर गांव से शहीद सतीश कुमार का ताल्लुक था। बीते शनिवार को शहीद की बेटी निशा की शादी हुई। वधू पक्ष की ओर से सीआरपीएफ जवानों ने ही बारात का जोरदार स्वागत किया। सीआरपीएफ अफसर ने पिता का फर्ज निभाते हुए कन्यादान किया और पूरे गांव ने अपनी बेटी को आशीर्वाद देकर विदा किया। शहीद सतीश की बेटी को शादी में अपने पिता की कमी महसूस न हो, इसका पूरा प्रयास रहा। ग्रुप सेंटर सोनीपत से

डीआईजी कोमल सिंह, डिप्टी कमांडेंट वेदपाल, अस्सिटेंट कमांडेंट कृष्ण कुमार और अन्य जवान पहुंचे थे। गांव में सुबह ही सीआरपीएफ के अधिकारियों और जवानों के पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया। इन्होंने गांव वालों के साथ मिलकर शादी का पूरा माहौल बना दिया। सीआरपीएफ के डीआइजी कोमल सिंह ने पीटीआई से बातचीत में कहा, निशा हमारे शहीद सतीश की बेटी है। उससे हमारा खून का रिश्ता तो नहीं है मगर वह हमारे परिवार की बेटी है। वह सीआरपीएफ फैमिली का हिस्सा है। हम लोग यहां पर उसका सम्मान बढ़ाने के लिए आए हैं। हम उसे इस बात पर गर्व महसूस कराने आए हैं कि उसके पिता ने सर्वोच्च बलिदान दिया है।

महाराणा प्रताप के वंशजों में मेवाड़ की गद्दी के लिए टकराव क्यों?

मेवाड़, एजेंसी। राजस्थान में महाराणा प्रताप के वंशजों के बीच टकराव ने हिंसक रूप ले लिया है। उदयपुर में राजपरिवार के बड़े बेटे महेंद्र सिंह मेवाड़ के बेटे विश्वराज सिंह मेवाड़ को गद्दी पर बैठाने की परंपरा निभाई गई। दूसरी तरफ, महेंद्र सिंह के छोटे भाई अरविंद सिंह मेवाड़ ने इस रस्म को ग़ैरक़ानूनी करार दिया है। उनका कहना है कि गद्दी पर अधिकार उनके बेटे लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ का है। विश्वराज सिंह मेवाड़ का अपने चाचा अरविंद सिंह मेवाड़ के साथ कानूनी विवाद के बीच राजतिलक हुआ है। विवाद ने हिंसक रूप ले लिया है। उदयपुर की गद्दी को लेकर विवाद काफ़ी पुराना है। बड़े बेटे महेंद्र सिंह मेवाड़ और छोटे बेटे अरविंद सिंह मेवाड़ के बीच इसे लेकर कई बार टकराव भी हो चुका है। कई अदालतों में यह मामला चल रहा है। हालांकि अभी मेवाड़ चैरिटेबल ट्रस्ट के ज़रिए छोटे बेटे अरविंद सिंह मेवाड़ ही उदयपुर राज घराने की गद्दी को संभालते हैं और सिटी

पैलेस में रहते हैं। मगर आसपास की रियासतों में बड़े बेटे यानी महेंद्र सिंह मेवाड़ का प्रभाव ज़्यादा है। विश्वराज सिंह के पिता महेंद्र सिंह मेवाड़ का हाल ही में निधन गया है। विश्वराज सिंह मेवाड़ राजतिलक होने के बाद अपने समर्थकों के साथ उदयपुर के जगदीश चौक के बाहर मौजूद हैं। परंपरा के तहत धूणी दर्शन के लिए उदयपुर पहुंचे हैं, जहां पुलिस ने बैरिकेडिंग कर रास्ता रोक रखा है। मौके पर भारी संख्या में पुलिसकर्मी तैनात हैं। विश्वराज मेवाड़ और उनके समर्थक धूणी के दर्शन करने की बात पर अड़े हैं, जबकि सिटी पैलेस के लोग किसी को भी अंदर नहीं जाने दे रहे हैं। प्रशासन दोनों पक्षों में विवाद शांत कराने के लिए समझाइश कर रहा है। इस बीच विश्वराज सिंह मेवाड़ और रणधीर सिंह भींडर कार से उतरकर बैरिकेडिंग से आगे सिटी पैलेस वाली रोड की तरफ पैदल निकले। कई घंटे से विश्वराज सिंह मेवाड़ अपनी कार में बैठे हुए थे। वहीं, उनके समर्थक लगातार नारेबाजी कर रहे हैं. फिलहाल, जिला प्रशासन द्वारा दोनों के बीच वार्तालाप का दौर जारी है, लेकिन अभी तक सहमति नहीं बन पाई है। वहीं, सिटी पैलेस के बाहर एकाएक जब समर्थकों का हुजूम गेट की ओर बढ़ा तो पैलेस के अंदर से पत्थरबाजी शुरू हो गई। वहीं भीड़ और पुलिस प्रशासन थोड़ी देर के लिए सभी वहां से भागने लगे। हालांकि इस दौरान तीन लोगों को पत्थर से गहरी चोट आई है। जो लोग घायल हुए हैं उन्हें तुरंत इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। वहीं पत्थरबाजी के बाद बड़ी पोल से लेकर धूणी और जनाना महल तक के क्षेत्र के लिए कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए तुरंत रिसीवर नियुक्त किया गया है। बता दें सोमवार को विश्वराज सिंह मेवाड़ का राजतिलक हुआ। विश्व विख्यात ऐतिहासिक चित्तौड़गढ़ दुर्ग स्थित फतह प्रकाश महल में उनके राजतिलक की रस्म निभाई गई।

पाकिस्तान में शिया-सुन्नी समुदाय सीजफायर पर सहमत

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में जारी संघर्ष के बीच 7 दिन के संघर्ष विराम पर सहमति बन गई है। सरकारी कोशिशों के बाद आपस में लड़ रही दोनों जनजातियां इसके लिए तैयार हो गई। खैबर पख्तूनख्वा सरकार ने दोनों समुदायों के बीच विवाद को सुलझाने के लिए उच्च स्तरीय आयोग बनाने का फैसला किया है। खैबर पख्तूनख्वा सरकार के प्रवक्ता मुहम्मद अली सैफ ने बताया कि सरकार ने दोनों समुदायों के नेताओं से बात की है। जिसके बाद सात दिन के संघर्ष विराम और एक-दूसरे को शव और बंदी लौटाने पर सहमति बनी। पिछले हफ्ते इस संघर्ष की शुरुआत तब हुई जब खैबर पख्तूनख्वा के कुर्रम जिले में अलीजई (शिया) और बागान (सुन्नी) जनजाति के संघर्ष में पैसेंजर वैन काफिले पर फायरिंग की गई। ये सभी गाड़ियां एक काफिले में पारचिनार से खैबर पख्तूनख्वा की राजधानी पेशावर जा रही थी। दोनों समुदायों के बीच तीन दिन चली इस हिंसा में अब तक 64 से ज्यादा लोगों की जान चली गई है और सैकड़ों लोग घायल हुए हैं। हालांकि, कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में मरने वाली संख्या 100 से भी ज्यादा बताई जा रही है।

पाकिस्तान में ज्यादातर आबादी सुन्नी

मुस्लिम की है। न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक अफगानिस्तान बॉर्डर के पास कुर्रम की 7.85 लाख की आबादी में से आधी आबादी शिया मुस्लिम की है। इस वजह से दोनों समुदायों के बीच सांप्रदायिक तनाव बना रहता है। शुक्रवार को भी हिंसा जिले के उन इलाकों में ज्यादा हुई, जहां शिया और सुन्नी समुदाय के लोग आस-पास रहते हैं।

सीमा विवाद की वजह से बना आतंकियों की पनाहगाहः खैबर पख्तूनख्वा को लेकर हमेशा से पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच तनाव रहा है। इस वजह से कई आतंकी गुट इसे पनाहगाह की तरह इस्तेमाल करते हैं। यहां पर होने वाली आतंकी घटनाओं की एक बड़ी वजह बॉर्डर एरिया को लेकर दोनों देशों में आपसी सहमति न होना है। दरअस्ल, पाकिस्तान और अफगानिस्तान एक सीमा के जरिए अलग होते हैं। इसे डूरंड लाइन कहा जाता है। पाकिस्तान इसे बाउंड्री लाइन मानता है, लेकिन तालिबान का साफ कहना है कि पाकिस्तान का खैबर पख्तूनख्वा राज्य उसका ही हिस्सा है। पाकिस्तानी सेना ने यहां कांटेदार तार से फेंसिंग की है।

बांग्लादेश अडाणी के साथ बिजली डील की जांच करेगा

ढाका, एजेंसी। अमेरिका में रिश्वत देने के आरोप में घिरे अडाणी ग्रुप की मुश्किलें बढ़ती जा रही है। बांग्लादेश में शेख हसीना के पीएम रहते अडाणी ग्रुप के साथ हुए पावर एग्रीमेंट की जांच के लिए एक एजेंसी गठित करने की सिफारिश की गई है। अंतरिम सरकार की तरफ से गठित समिति ने इस एजेंसी के गठन की सिफारिश की है। साथ ही शेख हसीना के पीएम रहते हुए छह अन्य बड़े एनर्जी और पावर एग्रीमेंट के जांच की भी मांग की गई है। एक आधिकारिक बयान में कहा गया- पावर, एनर्जी और खनिज संसाधन मंत्रालय की समीक्षा समिति ने 2009 से 2024 तक पावर प्रोडक्शन एग्रीमेंट को लेकर किए गए समझौते की जांच के लिए एजेंसी नियुक्त करने की सिफारिश की है।

समिति की मांग- समझौतों को रद्द या पुनर्विचार करें: अंतरिम सरकार के चीफ एडवाइजर मोहम्मद यूनुस के ऑफिस से जारी बयान में कहा गया- समीक्षा समिति सात प्रमुख एनर्जी और पावर प्रोजेक्ट की समीक्षा कर रही है। इसमें अडाणी (गोड्डा) बीआईएफपीसीएल 1234.4 मेगावाट कोल फायर्ड प्लांट भी शामिल है। छह अन्य समझौतों में से एक चीनी कंपनी के साथ हुआ है, जिसने 1320 मेगावाट का कोल फायर्ड इलेक्ट्रिसिटी प्लांट बनाया है।

बयान में यह भी कहा गया है कि समिति ने कई सबूत जुटाए हैं, जिनके आधार पर अंतरराष्ट्रीय कानूनों और प्रक्रियाओं के मुताबिक समझौतों को रद्द या पुनर्विचार किया जाना चाहिए। इसके अलावा कई अन्य कॉन्ट्रेक्ट की जांच के लिए एक्स्ट्रा टाइम मांगा गया है।

2016 में हसीना सरकार के साथ करार किया थाः अडाणी ग्रुप का गोड्डा पावर प्लांट ग्रुप का पहला इंटरनेशनल पावर प्लांट है। इसमें झारखंड के गोड्डा में 1600 मेगावाट का थर्मल पावर प्लांट लगाया था। इससे ट्रांसमिशन लाइन के जरिए बांग्लादेश पावर डेवलपमेंट बोर्ड को बिजली की सप्लाई की जा रही है। 2016 में इसे लेकर शेख हसीना सरकार के साथ करार किया गया था। अडाणी पावर लिमिटेड ने 10 अप्रैल 2023 से अपने पावर प्रोजेक्ट के जरिए बांग्लादेश को बिजली एक्सपोर्ट शुरू किया था।

रब्बी मौत मामले में जारी की गई गिरफ्तार संदिग्धों की तस्वीरें

अबू धाबी , एजेंसी। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने यहूदी धर्मगुरु रब्बी जवी कोगन की हत्या मामले में तीन संदिग्धों के नाम और तस्वीरें जारी की। रब्बी जवी कोगन का शव पिछले सप्ताह मिला था। द टाइम्स ऑफ इजरायल की रिपोर्ट के अनुसार, इजरायल ने इस हत्या को यहूदी विरोधी आतंकवादी घटना बताया है। यूएई के अनुसार, तीनों व्यक्ति उज्बेक नागरिक हैं। तीनों संदिग्धों की पहचान 28 वर्षीय ओलम्पी तोइरोविच, 28 वर्षीय मखमुदजोन अब्दुरखिम और 33 वर्षीय अजीजबेक कामलोविच के रूप में हुई है।

इन तस्वीरों में उनके हाथों में हथकड़ी और आंखों पर पट्टी बंधी हुई दिख रही है, सबने नीली रंग की जेल की वर्दी पहन रखी है। मंत्रालय ने तीनों को मोल्दोवा नागरिक की हत्या के लिए जिम्मेदार बताया है। कोगन के पास इजरायल और मोल्दोवन की दोहरी नागरिकता थी।

इजरायली मीडिया की कई रिपोर्टों के अनुसार, संदिग्धों को मृत्युदंड का सामना करना पड़ सकता है। वह 2020 के आखिर में अमेरिका की मध्यस्थता में अब्राहम समझौते के तहत यूएई के साथ इजरायल के संबंधों को सामान्य होने के बाद से अबू धाबी चबाड चैप्टर के साथ जुड़े थे। कोगन का अंतिम संस्कार सोमवार रात 11 बजे यरुशलम

में स्थित माउंट ऑफ ओलिव्स पर किया गया है।

कोगन, इजरायल रक्षा बल के पूर्व सैनिक थे और संयुक्त अरब अमीरात में यहूदी धार्मिक संस्था चबाड के रब्बी और दूत थे। वह गुरुवार को लापता हुए थे। इजरायली अधिकारियों ने रविवार की सुबह बताया कि उनका शव अमीराती शहर अल ऐन में मिला, जो ओमान की सीमा पर स्थित है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अधिकारियों को संदेह है कि ईरान द्वारा भर्ती किए गए कई उज्बेक नागरिकों ने रब्बी पर हमला किया और बाद में तुर्की भाग गए।

चैनल 12 की रिपोर्ट के अनुसार, तीनों संदिग्धों को संयुक्त अरब अमीरात में गिरफ्तार नहीं किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, उन्हें ढूंढने और गिरफ्तार करने का अभियान कई देशों तक चलाया गया था।

भारतीय-अमेरिकियों ने हिंदुओं को निशाना बनाए जाने के विरोध में निकाली रैली

वॉशिंगटन, एजेंसी। कनाडा और बांग्लादेश में लगातार हिंदुओं को निशाना बनाया जा रहा है। कभी मंदिरों तो कभी उनके घरों को नुकसान पहुंचाया जा रहा। इस बीच, सिलिकॉन वैली में भारतीय अमेरिकियों ने हिंदुओं के प्रति अपनी एकजुटता दिखाने के लिए रैली निकाली।

मिलपिटास सिटी हॉल में बड़ी संख्या में भारतीय अमेरिकियों को संबोधित करते हुए प्रमुख सामुदायिक नेताओं ने हिंदू अल्पसंख्यकों पर हो रहे हमलों के बारे में बात की। साथ ही अमेरिकी नेताओं से मानवाधिकार उल्लंघनों की निंदा करने और कनाडा तथा बांग्लादेश की सरकारों को उनकी हिंदू अल्पसंख्यक आबादी की सुरक्षा के लिए जवाबदेह ठहराने का आग्रह किया।

दो लाख से अधिक रहते हैं भारतीय-अमेरिकी

खाड़ी क्षेत्र दो लाख से अधिक भारतीय अमेरिकियों का घर है। बताया जा रहा कि रैली में शामिल लोगों ने ब्रैम्पटन में हिंदू सभा मंदिर में श्रद्धालुओं पर हुए हमले की सही तरीके से जांच नहीं होने पर निराशा जताई।

रैली में लोगों ने खालिस्तानी आतंकवाद बंद करो, कनाडाई-हिंदुओं की रक्षा करो, इस्लामी आतंकवाद बंद करो, बांग्लादेशी-हिंदुओं की रक्षा करो के नारे लगाए। उन्होंने कहा, हमने खालिस्तानी समर्थकों के मंदिर परिसर में घुसकर पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को पीटने के वीडियो देखे हैं। यह देखना भयावह है कि दिवाली मनाने गए हिंदुओं का उन द्वारा पीछा किया जा रहा है। उन्होंने कहा, हमने देखा कि पुलिस खालिस्तान समर्थकों के साथ पहले से ही साठगांठ कर रही थी और हिंदू श्रद्धालुओं को पीट रही थी। कनाडा में हिंसा की स्वतंत्रता को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के रूप में तैयार किया जा रहा है। कनाडाई-हिंदुओं के बुनियादी मानवाधिकारों की रक्षा को लेकर ट्रूडो सरकार से हमारा भरोसा उठ चुका है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129